ॐ

दक्षिण आफ्रिकामें धर्मोदय

(द. आ. में आर्यसमाजके प्रचारका इतिहास)

Religious Awakening in South Africa.

लेखक—पं. नरदेव वेदालंकार

प्रकाशक—आर्य प्रतिनिधि सभा. नाताल

ओ३म्

दक्षिण आफ्रिकामें धर्मोदय

(दक्षिण आफ्रिकामें वैदिक धर्मके प्रचारका इतिहास)

RELIGIOUS AWAKENING IN S. AFRICA

लेखक:

पं. नरदेवजी वेदालंकार

(सभापति–हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल)

भूमिका लेखक:

पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय, एम. ए.

(मंत्री–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली)

प्रकाशक:

आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

(२१ कार्लाइल स्ट्रीट, दरबन)

मुद्रक:

एकमी प्रिंटिंग वर्क्स,

(१४, शोर्ट स्ट्रीट, दरबन)

मूल्य:

आफ्रिकामें पांच शिलिंग. भारतमें तीन रुपये.

Religious Awakening in South Africa

(A History of the Arya Samaj Movement in South Africa)

❖ ❖ ❖

Author:

PANDIT NARDEV VEDALANKAR

(President, Hindi Shiksha Sangh, Natal)

❖ ❖ ❖

Foreword by:

PANDIT GANGA PRASAD UPADHYAYA, M.A.

(General Secretary: International Aryan League, Delhi, India)

❖ ❖ ❖

Publishers:

ARYA PRATINIDHI SABHA (NATAL)

21 Carlisle Street, Durban.

❖ ❖ ❖

PRICE:

In South Africa: 5/- In India: 3 rupees.

विषय सूची

"प्राचीन आर्य धर्मको अपनी स्वाभाविक पवित्रतामें शुद्ध करनेवाली आगकी भट्ठी एक थी—वह भट्ठी 'आर्यसमाज' कहलायी। वह आग भारत वर्षके एक परम योगी ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त ऋषि दयानंदके हृदयमें प्रकाशित हुई"।

—एंडरू जेकसन डेविस—(बियोंड दी वेली पृ. ३८३)

❖ ❖ ❖

"महर्षि दयानंदका लिखा हुआ 'सत्यार्थप्रकाश' आज शिक्षित और अशिक्षित, नगरवासी या ग्राम निवासी सभी हिन्दुओंकी अपनी बाइबिल है"।

—श्री रंगा ऐयर–(फादर इन्डिया पृ. ११६)

❖ ❖ ❖

"जैसे जैसे मैं प्रगति करता जाता हूं, मुझे ऋषि दयानंदके चरणारविंद दिखायी देते हैं।"

—महात्मा गांधी

❖ ❖ ❖

"यदि यह महर्षि भारतमें पैदा न होते तो आज हमें महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतरायके दर्शन न होते"।

—खदीजा बेगम

❖ ❖ ❖

"यदि 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रतका मूल्य १००० रुपये होता, तो भी मैं अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर उसे खरीदता। इस ग्रंथको मैंने ग्यारह बार बडे ध्यानसे पढा है। और हरबार मुझे उसमेंसे नयी प्रेरणा और नये विचार मिले हैं"।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम. ए.

नव भारत के आद्य निर्माता–युग प्रवर्तक

आर्य समाजके संस्थापक: महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान

श्रीमान् राजदेवसिंह योधासिंह

भूमिका

लेखक पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए.

(मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली)

मेरे लिये यह सौभाग्य की बात हुई कि मैं आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी रजत जयंतीमें, जो कि फरवरी १९५० के मध्यमें हो रही है, भाग लेनेके लिये डरबन पहुंच गया और प्रतिनिधि सभाकी ओरसे इस मौकेपर प्रकाशित होनेवाले दक्षिण आफ्रिकामें आर्य धर्मके प्रचारके इतिहासमें अपना तुच्छ हिस्सा दे सका। यद्यपि यह प्राक्कथन है परन्तु मैंने इस पुस्तकके कई मुद्रित पृष्ठ पढकर तथा मेरे विद्वान् मित्र पं. नरदेवजी वेदालंकारसे कई हस्त लिखित पृष्ठ सुनकर लिखा है।

यह इतिहास सिर्फ सभाके जन्मकाल १९२५ के बाद ही प्रवृत्तियोंका ही विवरण नहीं है। अपितु उससे भी पूर्व की दो दशाब्दियोंका इतिहास इसमें है, जिन दिनोंमें आर्य समाजके प्रारम्भिक प्रचारकोंने यहां प्रशंसनीय कार्य किया है। भाई परमानन्द, स्वामी शंकरानंद, स्वामी मंगलानंद पुरी, श्री प्रवीणसिंहजी, डॉ. भगतराम सहगल, तथा दूसरे कई प्रचारकोंने इस सुदूर प्रदेशमें आर्यसमाजका बीजारोपण किया था। वे लोग आर्य जगतके तथा संपूर्ण हिन्दू समाजके प्रशंसापात्र हैं। क्योंकि उन्होंने इस प्रदेशके अपने हिन्दू भाइयोंकी दुःखद अवस्थापर सबका ध्यान खींचा है और साथ ही उन्हें क्रियाशील भी बनाया है।

इस प्रदेशके प्रथम प्रवासी अशिक्षित मजदूर थे। वे सन् १८६० में 'शर्तबन्ध मजदूर' बनकर यहांपर यूरोपियन लोगोंकी गन्नेकी खेती करने आये थे। ब्रिटिश सरकारको, जिसके अधीन उस समय भारतवर्ष था, यहांके गोरों की ही ज्यादा चिन्ता थी। भारतीय लोग यहांपर सिर्फ विषम परिस्थितिमें लाये ही न गये बल्कि इस रूपसे रखे गये कि समय गुजरते उनकी बुरी तरह

से सामाजिक और नैतिक गिरावट हुई। वे अपना धर्म भूल गये। वे अपने व्रत और त्यौहार भूल गये। अपने सामाजिक रिवाज भूल बैठे और अपनी भाषा भी खो बैठे। वे या तो ईसाइयत या इस्लामको अंगीकार करने लगे या दुःखद जीवन जीनेको छोड दिये गये। मातृभूमिसे उनका सम्बन्ध टूट गया। उनको यह बतानेवाला कोई न था जि भारतमें मजदूरवर्ग भी उच्च नैतिकता रखते हैं। इस प्रवासी मजदूरोंकी संतानें अपने पूर्वजोंके धर्मको न जानकर तथा अपने रीतिरिवाजों एवं त्यौहारोंको भूलकर इस्लामकी ताजिया परस्तीकी तरफ और विदेशी संस्कृतिके प्रभावकी तरफ धीमे २ झुक गयीं। इस परिस्थितिको सुधारनेका काम आर्यसमाजके प्रारम्भिक प्रचारकोंपर आ पडा। उन्होंने यहांपर हिन्दू सभा या आर्यसमाजकी नींव डाली। परन्तु यहां वास्तविक कार्य तो समाजके उन कार्यकर्ताओंने किया जो यहां सदाके लिये बस चुके थे। इनमें स्वामी भवानी दयालजी मुख्य हैं। स्वामीजी दक्षिण आफ्रिकामें किये हुए अपने सामाजिक, धार्मिक और भलाईके कामोंके लिये भारतवर्षमें भी ख्याति पा चुके हैं। इनके अलावा पिछले कालके आर्य प्रचारकों ने भी यहांपर आर्य धर्मको पुनरुज्जीवित करनेके लिये अच्छा प्रयत्न किया है। जिनमें मुख्य प्रचारकोंके नाम ये हैं—प्रो. रलाराम एम. ए., वैदिक मिशनरी जैमिनी मेहता, योगी प्रो. यशपाल, बडौदा आर्य कन्या महाविद्यालयकी छात्राएं व पं. आनन्दप्रिय, पं. ऋषिराम तथा पं. नरदेव वेदालंकार आदि।

मैं इस देशमें अभी नया ही हूं और दो सप्ताहमें यहांके विषयमें बहुत कम जान सका हूं। फिर भी मैं यह कह सकता हूं कि यहांकी आर्य प्रतिनिधि सभाके आधारस्तंभ श्री सत्यदेव हैं। उनके भारी व अनथक परिश्रम का यह फल है कि सभाने तथा अन्य आर्य संस्थाओंने इतनी अधिक प्रगति की है। उन्हें आर्यसमाजमें अपार श्रद्धा है। स्वामी दयानंदके इस श्रद्धालु भक्तने समाजकी प्रगतिके लिये कोई कसर उठा नहीं रखी है। अपनी श्रद्धा और अपने उत्साहसे उन्होंने यहां सम्मानास्पद स्थान पा लिया है। इन थोडेसे दिनोंमें मैं दरबनके आर्यसमाजके कुछ ही कार्यकर्ताओं और हितैषियों का परिचय पा सका हूं। पर मैं कह सकता हूं कि दक्षिण आफ्रिकामें उनकी

कमी नहीं है और आर्यसमाजका भविष्य अच्छे हाथोंमें है। उनमेंसे कुछके नाम ये हैं—श्री एस. एल. सिंह, श्री सुखराज छोटई, श्री बी. एम. पटेल. डॉ. एन. पी. देसाई, श्री बी. परमेश्वर, श्री एम. मुन्नू, श्री गोवनभाई मणि भाई, श्री बी. गोविंद, श्री आर. खरपत. पं. नैनाराज आदि। यह नामावली अधूरी है। कई महत्वके नाम छूट गये होंगे। उसके लिये मैं उनकी क्षमा चाहता हूँ। मैं कई नवयुवकोंके परिचयमें भी आया हूँ; विशेषकर आर्य युवक सभाके सदस्य, जिनसे अच्छी उम्मीद रखी जा सकती है।

भारतवर्षसे योग्य और पूर्ण मार्गदर्शनके बिना, यहांका कार्य जैसे संतोषजनक ढंगसे किया जाना चाहिये था वैसा नहीं हो सका है। आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल अपने पैरोंपर खड़ा होनेका प्रयत्न कर रही है और स्थानीय प्रचारक तैयार करनेको उद्यत हैं, यह आशास्पद चिह्न है। सभाको ऐसाही करना चाहिये। इसमें कोई कठिनाई भी नहीं है। सामर्थ्य तो है ही। पद्धतिपूर्वक कार्य बढानेकी ज़रूरत है। इसका यह मतलब न लिया जाये कि आर्य जगत्की केन्द्रीय संस्था आर्य सार्वदेशिक सभा, देहली अपने उत्तरदायित्वसे मुक्त है। अपने नामको सार्थक करनेके लिये यह तो सभाका परम कर्तव्य है कि वह संसारके सभी भागोंमें वैदिक धर्मका प्रचार करावे। मैं दक्षिण आफ्रिकाके अपने मित्रोंको विश्वास दिलाता हूँ कि सभा अपने कर्तव्यके प्रति उदासीन नहीं है। पर उसके मार्गमें मुसीबतें कई हैं। उसके साधन बहुत अल्प हैं और कार्यकी जटिलता अपार है।

आर्य प्रतिनिधि सभाके लिये करनेके तात्कालिक कार्य ये हैं:—

(१) विशाल सभा भवनका निर्माण करना।

(२) स्थानीय आवश्यकताके अनुकूल आर्यसामाजिक साहित्य का प्रकाशन और उसका प्रचार करना।

(३) जूलू और दूसरे आफ्रिकन लोगोंके साथ संसर्ग बढानेके लिये स्थायी समिति बनाना।

(४) हिन्दीके कार्यको वेग देना।

(५) हिन्दू समाजके विभिन्न अंगोंमें सहयोग पैदा करना।

(६) दलित हिन्दू वर्ग को शिक्षित करके उनके साथ सामाजिक सम्बंध जोड़करके तथा मुसीबत और जरूरतके वक्त उन्हें मदद पहुंचाकर के विधर्मी प्रभावसे बचाना।

(७) शिक्षा और धार्मिक प्रचारके द्वारा हिन्दू जीवनके नैतिक स्तल को ऊँचा उठाना।

इस समय सभी वर्ग और सभी विभागोंके हिन्दुओंमें जागृति नजर आती है और यह आशा है कि आर्य प्रतिनिधि सभाको सबकी तरफसे योग्य मान्यता और आवश्यक प्रोत्साहन मिलेगा। क्योंकि हिन्दू समाजको जिन अनगिनत सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक अवगुणोंने ग्रस लिया है उनका उन्मूलन वैदिक धर्मके पुनरुद्धारसे और स्वामी दयानंदके निर्दिष्ट कार्यक्रमके द्वारा ही किया जा सकेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभापर परमात्माकी अपार कृपा हो।

दरबन.
१८. १. ५०.

गंगाप्रसाद उपाध्याय

पुस्तकके लेखकः पं. नरदेवजी वेदालंकार
सभापतिः हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल
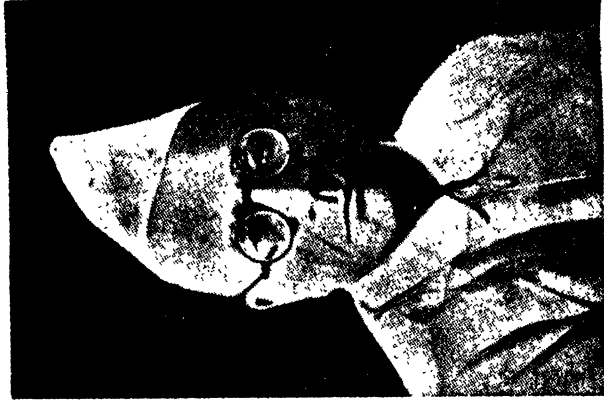
भूमिका लेखकः पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए.
मंत्रीः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

आर्यसमाज प्रवृतिके प्राण: श्री डी. जी. सत्यदेव
मंत्री: आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

पुस्तकके अंग्रेजी अनुवादक: श्री एस. छोटई
उपमंत्री: आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

ओ३म्

प्रस्तावना

(मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालका वक्तव्य)

१५ फरवरी १९५०के दिन आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी स्थापनाके २५ वर्ष समाप्त होते हैं। इस अवसरपर सभाकी रजत जयन्ती मनानेके लिये सभाकी मुख्य समितिमें ता. २९ अगस्त १९४९ को निर्णय हुआ। इस शुभ अवसरपर सभाने निम्न लिखित कार्योंको करनेका निश्चय किया:—

१ दक्षिण आफ्रिकामें आर्यसमाजके प्रचारके इतिहासका प्रकाशन।
२ वेद मंदिरके निर्माणके लिये १० हजार पौंडके दानका अभिवचन देनेवाले सभाके उदार हृदय प्रधान आर्य सज्जन श्रीमान आर. बोधा सिंहके शुभ हस्तोंसे वेद मंदिरकी आधारशिला रखना।
३ आर्य सार्वदेशिक सभा, देहलीके प्रधान मंत्री पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए. को इस शुभ अवसरपर निमंत्रित करना।
४ दक्षिण आफ्रिकाकी आर्यसमाजकी समस्त संस्थाओंमें जागृति लाना और प्रचारको वेग देना।
५ आर्य वीर दलको संगठित करना और सेवाव्रतका पालन करना।
६ जयंतीके महोत्सवपर शानदार जुलूस निकालना, सम्मेलन और परिषदोंका आयोजन तथा महायज्ञ आदि करना।

इनमेंसे प्रथम कार्य आर्यसमाजके प्रचारके इस इतिहासको प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष होता है। ऐसा एक इतिहास प्रकाशित करनेका एक प्रयत्न सन् १९३०में भी हुआ था। तब इस देशमें आर्यसमाजके प्रथम संदेशवाहक भाई परमानंदजीके शुभागमनको २५ वर्ष होते थे। उसकी स्मृतिमें आर्य प्रतिनिधि सभाने आर्यसमाजके प्रचारका इतिहास छपवानेका निर्णय किया

था। जिससे मैंने वह इतिहास लिखकर भारतवर्षमें छपनेके लिये आगरा भेज दिया था। वहां वह छपकर तैयार हो गया था और सब पुस्तकें बम्बई आ पहुंची थीं। परन्तु उस समय वहां विदेशी वस्तुओंकी होली जलाई जा रही थी। इन पुस्तकोंको भी विदेशीके भ्रममें जला दिया गया। सारा प्रयत्न व व्यय निरर्थक गया। इसीसे रजत जयन्ती के अवसरपर यह इतिहास फिरसे लिखवाकर प्रकाशित किया जा रहा है।

यह सिर्फ आर्य प्रतिनिधि सभाका ही इतिहास नहीं है। प्रतिनिधि सभाकी स्थापना, उसके सम्मेलन तथा उसके विविध कार्योंके इतिहासके साथ ही आप इसमें दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयोंके आगमनसे लेकर आज तक की धार्मिक, सांस्कृतिक, शिक्षा-विषयक तथा सामाजिक प्रवृत्तियोंको देख सकेंगे। यहांपर आये हुए हिन्दुओंकी प्रारम्भिक दशा कैसी थी, वे किस रूपमें आये; आनेके बाद भी ज्ञान, शिक्षा और प्रचारके अभावमें उनकी कैसी दुर्दशा होती गई; फिर उस स्थितिमें प्रो. भाई परमानंदजी, स्वामी शंकरानंदजी, स्वामी भवानी दयालजी तथा अन्य प्रचारकोंके कार्योंने कैसा परिवर्तन कर दिया, यह आप इसमें पढ सकेंगे।

प्रतिनिधि सभाकी स्थापनाके बाद उसके अन्तर्गत रहकर प्रचार कार्य करनेवाले डॉ. भगतराम सहगल, योगी प्रो. यशपाल तथा आर्य कन्या महाविद्यालय, बडौदाकी छात्राओंके प्रचार कार्यको एवं साथही प्रो. रलाराम, पं. ऋषिराम, पं. जैमिनी मेहता, पं. नरदेव वेदालंकार आदिके प्रचार कार्यको भी आप इसमें पावेंगे। यहांके हिन्दुओंकी धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति कैसी है; उनके त्यौहार, उनके संस्कार, उनकी शिक्षा, उनके मातृभाषा हिंदी के प्रचारके प्रयत्न, उसमें होनेवाले धर्म परिवर्तन आदिके विविध प्रश्नोंको आप इस पुस्तकमें देख सकेंगे और देख सकेंगे कि इन प्रवृत्तियोंके पीछे आर्य समाजका कितना बडा हाथ रहा है।

यह सारा कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उसमें सम्मिलित आर्य संस्थाओं द्वारा हुआ है। उन विभिन्न आर्य संस्थाओंके प्रयत्नोंका संक्षिप्त इतिहास भी पृथक्रूपसे दिया गया है। साथही जिन आर्य सज्जनोंने आर्य

समाजके कार्योंमें अपनी अमूल्य सेवाएं दी हैं उनकी संक्षिप्त जीवनियां भी इसमें दी गई हैं। जिससे भावी संतति अपने पूर्वजोंके जीवनसे शिक्षा ग्रहण कर सके।

सबसे अन्तमें पुस्तकके विद्वान लेखक पं. नरदेव वेदालंकारने 'उपसंहार' में अपने विचार प्रकट किये हैं। वे यहांपर दो साल तक रह चुके हैं। इसमें उन्होंने आर्य संस्कृति, भारतीय सभ्यता और हिन्दू जीवन परम्पराकी रक्षा के लिये एवं प्रगतिके लिये जो विचार उपस्थित किये हैं हम उनकी ओर सभी पाठकोंका ध्यान खींचना चाहते हैं और चाहते हैं कि उनपर शीघ्रसे शीघ्र अमल किया जावे। जिससे इस देशमें हम अपने धर्म और जातिके गौरवको रखनी स्थापित कर सकें।

इस इतिहासको जनताके हाथमें रखते हुए हम भी अपने अनुभवोंके आधारपर निम्न लिखित बातोंकी तरफ लोगोंका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं;—

(१) प्रतिनिधि सभाके अन्तर्गत एक या दो विद्वान् प्रचारक पुरुष और स्त्री स्थायीरूपसे वेतन पर रख जावें। जिसके द्वारा सदा प्रचार कार्य होता रहे।

(२) सभामें सम्मिलित संस्थाओंको पूर्ण सहयोग दिया जाना चाहिये तथा उनका निरीक्षण होना चाहिये। सम्मिलित संस्थाओंको प्रगतिशील और उन्नत बनाना चाहिये। संस्थाओंके कार्योंमें स्थानीय जनता कम रस लेती है। कई पाठशालाएं अभी कर्जसे मुक्त नहीं हो सकी हैं। ऐसे प्रयत्न होने चाहिये जिससे लोग उनमें अधिक रस लेने लगें और उनका अच्छा सहयोग प्राप्त हो सके।

(३) सम्मिलित संस्थाओंकी उन्नति के लिये स्त्री समाज, रात्री पाठशाला, भजन मंडल, वीर दल आदि स्थापित करके कार्यको व्यापक बनाना चाहिये।

(४) षोडश संस्कारोंके प्रचार और त्यौहारोंके मनानेपर जोर दिया जाना चाहिये।

(५) दोनों समय पारिवारिक संध्या, हवन तथा साप्ताहिक सत्संगपर

सभी आर्योंको ध्यान देना चाहिये। संध्याके संस्कृत मंत्रोंके अर्थ विभिन्न भाषाओंमें हों। इस प्रकार संध्याके द्वारा विश्वके आर्योंका संगठन हो सकेगा।

(६) भारतीय शिष्टाचार और रीति रिवाजोंपर सबका ध्यान आकर्षित करना चाहिये। हमारे रहने, उठने, बैठने तथा मिलनेके व्यवहारोंमें भारतीय रीतियोंका अवलम्बन करना चाहिये। बहुधा देखा गया है कि लोग गुड मोर्निंग, शेक हेंड या सलाम करनेमें नहीं हिचकते पर दोनों हाथ जोडकर नमस्ते करनेमें झिझकते हैं। हमें अपनी भारतीय जीवन परम्पराएं कायम चाहिये।

(७) अपने धर्म, संस्कृति और जातीयताको अटल रखनेके लिये सभी भारतीयोंको मातृभाषाकी पढाई पर अधिकसे अधिक ध्यान देना चाहिये। सिर्फ अंग्रेजी शिक्षाका कैसा बुरा प्रभाव हमारे जीवन पर हो रहा है यह प्रत्यक्ष है। विधर्म और विदेशी सभ्यतासे बचनेके लिये मातृभाषाकी शिक्षा परम आवश्यक है।

(८) प्रचारके लिये धार्मिक पुस्तिकाओं और अन्य प्रचार साहित्यकी अत्यन्त आवश्यकता है। प्रतिनिधि सभा अपने प्रेस और पत्रके लिये कोशिश करती रही है पर धनाभावके कारण कार्य शिथिल रहा है।

उपरोक्त बातोंपर यदि ध्यान दिया जावे और उसके अनुकूल कदम उठाये जावें तो अवश्य ही हमारी प्रगति होगी और हम अपने उद्देश्यमें सफल हो सकेंगे।

इस इतिहासको लिखनेके लिये सभाने पं. नरदेवजी वेदालंकारसे प्रार्थना की थी जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। पंडितजी गुरुकुल कांगडीके सुयोग्य स्नातक हैं। आप इस प्रदेशमें दो वर्षसे आये हुए हैं। जबसे आप यहां आये हैं, सभाके एवं वैदिक धर्मके प्रत्येक कार्यमें सहयोग दे रहे हैं। आप अपने विनम्र और उत्साही स्वभावसे खूब लोकप्रिय हो रहे हैं। पंडित जीके परामर्शसे सभा द्वारा हिन्दी सम्मेलनका आयोजन हुआ था। जिसमें हिन्दी प्रचारके लिये हिन्दी शिक्षा संघ, नातालकी स्थापना हुई थी। पंडित जी इस संघके सभापति हैं। आपने इस संघके द्वारा हिन्दी प्रचारको नया

जीवन दे दिया है। पं. नरदेवजी वेदालंकारको यहां बुलानेके लिये सभा तथा सभी भारतीय दरबन की सूरत हिन्दू एजुकेशनल सोसायटीकी चिर ऋणी रहेंगे।

इस इतिहासको लिखनेमें पंडितजीने बडा श्रम लिया है। सभाके सभी कागजात आदिकी जांच करके तथ्योंको निकाल कर आपने यह इतिहास लिखा है। इसे लिखनेमें आपको सभा द्वारा प्रकाशित आर्यसमाजके इतिहास की प्रूफ कोपीसे, 'प्रवासी भारतीय'से तथा स्वामी भवानी दयालजी लिखित 'स्वामी शंकरानंद संदर्शन' एवं 'प्रवासीकी आत्मकथा' नामक पुस्तकोंसे अच्छी मदद मिली है। पंडितजीने इस पुस्तकके लिखनेमें जो श्रम उठाया है उसके लिये सभा उनकी अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तकका अंग्रेजी अनुवाद हमारे सहायक मंत्री श्री सुखराज छोटई ने किया है। आप अंग्रेजी विद्याके स्नातक हैं। आपकी ओरसे सदा ही सभा को पूर्ण सहयोग मिलता रहा है। एक सहोदरकी भांति वे हरएक कार्यमें मदद दे रहे हैं। सभा द्वारा आयोजित परिषदों और सम्मेलनोंमें अंग्रेज़ी अनुवाद का कार्य आपने बडी योग्यतासे निभाया है। आपकी सेवा और परिश्रम सराहनीय है।

आर्य सार्वदेशिक सभाके प्रधान मंत्री मान्यवर पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए. सभाका निमंत्रण स्वीकार करके सभाकी रजत जयंतीके शुभ अवसरपर यहां पधारे हैं। आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर हमें अनुगृहीत किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके शुभागमनसे रजत जयन्ती महोत्सव पूर्ण सफल होगा। तथा वैदिक धर्मके प्रचार कार्यमें बडी प्रगति हो सकेगी। इस इतिहासके लिये भूमिका लिखनेकी हमारी विनतीको स्वीकार करके उपाध्यायजीने हमे बहुत आभारी किया है। आपकी भूमिकासे इस पुस्तक का महत्व बढ गया है।

विगत १५ वर्षोंसे सभा अपना कार्य करती रही है। सभाके अधिकारियों, सदस्यों और आर्य जनताके सहयोग और प्रेमसे मैं २४ वर्षोंसे सभा के मंत्रीत्व का भार निबाह सका हूँ। इसका श्रेय उन सभी महानुभावोंको ही है। सभाकी स्थापनासे लेकर आज तक श्रीमान् एस. एल. सिंह सभी

कार्योंमें सहयोग देते आये हैं। वे ही सभाके सर्व सरकारी पत्रोंको लिखते रहे हैं। सभाकी आपने अमूल्य सेवा की है। यहांके आर्योंमें आप एक रत्न हैं। इसी तरह सभाके कोषाध्यक्ष श्रीमान् एम. मुन्नू गत २० वर्षोंसे सभाके इस उत्तरदायित्वपूर्ण पदपर हैं। वे अपनी शारीरिक अस्वस्थताके बावजूद सभा को पूर्ण सहयोग देते रहे हैं। सभा इन दोनों आर्य सज्जनोंकी चिर ऋणी रहेगी।

सभाका आज तकका सारा कार्य अवैतनिक सेवाभावी अधिकारियोंके द्वारा हुआ है। यहांतक कि वे अपने निजी खर्चसे भी सभाका कार्य करते रहे हैं। इस जयंतीके शुभ अवसरपर मैं सभाकी तरफसे अपने वर्तमान तथा भूतपूर्व सभी सहयोगी अधिकारियों, प्रतिनिधियों, सहायकों, दाताओं और आर्य जनताकी अन्तःकरण पूर्वक कृतज्ञता मानता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी इन सबका हार्दिक सहयोग मिलता रहेगा।

आर्य जातिकी सेवा करते हुए मेरे जीवनकी एक चिर अभिलाषा रही है। वह है वेद मंदिर और भवनके निर्माण की। परमात्मा की परम कृपासे वह कामना भी पूर्ण होनेका अवसर आया है। उसका नकशा तैयार हो गाया है। हमारे प्रधान श्रीमान् आर. बोधासिंहके उदार दानसे सभा का यह महाकार्य पूर्ण होने जा रहा है। हमारी संस्कृतिमें दानकी विशेष महिमा है। प्रभुने श्री बोधासिंह परिवार पर बडी कृपा की है और उसका सुफल हमारी जातिको मिल रहा है। श्रीमान् आर. बोधासिंह जैसे उदार दाताओं के द्वारा ही समाजका कार्य आगे बढ सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्तीके महोत्सवपर सभाके प्रधानके शुभ करकमलोंसे वेद मंदिर की नींव रखी जा रही है। आर्यसमाज और वैदिक धर्मके प्रचार की यह दृढ नींव बने यही प्रभु प्रार्थना है।

अन्तमें सभाके सभी सहायकोंको धन्यवाद देता हुआ

आपका अनुचर,

सत्यदेव

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

अध्याय पहला.

हिन्दुओंकी प्रारम्भिक दशा

— तथा

प्रथम संदेशवाहक

प्रो० भाई परमानन्दजी एम. ए.

मजदूरी प्रथाका प्रारम्भ यूरोपीय जातियोंमें जब जागृति प्रारम्भ हुई तो उनमें धनका लोभ और साम्राज्य बढानेकी इच्छा प्रबल हो उठी। इस कारण उन्होंने दुनिया भरमें नये प्रदेशोंकी खोज की। इस तरह उन्हें कई नये प्रदेश हाथ लगे। इन प्रदेशोंको आबाद करनेके लिये दास प्रथाका सहारा लिया गया। हजारों हबशी गुलाम बनाकर बेचे जाने लगे। मानवताका अपमान करनेवाली इस दास प्रथाके विरुद्ध जबर्दस्त आंदोलन हुए; जिसके फलस्वरुप भिन्न २ देशोंने दास प्रथाको कानून द्वारा बंद कर दिया। इंग्लैंडने सन् १८३३ में दास प्रथाको गैर कानूनी ठहराया।

इस दास प्रथाके बंद हो जानेसे उपनिवेशोंकी यूरोपीय बस्तियोंपर बडी आफत आयी। उनकी खेतियां गुलाम मजदूरोंके बिना सूखने लगीं, दूसरे भी काम बंद रहने लगे। उन लोगोंका जीना मुश्किल हो गया। इस गंभीर प्रश्नको सुलझानेके लिए शीघ्र ही 'शर्तबन्दी मजदूर प्रथा' का श्री गणेश हुआ।

इस प्रथाके अनुसार इन नयी यूरोपियन बस्तियोंके लिए भारत तथा चीनसे मजदूर पानेकी योजना बनायी गयी। इन देशोंसे लोगोंको बहकाकर भिन्न २ उपनिवेशोंमें मजदूरी करनेके लिए भेजा जाने लगा। इन मजदूरोंसे ५ वर्षकी गुलामी लिखवा ली जाती थी।

सन् १८३४ का वर्ष भारतवासियोंके लिए बड़े दुर्भाग्यका था जबकि भारतीय ऋषि संतान सर्व प्रथम अर्ध दास बनाकर मोरिशस टापूमें भेजी गयी। उस साल ७००० मजदूर कलकत्तेसे मोरिशसको भेजे गये।

दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयोंका आगमन मोरिशसके बाद भारतीय मजदूर फीजी, जमैका, ब्रिटिश गायना, ट्रिनीदाद आदि कई उपनिवेशोमें भेजे जाने लगे। उस समय तक दक्षिण आफ्रिकाके नाताल प्रदेशमें भी अंग्रेज लोग आकर बस चुके थे। यहांपर गन्नेकी खेतीके लिए उनको मजदूरोंकी जरूरत हुई। इसके लिये भारतसे 'शर्तबंदी मजदूर प्रथा'के अनुसार मजदूर बुलाये गये। सर्वप्रथम मद्रास प्रांतसे कैरो जहाज द्वारा १७ नवम्बर १८६० के दिन भारतीय लोग ५ वर्ष की गुलामी लिखाकर इस देशमें आये। फिर तो यहांपर संयुक्त प्रांत, बिहार, पंजाब आदि प्रांतोंसे भी मजदूर आने लगे। कुछ वर्षोंके बाद बंबई प्रांतके कई गुजराती, मुसलमान और हिन्दू भी स्वतंत्र रूपसे इस प्रदेशमें व्यापार करनेके लिये आने लगे। शर्तबंदी मजदूर प्रथाके विरुद्ध भारतवर्षमें घोर आंदोलन उठा। जिससे सन् १९१७ में भारतीयोंको मजदूरके रूपमें बाहर भेजा जाना बंद हो गया।

हिन्दुओंकी प्रारम्भिक दशा भारतसे जो भी मजदूर बाहर भेजे गये प्रायः वे सब अनपढ़ और ग्रामीण थे। ऐसे ही लोग दक्षिण आफ्रिकामें भी आये। सन् १८६० से भारतीय लोग यहां आने लगे। यह वह समय था जब कि धार्मिक व राजनीतिक दृष्टिसे स्वयं भारत देश प्रगाढ निद्रामें सोया हुआ था। १८५७ के स्वातंत्र्य संग्रामको बुरी तरहसे कुचल दिया गया था। भारत वर्षको गहरी नींदसे जगानेवाले युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने अभी आर्यसमाजकी स्थापना भी नहीं की थी। ऐसे समयमें यहांपर जो मजदूर आये उनकी स्थितिकी कल्पना करना सहज है। धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे इनमें नये युगका कोई चिह्न न था। पुराने रूढिवादमें, अन्धविश्वासों और वहमोंमें, जादू टोने और धागे तावीजोंमें तथा जातपांतके, ऊँचनीचके भेदभावोंमें ये लोग पूरी तरहसे डूबे हुए थे।

सबसे बुरी बात यह हुई कि जिस परिस्थितिमें ये यहां आये और इनके साथ गोरे मालिकोंका जो दुर्व्यवहार होता था उसने इनकी धार्मिक एवं सामाजिक प्रथाओंको एकदम मेट दिया था। रूढिवादके अनुसार इनके लिए समुद्र पार करनाही अधर्म था, इसलिए जो हिन्दू देश छोडकर निकले उन्होंने तबसे अपने धर्म को नष्ट समझ लिया। उस समय सारा धर्म छूआ-छूत और चौके चूल्हेमें सीमित था। जब इन प्रवासी हिन्दुओंने देखा कि जहाजोंमें न कोई अपनी जाति-बिरादरी रख सकता है, न चौके चूल्हेकी रक्षा कर सकता है तो उन्होंने अपनेको सर्वथा पतित समझ लिया। लोगों ने जनेऊ और चोटी काटकर गंगाजीमें बहा दी। मानों धर्मकी मर्यादासे छुट्टी पाली।

फिर भी इन भारतीयोंमें धर्म और जातीयताके अंकुर छिपे हुए थे। इनके मनपर भी सहस्रों वर्षके धर्म और संस्कृतिकी छाप थी। मौका पातेही ये अंकुर फूट पडे। जब ये मजदूर अपनी शर्तबंदीकी अवधिसे मुक्त हुए, तब ये खेती बारी और छोटा मोटा व्यापार करने लगे। जिन मजदूरोंको मासिक ८-१० रुपये मिलते थे; उन्होंने भी पाई पाई जोड कर अपने धार्मिक कार्य चालू रखे। ऐसी विषम परिस्थितिमें भी उनके धार्मिक विश्वासोंने ही उन्हें हिन्दू बना रहने दिया।

उस समयके इन हिन्दुओंके धर्मका स्वरूप पुराना था। ये अंधविश्वास और वहमोंसे भरे हुए थे। मद्रास प्रांतके तामिल भाषी लोग गोवर्धन, माता माई और मारीमाकी पूजा किया करते थे। वे भारतसे वारसेमें पशुबलिकी प्रथा भी लाये थे। प्रतिवर्ष सैकडों प्राणियोंकी बलि चढ़ाते थे। हिन्दी भाषी लोग भी कालीकी पूजामें पशुबलि देते थे। वे हनुमानजीका झन्डा उडाते, उनपर तेल चढाते और हनुमान चालीसा तथा सत्यनारायणकी कथाके पाठ को ही धर्म-कार्य समझते थे।

सर्व प्रथम हिन्दुओंने धर्म प्रचारार्थ दरबनमें एक मन्दिर और धर्मशाला 'श्री ठाकुरद्वारा और धर्मशाला'के नामसे बनवायी। इसके बाद वेरुलम टोंगाट, सीकाउलेक, क्लेरवुड, इस्पींगो, सिडनम, मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ

आदि स्थानोंपर भी मंदिर बनने लगे। तामिल भाषियोंने भी अपने मंदिर दरबन, माउन्टएजकोम्ब, न्यूलेन्ड, इस्पींगो, केटो मेनर, क्लेरेस्टेट आदि जगहोंपर बनाये।

प्रो. भाई परमानन्दजीका शुभागमन जब हिन्दू लोग इस तरहसे अपना जीवन निर्वाह करते और अपने विश्वासों के अनुसार पूजा पाठ किया करते थे, तब भारतवर्षमें महर्षि दयानन्द और उनके आर्यसमाजने प्राचीन वैदिक धर्मका उद्धार करना प्रारंभ कर दिया था। उस आर्यसमाजमें दीक्षित कुछ सज्जन पूर्व आफ्रिका और दक्षिण आफ्रिका भी पहुंच गये थे। यहांकी हिन्दू सन्तानोंकी घोर अवस्थापर उन्हें महा खेद हुआ। यहांके कुछ आर्य सज्जनोंने, जिनमें लाला मोहकमचन्द वर्मनका नाम विशेष उल्लेखनीय है, लाहौर कोलिज के प्रिंसिपल महात्मा हंसराजजीसे किसी प्रचारकको भेजनेके लिए प्रार्थना की। महात्मा हंसराजजीने इस प्रार्थनापर ध्यान देकर भाई श्री परमानंदजीको यहां भेजा। ५ अगस्त १९०५ का वह दिन बडा शुभ था जब कि आर्य संस्कृतिके प्रथम संदेशवाहक प्रो. भाई परमानंदजीने दक्षिण आफ्रिकामें पदार्पण किया। भारतीयोंके इस देशमें आगमनके ४५ वर्षके पश्चात् सर्वप्रथम एक भारतीय विद्वान् इस देशमें आया।

भाई परमानंदजीके स्वागतके लिये एक स्वागत समिति बन गयी। जिस के प्रधान श्री रामचन्द्रजी थे। मंत्री श्री बी. ए. मेघराज और श्री एस. डी. मोडली तथा कोषाध्यक्ष श्री सी. दोरास्वामी पिल्ले थे। इस समितिने भाई जीके व्याख्यानोंका भी प्रबंध किया। भाईजी हिन्दी तथा अंग्रेजीके अच्छे विद्वान थे। उनके प्रचारका अच्छा प्रभाव होने लगा। उस समय यहांके हिंदुओंमें विभिन्न समुदाय तथा मतमतान्तर जारी थे इस लिए आर्यसमाजकी स्थापना करना कठिन मालूम हुआ। तात्कालिक आवश्यकता यह थी कि किसी भी तरह हिन्दुओंमें नयी जागृति पैदा हो, उनमें अपने धर्म और जातिके प्रति सन्मान जागे। भाईजीने सर्वप्रथम 'हिन्दू सुधार सभा' की स्थापना की।

दक्षिण आफ्रिकामें आर्यसमाजके प्रथम संदेशवाहक

देवतास्वरूप भाई परमानन्दजी एम. ए.

शुभागमन सन् १९०५

जागृतिके अग्रदूत

स्वामी शंकरानन्दजी महाराज

शुभागमन सन् १९०८ से १९१३

हिन्दू यंग मेन्स एसोसिएशन हिन्दू युवकोंके उत्थानके लिए भाईजीने स्थान २ पर 'हिन्दू यंग मेन्स एसोसिएशन' की स्थापना शुरू की। दरबनमें भाईजीके कई जगह व्याख्यान हुए। इसके बाद आप नाताल प्रांत की राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग गये। वहांपर भी आपका खूब स्वागत हुआ और प्रचार की धूम मच गयी। यहाँपर भाईजीने अ॰ बर १९०५ में हिन्दू यंग मेन्स एसोसिएशनकी स्थापना की। इस संस्थाके प्रति तामिल भाषी लोग खूब आकर्षित हुए। वे इसमें सम्मिलित होकर कार्य करने लगे। आज भाईजीकी स्थापित की हुई अन्य संस्थाएँ लुप्त हो गयी हैं परन्तु मेरित्सबर्गकी इस संस्थाने खूब तरक्की की है। यह आज भी भाईजीके नामकी स्मृतिको कायम किये हुए है। मेरित्सबर्गमें भाईजीको एक मानपत्र देकर उनका सन्मान किया गया था।

यहाँसे भाईजी सारे दक्षिण आफ्रिकाके प्रचारके लिए निकल पड़े। पहले वे लेडीस्मिथ और डंडी गये। इन स्थलोंके भारतीय मजदूरोंकी दुर्दशा देखकर आप बड़े दुःखी हुए थे। यहांसे भाईजी जोहानिसबर्ग पहुंचे। इस शहरमें भी भाईजीका खूब स्वागत हुआ। यहांकी स्वागत समितिके अध्यक्ष महात्मा गांधीजी थे। इसके पश्चात् भाईजीने प्रीटोरिया और केपटाउनमें जाकर हिन्दी व अंग्रेजीमें कई प्रभावशाली व्याख्यान दिए। इस प्रकार अपनी अल्पकालीन यात्राको समाप्त कर भाई परमानंदजी दिसम्बर १९०५ में यहांसे इंग्लैंडके लिए रवाना होगये।

भाई परमानन्दजीके प्रचारका प्रभाव भाई परमानन्दजी यहां ४-५ मासही ठहर सके, इससे वे जमकर कार्य नहीं कर सके; परन्तु इस छोटेसे कालमें भी आपने यहांपर वैदिक धर्मकी ज्योति जला दी। २७ वर्षकी छोटी उम्रके इस नवयुवकको धर्म, संस्कृति और दर्शनपर अंग्रेजीमें अद्भुत छटासे व्याख्यान देते हुए देखकर यहांके गोरे भी आश्चर्य मुग्ध हो उठते थे। उस समय तो इस देशके गोरोंमें भी अंग्रेजीकी इतनी उच्च योग्यता रखनेवाले बहुत कम थे। भाईजीके शुभागमनसे हिन्दू जातिने नये प्रकाशके दर्शन किये। अब वे इसे पानेके लिए लालायित रहने लगे। आज भी यहांकी हिन्दू जनता आर्य संस्कृतिके इस प्रथम संदेशवाहकको बड़ी श्रद्धासे स्मरण करती है और सच्चे अर्थोंमें उन्हें देवतास्वरूप मानती है।

अध्याय दूसरा.

जागृतिके अग्रदूत स्वामी शंकरानन्दजी

शुभागमन भाई परमानन्दजी यहांसे चले तो गये परन्तु अपने पीछे धार्मिक प्यास छोड गये। उनके जानेपर यहांके आर्यजन किसी दूसरे प्रचारकको बुलानेके लिए प्रयत्न करने लगे। सौभाग्यने उन्हें इसमें सफलता मिली। स्वामी शंकरानंदजी यहां आनेके लिए तैयार हुए। वे उन दिनों इंग्लैंडमें प्रचार कार्य कर रहे थे।

चार अक्तूबर १६०८के दिन दरबन बन्दरगाहपर भारतीयोंकी अपार भीड लगी हुई थी। उन सबकी आँखें जहाजकी ओर बडी श्रद्धा और उत्सुकतासे टकटकी लगाये हुए थीं। प्रथमबार हिन्दुओंका धर्मगुरु दक्षिण आफ्रिकाके तटपर उतर रहा था। ठीक एक बजे भगवे कपडोंमें सज्ज एक भव्य मूर्तिने इस प्रदेशके तटपर पदार्पण किया। हाथमें दण्ड धारण किये हुए, तेजस्वी मुद्रावाले, प्रशस्त ललाटवाले, दीर्घकाय भव्य सन्यासी को देखकर जनता जय जयकार कर उठी। मानों उसी क्षणसे इस प्रदेशमें चैतन्यकी लहर फैलने लगी। यह भव्य सन्यासी जागृतिके अग्रदूत स्वामी शंकरानन्दजी महाराज थे।

कार्यका प्रारम्भ स्वामीजीका कार्य स्वागत समारोहोंसे चालू हो गया। सबसे पहले ८ अक्तूबर को नाताल इन्डियन कोंग्रेसके होलमें आपका सार्वजनिक स्वागत हुआ। इसके बाद कई स्वागत सभाओंमें स्वामी जीके व्याख्यान होने लगे। स्वामीजीकी अमृतमयी वाणी सुननेके लिए जनता उत्सुक रहने लगी। दरबन शहरमें तथा आसपास कई जगहोंपर आप

भाषणोंकी व्यवस्था की गई। स्वामीजीने इन सभाओंमें संस्कृति, धर्म, भारतीय सभ्यता, ईश्वर-विश्वास, यज्ञकी महत्ता, मातृभाषा आदि विषयोंपर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये।

स्वामीजीके इन व्याख्यानोंका प्रभाव भी खूब पड़ने लगा। रूढ़िवाद और अन्धविश्वासोंसे युक्त हिन्दू धर्मके स्वरूपके कारण स्वयं हिन्दू नवयुवक अपने धर्मको हीन समझने लग गये थे। वे ईसाइयत और मुस्लिम धर्मकी शरण ले रहे थे। स्वामीजीके भाषणोंने ऐसे नवयुवकों की आंखें खोल दीं। अब हिन्दुओंको अपने धर्म और अपनी जातिपर गौरव होने लगा।

श्री शंकरानंदजी यहांके हिन्दुओंकी स्थिति देखकर बड़े दुःखी हुए। आपने हिन्दू जातिको जागृत करनेका संकल्प कर लिया। जातिके इस वैद्यने उसकी नाड़ीको पकड़कर रोगको ठीक तरहसे परख लिया था। इसका इलाज करनेके लिए उन्होंने व्याख्यानों और उपदेशोंका, त्यौहारों और संस्कारोंके प्रचलनका, तथा मातृभाषाकी शिक्षाका विविध कार्यक्रम रचा और निःसंदेह जातिका यह वैद्य अपने निदान और चिकित्सामें सफलता पाने लगा।

उत्सव और संस्कार: दीपावली यहांपर ५० वर्षोंसे हिन्दू रहते थे। इस बीच वे अपने त्यौहारों और संस्कारोंको सर्वथा भूल चुके थे। जो कुछ बचा था वह स्वयं उन्हें लज्जित करनेवाला था। हिन्दुओं का सर्वप्रधान त्यौहार मुहर्रम बन गया था। ताजिया बनाकर और मर्सिया गा गाकर वे फूले न समाते थे। श्री शंकरानंदजीका इस पतनकी ओर शीघ्र ही ध्यान गया और उन्होंने इसके विरुद्ध हिन्दुओंको दीपावलीका त्यौहार मनाने का आदेश दिया। तदनुसार अक्तूबर १९०८की दीपावलीका उत्सव बड़ी धूमधामसे मनाया गया। तबसे दीपावली यहांका सर्वप्रधान त्यौहार बन गया है।

दीपावलीके इस प्रकारके प्रचारका यह प्रभाव हुआ कि अब तक रेल्वे और म्युनिसीपालिटीमें हिन्दू कर्मचारियोंको मुहर्रमपर छुट्टी मिलती थी उस के बदले अब दीपावलीकी सार्वजनिक छुट्टी होने लगी। दीपावलीके अतिरिक्त

रामनवमी और जन्माष्टमीके पर्व भी मनाये जाने लगे। त्यौहारोंके साथ ही उन्होंने जगह २ यज्ञ करवाये और संस्कारोंकी महत्ता समझाकर वैदिक संस्कारोंका प्रचलन शुरु किया।

रामरथ ताजिये परस्तीसे सर्वथा मुक्ति दिलानेके लिए श्री शंकरानंदजीने हिंदू मानसको परखकर रामरथ निकालनेकी योजना तैयार की। इसके लिए १९१०में 'दरबन रथ कमेटी' का निर्माण हुआ। उसकी तरफसे रामनवमीके शुभ पर्वपर बड़े समारोह पूर्वक रामरथ निकालनेकी तैयारी होने लगी। हिंदुओंमें उस अवसरपर अपूर्व उत्साह उमड आया। पहली बार हजारों हिंदुओंने मिलकर अपना धार्मिक जुलूस निकाला। रामरथकी यह सवारी दरबनकी ग्रे स्ट्रीटमेंसे होकर जानेवाली थी। यहां मुसलमानोंकी बड़ी मस्जिद स्थित है। इससे मुसलमानोंमें भी जोश उमड आया। वे इस रामरथको रोकनेके लिए दंगा करनेको भी उतारु हो गये। ता. १८ अप्रैलको बड़ी धूमधामसे बाजे गाजेके साथ सवारी निकली। निर्भीक संयासी शंकरानंदके हाथ में उसका नेतृत्व था। सबसे आगे वे चल रहे थे। ग्रे स्ट्रीटपर जब रथ पहुंचा तो किसीकी शरारत करनेकी हिम्मत नहीं हुई। पुलिसने दंगेकी संभावनासे रथको रोकना चाहा पर श्री शंकरानंदजीका ऐसा प्रभाव था कि पुलिसके कर्मचारी नागरिकताके इस सर्वमान्य हकसे इन्कार न कर सके। रामरथ शांतिपूर्वक निकल गया और तबसे मस्जिदके सामने बाजा बजानेका सवाल भी सदाके लिए इस देशमें हल हो गया।

प्रचारकी धूम अबतो सारे नाताल प्रांतमें श्री शंकरानंदजीने प्रचारकी धूम मचा दी। जगह २ पर उनके व्याख्यान होने लगे। वे प्रखर वक्ता थे। उनकी वाणी मेघके समान गंभीर और बलवती थी। उनकी भाषा भी बडी ओजस्वी होती थी। इससे श्रोतागण उनके व्याख्यानोंसे बहुत प्रभावित होते थे। आपने दरबनकी हिंदू सुधार सभा, अमगेनीकी हिंदू प्रोग्रेसिव सोसायटी तथा स्टेंगर, इस्पींगो आदि स्थानोंकी कई सभाओंमें व्याख्यान दिये। वेलफोर्टमें आपने यज्ञ करवाया। प्रांतके अन्य नगर मेरि-

त्सबर्ग, लेडीस्मिथ, न्यूकासिल आदिमें भी व्याख्यान होने लगे। वे अंग्रेजी के भी प्रभावशाली वक्ता थे, इससे आपके व्याख्यानोंमें गोरे लोग भी अच्छी संख्यामें हाज़िर होते थे। और उच्च कोटिके धार्मिक व्याख्यान सुनकर अपना अहोभाग्य समझते थे। थियोसोफीकल सोसायटीमें आपने 'मानव आत्मा' पर जो आध्यात्मिक व्याख्यान दिया उसे सुनकर उस सभाके अध्यक्ष श्री हरबर्ट प्राइज़ने कहा कि उन्होंने अपने जीवनमें तत्वज्ञानपर ऐसा महत्त्वपूर्ण व्याख्यान पहली बार सुना है।

वेद धर्म सभा स्वामी शंकरानंदजीने प्रचारकार्यको दृढ करनेके लिए जगह २ संस्थाएँ खोलना प्रारम्भ किया। ये संस्थाएँ वेद धर्म सभाके नामसे मशहूर हुई। इन सभाओंके उद्देश्य तथा नियमादि आर्य समाजके सिद्धान्तोंके अनुकूल ही थे। स्वामीजीने पहली वेद धर्म सभा दरबन में प्रिन्स स्ट्रीटमें स्थापित की। इसके बाद क्लेरे स्टेटमें भी एक सभा कायम की। इसी तरह आपने सिडनममें हिन्दू यंग मेन्स सोसायटी एवं दरबनमें यंग मेन्स वैदिक सोसायटी खोली। इनमें प्रायः तामिल भाषी लोगों ने साथ दिया। इनमें मुख्यरूपसे त्यौहारोंके मनानेका, मातृभाषाकी पढ़ाईका तथा धार्मिक प्रवचनका कार्य होने लगा।

स्वामीजी जब नाताल प्रांतकी राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग गये तो वहां भी खूब जोरोंसे प्रचार प्रारम्भ हुआ। कई प्रभावशाली व्याख्यान हुए। यहांपर १० अप्रैल १९०९ को उनके करकमलोंसे वेद धर्म सभाकी नींव पडी। उनके द्वारा संस्थापित संस्थाओंमें यह मुख्य है। प्रायः अन्य सब संस्थाएँ मृत हो चुकी हैं परन्तु मेरित्सबर्गकी यह सभा आज भी बडे उत्साह से कार्य कर रही है। (इस संस्थाकी कार्य प्रवृत्ति अध्याय १२ में देखिये)

स्वदेश गमन और पुनरागमन स्वामीजी जब इस प्रकार अपने प्रचार कार्य द्वारा यहांकी हिन्दू जनतामें नवजीवन ला रहे थे तब उन को खबर मिली कि उनके गुरु श्री आत्मानंदजी महाराज बहुत बीमार हैं। इस लिए उन्होंने गुरुजीके दर्शनके लिए भारत जानेका निश्चय किया। स्वदेश गमनके इस अवसरपर अनेक संस्थाओंने उन्हें अभिनन्दन पत्र दिये और

यात्राके लिए शुभ कामना की। सरकारके मुख्य सेक्रेटरी श्री बर्डने भी इस अवसरपर पत्र लिखा कि 'मेरी आपके चरणोंमें प्रणाम करनेकी इच्छा थी पर वह पूर्ण न हो सकी'। इस तरह मंगल कामनाओंके साथ स्वामीजी १९११ के प्रारम्भमें भारत गये और वहाँ अपने गुरुजीके स्वास्थ्यके सुधरनेपर वर्षके अन्तमें पुनः दक्षिण आफ्रिका आ पहुंचे। इस बार भी आपका पहलेकी तरह ही खूब जोरोंसे स्वागत हुआ।

दक्षिण आफ्रिका हिन्दू महासभाकी स्थापना

स्वामीजी इस बार जब भारतसे लौटे तो उनका ध्यान यहांके समस्त हिंदुओंके संगठनकी ओर गया। इसके लिए दरबनमें ३१ मई १९१२ को 'साउथ आफ्रिकन हिन्दू कोन्फ्रेंस' बुलाई गई। ऐसी परिषद् यहाँके हिन्दुओंके लिए पहली बार हो रही थी। सारे दक्षिण आफ्रिकासे इसमें करीब ३०० प्रतिनिधि इकठ्ठे हुए। सहस्रों दर्शकोंकी उपस्थिति हुई। स्वामीजी इस परिषदके प्रधान थे। स्वागताध्यक्ष श्री आर. बी. चेटी एवं मंत्री श्री एस. आर. पत्तर थे। इस परिषद्में उन्होंने हिन्दुओंको जाग्रत करनेवाला ऐतिहासिक व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए। जिनमें सबसे मुख्य हिन्दू महासभाकी स्थापनाका था। भारतकी हिंदू महासभासे भी तीन साल पहले यहां इस संस्था की स्थापना हुई। इसके प्रधान श्री सी. वी. पिल्ले, मंत्री श्री एस. आर. पत्तर तथा कोषाध्यक्ष श्री टी. वी. पत्तर चुने गये। दूसरे वर्ष भी इसी तरह महासभाका अधिवेशन हुआ। परन्तु स्वामीजीने जिस महान् उद्देश्यको लेकर इस महासभाकी स्थापना की थी उसे इसके संचालक पूर्ण न कर सके। उनके स्वदेशगमनके पीछे यह महासभा निष्क्रिय और मृत प्रायः बनी रही।

ट्रांसवाल और केप प्रांतमें प्रचार नाताल प्रांतमें प्रचार करके स्वामी शंकरानंदजी ट्रांसवालमें गये। वहांके मुख्य शहर जोहानिसबर्गमें उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। शहरके मेयर श्री जी. डी. एलिस खुद इस स्वागतसभाके प्रधान थे। इस शहरके मेसोनिक होलमें उनके १५-२० व्याख्यान अंग्रेजीमें हुए। ये व्याख्यान इतने प्रभावशाली थे कि उन्हें सुननेके

लिए गोरे श्रोताओंकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती गई। उनके व्याख्यानों से वैदिक धर्मकी श्रेष्ठताका गोरोंमें ऐसा सिक्का बैठ गया कि पादरी उनसे जलने लगे। वहांके गोरे पत्रोंने उनकी भूरी २ प्रशंसा की। ट्रांसवाल प्रांतमें घूम घूमकर उन्होंने प्रिटोरिया, जर्मिस्टन, बोक्सबर्ग बेनोनी, रुडीपोर्ट, क्रूगर्स-ड्रोप आदि जगहोंपर व्याख्यान दिये। जब वे ट्रांसवालसे जाने लगे तो उन्हें यूरोपियनों और भारतीयोंकी ओरसे प्रीतिभोज दिया गया। जिसमें यूरोपियन महिलाओंने भी भारतीयोंके साथ बैठकर प्रीतिपूर्वक भोजन किया था।

स्वदेश गमन ट्रांसवालसे स्वामीजी केप प्रांतके पोर्ट एलिजाबेथ, यूटेनहेग और केपटाउनमें प्रचार करने गए। इन जगहोंपर प्रचारका गहरा प्रभाव हुआ। केपटाउनसे लौटकर वे दरबन आये, यहांसे यकायक १७ मई १९१३ को स्वदेशके लिए रवाना हो गये। ऋणानुरागी हिंदू जनता आपको विदाइमान भी न देने पायी।

महात्मा गांधीजी और स्वामी शंकरानंदजी स्वामी शंकरानंदजी जब दक्षिण आफ्रिकामें धर्म प्रचार करने आये थे, उससे कई वर्ष पहले ही सन् १८९३में महात्मा गांधीजी (तबके बेरिस्टर मोहनदास कर्मचंद गांधी) इस देशमें पहुंच चुके थे। गांधीजीके जीवनका यह परीक्षणात्मक काल था। अभी उनका निर्माण हो रहा था इसलिए हम देखते हैं कि गांधीजी सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टिसे यहांके हिन्दुओंमें विशेष उत्थान नहीं कर सके। धर्मके सम्बंधमें तो वे अभी खोज और अध्ययनके मार्गपर ही थे। स्वामी शंकरानंदजीकी प्रेरणासे ही उनको आर्यसमाज और महर्षि दयानंदका परिचय हुआ था। इस समय तक गांधीजीका अक्तूबर १९१३ का प्रसिद्ध सत्याग्रह भी शुरु नहीं हुआ था। यह कहा जा सकता है कि स्वामीजीके व्यापक प्रचारने हिंदू जातिमें जो आत्म गौरव जाग्रत कर दिया था और उन को जो नयी चेतना मिल रही थी, उसने प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूपसे भी गांधीजीके कार्यमें मदद पहुंचायी थी। सत्याग्रह संग्रामका व्यापक रूपसे सूत्र-पात करनेवालोंमेंसे एक श्री स्वामी भवानी दयालजी तथा उनकी पत्नी श्री जगरानी देवी तो स्पष्टरूपसे ही ऋषि दयानंद और आर्यसमाजसे आत्मगौरव

और राष्ट्रीयता का पाठ पढ चुके थे। दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंमें राजनीतिक जागृति और राष्ट्रीयताका भाव भरनेका श्रेय जहां महात्मा गांधीजी को है, वहां उनमें सांस्कृतिक और जातीयताका अभिमान पैदा करनेके श्रेय भागी स्वामी शंकरानंदजी महाराज थे।

महात्मा गांधीजी और स्वामी शंकरानंदजीमें सबसे बडा मतभेद हिन्दू-मुस्लिम समस्यापर था। महात्माजीकी उदारता तो जगप्रसिद्ध है। मुसलमानोंको नाराज न करने की उनकी नीति व्यवहारिक धर्मसे ऊपर उठकर आध्यात्मिक तत्व तक पहुंच जाती थी। उनको इस नीतिसे कई कटु फल भी भोगने पडे थे।

स्वामी शंकरानंदजीका मुसलमानोंसे कोई विरोध न था। वे तो हिंदुओं को जाग्रत करना चाहते थे। हिन्दुओंमें न तो जातीय गौरव था न संगठन। वे इसे पैदा करना चाहते थे। यदि वे निर्भीकतासे इस ओर न बढते थे, हिंदू जातिका अपने रूपमें जीवित रहना अशक्य था। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि मुसलमान उनसे जलने लगे; जैसा कि उनके बारेमें सर्वत्र देखा गया है। उनकी इस नाराज़गीकी परवाह न करके उनको अपना कार्य करना ही था। मुसलमानोंके विरुद्ध हिन्दुओंको उभाड़नेका दोष उनपर कोई नहीं लगा सकता।

स्वामीजीके प्रचारका प्रभाव स्वामी शंकरानंदजीके प्रचारने ५० सालसे सोयी हुई हिंदू जातिमें संजीवनी बूटीका काम किया। उनके कार्य पर स्वामी भवानी दयालजी सन्यासी लिखते हैं, "यद्यपि मैंने (द. आफ्रिकामें) श्री शंकरानंदजीको नहीं देखा तो भी नाताल पहुंचते ही उनके प्रचारका फल देख लिया। जो हिंदू लावारिस मालकी तरह इधर उधर भटक रहे थे, उनमें वैदिक धर्म पर भक्ति, आर्यसंस्कृतिपर श्रद्धा, सन्ध्या हवनमें अनुराग, त्यौहारोंपर अभिमान, परस्पर नमस्तेका व्यवहार, मातृभाषाकी ओर रुचि, सभा-समितियोंके संचालनका ज्ञान, कुरुढियोंसे घृणा, स्वदेशके प्रति सन्मान और आर्य जातिके उज्वल भविष्यमें विश्वास उत्पन्न कर देना किसी साधारण व्यक्तिका काम नहीं हो सकता।" १.

---

१. स्वामी शंकरानंद संदर्शन पृष्ठ १६

स्वामीजीके प्रचारका प्रभाव यूरोपियन जातियोंपर भी खूब हुआ। आजतक उन्होंने भारतीय लोगोंको कुली–मजदूरके रूपमें ही देखा था, पर स्वामीजीके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानोंने उनकी विचारधारामें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया था। कई यूरोपियन तो उनके भक्त बन गये थे। तत्कालीन नाताल प्रांतके गवर्नर सर मेथ्यु नेथन तो उनपर मुग्ध थे। वे भारतीयोंके सम्बन्धमें प्रायः स्वामीजीकी सलाहसे काम किया करते थे। स्वामीजीके प्रचारका यह भी फल हुआ कि बहुतसे हिन्दू नवयुवक जो ईसाई और मुसलमान होते जाते थे, रुक गये। उन्हें अपने धर्मके प्रति श्रद्धा पैदा हो गयी। इस कारणसे और वैदिक धर्मकी श्रेष्ठता प्रमाणित होनेसे कई पादरी स्वामीजीसे जलने लगे थे। स्वामीजीके व्याख्यानोंसे प्रभावित होकर प्रसिद्ध विद्वान विलियम होसकेनने यह मंजूर किया कि, "यह तो सिद्ध हो चुका है कि पूर्व ही धर्म, दर्शन और आध्यात्मिक ज्ञानका भंडार है। और आज उसी पूर्वीय देशके साधु (स्वामी शंकरानंदजी) के दर्शनोंसे हम लोग कृत कृत्य हैं।" १ इसी तरह जोहानिसबर्गके प्रीतिभोजके अवसरपर उस उत्सवके अध्यक्ष श्री वेबर्गने कहा, "स्वामिन्, आपको मैं विश्वास दिलाता हूं कि इधर बीस वर्षके अन्दर किसी भी वक्ता और दार्शनिकका ऐसा शानदार स्वागत नहीं हुआ, जैसा इस नगरमें आपका हुआ है।" २ 'संडे पोस्ट' पत्रने लिखा था,– "पश्चिमके किसी भी दार्शनिक विद्वानसे वे पंचगुणा विद्वान हैं।" ३

स्वामीजीकी सफलता मुख्यतया उनके व्यक्तित्वपर आश्रित थी। उनके दर्शनसे ही सामनेवालोंपर उनके व्यक्तित्वका सिक्का जम जाता था। वे उच्च कोटिके विद्वान थे। उनके ओजसे भरे हुए व्याख्यान शक्ति उत्पन्न करनेवाले थे। उनका वार्तालाप और व्यवहार आकर्षक और मधुर था। उनकी वाणी सचमुच अमृत वर्षिणी थी। निर्भयता तो स्वामीजीका अपना गुण था। दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंके उत्थानके प्रारम्भकालमें उनके जैसा नीडर और तेजस्वी नेता मिल जाना हिन्दुओंके परम सौभाग्यका चिह्न था।

स्वामी शंकरानंदजीने यहांके हिन्दुओंको जाग्रतकर एकताके सूत्रमें बांधा। इसके लिए हिन्दू महासभाकी स्थापना की। उनकी स्मृतिमें हिन्दू महासभाने 'श्री स्वामी शंकरानंद स्मारक भवन' के नामसे बड़ा भवन बनानेका निश्चय किया है। सचमुच वे यहांके भारतीयोंकी जागृतिके अग्रदूत थे।

१, २, ३: स्वामी शंकरानंद संदर्शन पृष्ठ ३५०, ३६३, ३५३ (क्रमशः)

अध्याय तीसरा.

श्री स्वामी भवानी दयालजी
तथा
प्रारंभके दूसरे प्रचारक

स्वामी भवानी दयालजी सन्यासी

स्वामी शंकरानंदजीके भारत गमनके बाद दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयोंको एक ऐसा और व्यक्ति मिल गया जिसने यहाँपर आर्यज्योतिका प्रकाश फैलाना चालू रखा। यह व्यक्ति पं. भवानी दयालजी थे। जो बादमें स्वामी भवानी दयाल सन्यासीके नामसे मशहूर हुए। पं. भवानी दयालजीका जीवन-कार्य विविध क्षेत्रोंमें व्याप्त रहा है। सबसे बडी खूबी तो यह है कि वे प्रथम प्रवासी भारतीय हैं जो अपनी साधनासे इतने ऊंचे उठ सके हैं। उनका जीवन स्वनिर्माणकी एक कहानी है।

बचपन भवानी दयालजी बालकपनसे ही मुसीबतोंके शिकार हो गये थे। बचपनमें जब वे अपने पिताके साथ भारत गये तो उन्होंने प्रथमबार उस ऋषि भूमिके दर्शन किये थे। बिरादरीवालोंके दबावमें आकर १२ वर्ष की उम्रमें ही पिताजीने उन्हें त्याग दिया। तब १२ वर्षका बालक भवानी दयाल संकटोंका सामना करता हुआ अपने जीवनपथपर आगे बढ़ने लगा। मुसीबतोंने उसके जीवनको चमका दिया। धीमे धीमे वह बालक साहसी, नीडर और नेतृत्व करनेवाला युवक बन गया। इस समय भवानी दयालजीने तीन बातें पायीं; जिनके आधारपर उनके जीवनका निर्माण हुआ (१) आर्य समाजका संदेश, (२) हिन्दीकी शिक्षा, (३) राष्ट्रीय भावना।

स्वामी भवानी दयालजी सन्यासी

कार्यकाल सन, १९१३ से १९४१

पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार

शुभागमन सन १९२१

पं. प्रशोया सिंहजी

डॉ. भगतराम सहगल
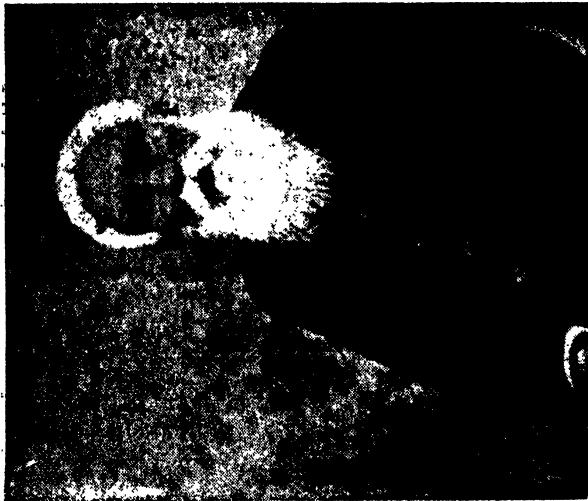
दक्षिण आफ्रिकामें पं. भवानी दयालजी १२ वर्षकी अवस्थामें भारत पहुंचे थे। वहांसे २२ दिसम्बर १९१२ को नाताल लौटे। अब यह २० वर्षका नवयुवक पूरी तरहसे बदल चुका था। उसमें उत्साह और उमंगें थीं। दक्षिण आफ्रिकामें पहुंचकर भवानी दयालजी महात्मा गांधीजीके संसर्गमें आये और सत्याग्रह संग्राममें दाखिल हो गये। उनकी पत्नी जगरानी देवीने भी इसमें सहयोग दिया। इस दम्पतीने १० अक्तूबर १९१३ के दिन गांधीजीके प्रसिद्ध सत्याग्रहका विशद रूपमें सूत्रपात किया। ये दोनों कारावासमें बंदी हो गये।

हिन्दीके उद्धारक सत्याग्रहसे छुट्टी पाकर भवानी दयालजी ने सार्वजनिक कार्य प्रारम्भ किया। वे नाताल और ट्रांसवालमें घूम घूमकर धर्म प्रचार करने लगे। इस प्रचारके साथ २ वे मातृभाषा हिन्दीके प्रचारका कार्य भी जोरोंसे करने लगे। दक्षिण आफ्रिकामें अबतक पं. भवानी दयाल जीसे बढ़कर किसीने हिन्दीकी सेवा नहीं की है। उन्होंने स्थान २ पर मातृ-भाषाकी शिक्षाके लिए व्याख्यान दिये तथा हिन्दी प्रचारिणी सभाएँ एवं पाठशालाएँ स्थापित करना शुरु कर दिया। उन्होंने वेरुलम, चार्ल्सटाउन, न्यूकासिल, ग्लेंको, लेडीस्मिथ, दरबन आदि शहरोंमें हिन्दी प्रचार किया तथा हिन्दी पाठशालाएँ चालू कीं।

पंडितजीने क्लेरेस्टेटमें एक हिन्दी आश्रमकी स्थापना की। इस आश्रम में हिन्दी पाठशाला और पुस्तकालय खोला गया। इस व्यापक प्रचार कार्य के बाद उन्होंने सन् १९१६में लेडीस्मिथमें सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। (विवरण देखिये अध्याय ८)। इसके बाद पंडितजी आर. जी. भल्लाके पत्र 'धर्मवीर' का सम्पादन बडी योग्यतापूर्वक करने लगे। पंडितजीका हिन्दी प्रचारमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य 'हिन्दी' साप्ताहिक का प्रकाशन था। इन सब कार्योंसे दक्षिण आफ्रिकामें वे हिन्दीके उद्धारक कहलाये।

पं. भवानी दयालजी इस समयमें वैदिक धर्मके प्रचारके लिए भी निरंतर प्रयत्न करते रहे। उनकी हिन्दी प्रचारिणी सभाएँ आर्यसमाजके उद्देश्योंपर ही

चलती थीं। और वैदिक धर्मका प्रचार भी करती थीं। पंडितजीने वैदिक विवाह, उपनयन आदि संस्कारोंका भी क्रियात्मक प्रचार किया। अन्त्येष्टि संस्कार और शवोंको जलानेकी प्रथा चालू करनेके लिए भी इन्होंने बहुत श्रम लिया। १६१६में श्री जयनारायणजीकी सहायतासे दो जन्मजात मुसलमानों की शुद्धि भी करवायी। जिससे यहांकी मुस्लिम जनता पंडितजीपर बहुत रुष्ट हो गई थी।

पं. भवानी दयालजीके प्रचार कार्यका यह फल हुआ कि जब १६२५ में दक्षिण आफ्रिकामें ऋषि दयानंदकी जन्म शताब्दी मनानेका निश्चय हुआ तो शताब्दी महोत्सव समितिके सभापति पंडितजी चुने गये। पंडितजीने इस महोत्सवके लिए बहुत प्रयत्न किया। अपने साप्ताहिक 'हिन्दी' के द्वारा भी आन्दोलन करते रहे। पंडितजीके सदुद्योगसे जन्म शताब्दी बड़ी सफलतासे मनायी गयी। इस जन्म शताब्दीके शुभअवसरपर आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी स्थापना हुई। पं. भवानी दयालजी इसके प्रथम प्रधान निर्वाचित हुए। प्रतिनिधि सभाके संगठनके लिए पंडितजीने काफी परिश्रम किया।

सन्यासाश्रममें प्रवेश पं. भवानी दयालजी विविध कामों से दो तीन बार भारत गये। सन् १६२२ में उनकी पत्नी श्रीमती जगरानी देवीका स्वर्गवास हो गया। इससे उनपर पुनर्विवाहके लिए बारंबार दबाव होने लगा। इस जंजालसे छूटनेके लिए तथा सेवामें जीवन व्यतीत करनेके उद्देश्यसे भवानी दयालजीने भारतवर्षमें ता. १० अप्रैल १६२७ के दिन सन्यास आश्रममें प्रवेश किया। स्वामी भवानी दयालजी दक्षिण आफ्रिका में उत्पन्न प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने सन्यास ग्रहण किया है।

सन्यासी बनकर सन् १६२७ में वे आर्य सार्वदेशिक सभा, देहलीकी ओरसे प्रचारक बनकर यहां आये। इस समय प्रचारके लिए उन्होंने सारे दक्षिण आफ्रि का दौरा किया। तथा 'सार्वदेशिक' मासिकमें कई लेख लिखे। सन् १६३३ में स्वामी भवानी दयालजी पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित हुए। इस समय स्वामीजीने ईस्ट लंडन जाकर वैदिक

धर्मका प्रचार किया। वहां २० भाषण दिये, १५ यज्ञ तथा १२ शुद्धियां करवायीं। इसी तरह नोर्दन डिस्ट्रीक्टकी प्रचार यात्रामें २२ व्याख्यान, १३ यज्ञ और वैदिक कथाएँ करवायीं। उधर ३ मास तक प्रचार करते रहे।

पोर्चुगीज़ ईस्ट आफ्रिकामें प्रचार स्वामी भवानी दयाल जी अपने कार्योंसे दक्षिण आफ्रिका और भारतमें तो प्रसिद्धि पा ही चुके थे परन्तु दूसरे भारतीय उपनिवेशोंमें भी उनकी ख्याति फैल चुकी थी। दक्षिण आफ्रिकासे लगा हुआ पोर्चुगीज़ पूर्व आफ्रिका (मोज़ाम्बिक) देश है। वहां पर भी कई सहस्र भारतवासी जा बसे हैं। यहां सन् १९३२में आर्यसमाजके सिद्धान्तोंपर भारत समाजकी स्थापना हुई। इसके निमन्त्रणसे स्वामीजी हर साल एक मास यहां प्रचार कार्यके लिए जाने लगे। आपने वहांपर हबशी औरतोंसे पैदा हुई हिन्दुस्तानियोंकी सन्तानोंकी शुद्धिका कार्य शुरु किया। इससे पूर्व ऐसी सन्तान प्रायः ईसाई या मुसलमानोंके हाथोंमें चली जाती थीं। स्वामीजीके प्रयत्नोंसे भारत समाजने वेद मंदिरका निर्माण किया। सन् १९३७में स्वामीजीके करकमलोंसे ही इसकी नींव रखी गयी। आज वहां बडा अच्छा कार्य हो रहा है।

राजनीतिमें स्वामी भवानी दयालजीने आर्यसमाजके लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। पर दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंमें इनकी राजनीतिक सेवाएं भी किसीसे कम महत्व नहीं रखतीं। वे कई बार यहांकी कोंग्रेसके प्रतिनिधि बनकर भारत गये हैं। सन् १९३८में स्वामीजी नाताल इन्डियन कोंग्रेसके सभापति भी निर्वाचित हुए। कोंग्रेसके ४५ सालके इतिहासमें यह पहला अवसर था जब कोई हिन्दू उसका सभापति बना। स्वामी जीकी राजनीतिक सेवाओंका उल्लेख करना इस पुस्तकका उद्देश्य नहीं है। वैसे उनकी सेवाएं अवर्णनीय एवं अमूल्य हैं।

स्वामी मंगलानन्दजी पुरी सन् १९१३में स्वामी मंगलानन्द जी पुरी ट्रांसवालसे नातालमें आये। आर्य युवक सभाकी तरफसे वे नाताल में कार्य करते रहे। वे हिन्दीके अच्छे वक्ता थे। इससे हिन्दी भाषी भाइयों

के ऊपर स्वामीजीका अच्छा प्रभाव रहा। स्वामीजीके व्याख्यानोंने कई युवकोंको आकर्षित किया और वे आर्यसमाजी बने। इनको यहांका मौसम अनुकूल नहीं आया। इससे वे कुछ मासमें ही भारत लौट गये।

पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकारका शुभागमन

पं. ईश्वरदत्तजी प्रचारके लिए पूर्व आफ्रिका आये हुए थे। वहांसे निमंत्रित होकर वे ट्रांसवाल प्रांतमें आये। वहांसे आर्य युवक सभाने पंडित जीको नाताल आनेके लिए निमंत्रित किया। पं. ईश्वरदत्तजी गुरुकुल कांगडी के प्रथम स्नातक थे जिनका यहांपर शुभागमन हुआ। ता. २२ अक्तूबर १९२१ को वे यहां पधारे। आर्य युवक सभाने पंडितजीका शानदार स्वागत किया।

पंडितजीका प्रचार कार्य विद्वत्तापूर्ण और रोचक व्याख्यानोंसे चालू हो गया। आपके भाषण इतने प्रभावशाली होते थे कि श्रोता लोग मंत्रमुग्ध होकर तीन २ घंटे तक लगातार बैठकर पंडितजीकी वाग्धाराका पान किया करते थे। ये व्याख्यान साम्प्रदायिक विद्वेषसे रहित थे। इनको सुननेके लिए हिन्दू, मुसलमान, पारसी सब इकट्ठे हो जाते थे। पंडितजीके व्याख्यानके प्रभावका एक उदाहरण यह था कि जब वे पूर्व आफ्रिकामें प्रचार कर रहे थे तब लाला साईंदासजी अपनी २५०) रु. मासिककी नौकरी छोडकर पंडितजी के शिष्य बनकर उनके साथ ही घूमने लगे। यह बडे खेदकी बात हुई कि जब साईंदासजी पंडितजीके साथ अमेरिका गये हुए थे तो उनका वहां अकाल अवसान हो गया।

पं. ईश्वरदत्तजीने व्याख्यानोंके साथ शुद्ध स्वरूपमें यज्ञ और संस्कार करना भी सिखाया। उन्होंने प्रतिदिन रामायणकी कथा करना भी शुरु किया। यह कथा बडी रोचक होती थी। उसे सुनने को सैंकडों लोग रोज इकट्ठे होते थे। इस रामायण कथाका नैतिक प्रभाव भी अच्छा हुआ।

पं. ईश्वरदत्तजी धनुर्विद्यामें भी कुशल थे। वे सर्वप्रथम थे जिन्होंने धनुर्विद्याके खेल इस देशमें बडी कुशलतापूर्वक कर दिखाये। उन खेलोंको

देखकर लोग दंग रह जाते थे। प्राणायाम और योग साधनाके प्रयोग भी पंडितजीने कर दिखाये। उनका शरीर दुबला पतला था फिर भी वे प्राणायाम के बलपर मनों बोझवाला पत्थर छातीपर रखवाकर तुडवाते थे। वे चलती मोटरको भी रोक लेते थे। जो खेल राममूर्ति कर दिखाते थे वे खेल पंडितजी भी बडी आसानीसे कर लेते थे। इस तरह अपने कार्योंका सिक्का जमाकर पंडितजी १६ दिसम्बर १६२१ को इंग्लैंडके लिए प्रस्थान कर गये।

संगीत प्रवीण पं. प्रवीण सिंहजी

पं. प्रवीण सिंहजी भी पूर्व आफ्रिकामें प्रचारके लिए आये हुए थे। श्री जी. बी. रघुवीर के प्रयत्नोंसे २३ फरवरी १६२२ में वे दक्षिण आफ्रिका भी आये। यहां उनका अच्छा स्वागत हुआ। वे संगीतमें निपुण थे इसमें उन्हें आम लोगोंमें प्रचार करनेका अच्छा मौका मिला। वे वृद्ध थे फिर भी उत्साहसे प्रचार करते रहे। पंडितजीके भजनों और उपदेशोंको जनता बडी रुचिसे सुनती थी। ५–६ मास रहकर वे स्वदेश चले गये।

सन् १६२७ में ओवरपोर्ट की 'श्री रामायण सभा' ने पं. प्रवीण सिंह जीको अपनी हिन्दी पाठशालाके अध्यापकके रूपमें फिरसे यहांपर बुलाया। वे दो साल तक हिन्दी पढ़ाते रहे। साथ २ प्रचार कार्य भी चालू रहा। पंडित जीने संस्कृत पढ़ानेके लिए एक रात्री पाठशाला भी खोली। इन्होंने कन्याओं को भी हिन्दीकी शिक्षा दी। दरबनके सूरत हिन्दू एसोसियेशनमें भी वे कुछ कालतक अध्यापन कार्य करते रहे। डॉ. भगतराम सहगल जब यहांपर आये तो उनके साथ मिलकर भी प्रवीण सिंहजी अच्छा प्रचार कार्य करते रहे। आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभाकी तरफसे भी कुछ मास तक अवैतनिक प्रचार कार्य किया। फिर वे स्वदेश लौट गये।

पं. कर्मचन्दजी खदियाना डी. ए. वी. स्कूलके लिए चंदा करनेके लिए पं. कर्मचन्दजी पूर्व आफ्रिकामें पहुंचे थे। वहांसे वे १–६–२७ के दिन दक्षिण आफ्रिकामें भी आये। यहांपर प्रचारके साथ उन्होंने चंदा भी इकट्ठा किया। ३ मासके पश्चात् स्वदेश वापिस गये। विदायके समय वे

कह गये कि जिस प्रदेशमें एक भी आर्य मंदिर नहीं है, न कोई आर्य विद्यालय या गुरुकुल है वहांसे स्वदेशके लिए चंदा इकट्ठा नहीं किया जाना चाहिये और उस जगह का द्रव्य वहींके प्रचार कार्यमें व्यय होना चाहिए। यह एक सच्चा अनुभव था।

आर्यसमाजोंके संस्थापक डॉ० भगतराम सहगल

अन्य प्रचारकों की तरह डॉ. भगतराम सहगल भी पूर्व आफ्रिकामें प्रचारार्थ आये हुए थे। तबतक दक्षिण आफ्रिकामें आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी स्थापना हो चुकी थी। सभाको ज्ञात हुआ कि निमंत्रण मिलने पर डॉक्टर भगतरामजी दक्षिण आफ्रिका भी आनेको तैयार हैं। इससे प्रतिनिधि सभाने डॉक्टरजीको यहां बुलानेका प्रबंध किया और वे सपत्नीक ता. ३ फरवरी १६२६ को यहां पधारे।

आर्यसमाजोंकी स्थापना यहां पहुंचतेही डॉ भगतरामजी ने नाताल भ्रमणका कार्यक्रम बना लिया। वे शहर २ जाकर प्रचार करने लगे। डोक्टरजीके आनेसे पूर्व यहां आर्यसमाजका प्रचार हो चुका था। कई संस्थाएँ भी बन गयी थीं। पर बहुतसी आर्यसमाजके नामसे नहीं बनी थीं। डोक्टरजी जहां २ जाते, आर्योंको संगठनका महत्व समझाते। तथा उन्हें 'आर्यसमाज' स्थापित करनेकी प्रेरणा देते। इसके फल स्वरूप डोक्टर भगतरामजीने मेरित्सबर्ग, न्यूकासिल, सदरलेंड, पोर्ट शेप्सटन, स्टेंगर तथा पेंट्रीच आदिमें नये आर्य समाजोंकी स्थापना की। इसी तरह उन्होंने केटो मेनरकी "सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासु सभा" एवं प्लेसिसलेयरकी "नागरी हितैषिणी सभा" को आर्यसमाजके रूपमें परिवर्तित कर दिया। इस तरह डोक्टरजीने दक्षिण आफ्रिकामें जितने आर्यसमाज स्थापित किये उतने और किसीने नहीं किये परंतु जिस बडे परिमाणपर उन्होंने यह प्रचार कार्य शुरु किया था वह सुचारु रूपसे नहीं चल सका। वे यहां छः मासही रह सके। इस कालमें उन्होंने संस्थाएँ तो कई स्थापित कर दीं परंतु उनके यहांसे जानेपर वे या बंद हो गयीं, या मृत प्रायः अवस्थामें रहीं। डोक्टरजी जहां जाते, शुद्धि, संस्कार तथा यज्ञ भी करवाते।

स्त्री समाजकी स्थापना डॉ. भगतरामजी पहले प्रचारक थे जो परिवार सहित यहां आये थे। उनकी धर्मपत्नी भी विदुषी थीं। इस कारण स्त्रियोंमें वैदिक धर्मके प्रचारका अच्छा मौका मिला। डॉक्टरजी श्री एम. मुन्नूके घरपर रहते थे। यह परिवार सुसंस्कृत था। श्री मुन्नूकी पत्नी, पुत्र तथा पुत्रवधू डॉक्टरजीकी धर्मपत्नीके सहयोगमें कार्य करने लगीं। इस तरह ता. २५ मई १६२६ को दक्षिण आफ्रिकामें प्रथम स्त्री आर्य समाजकी स्थापना हुई।

संघर्ष डॉ. भगतरामजीने आर्यसमाजकी नींवको दृढ करना शुरु किया और इसीलिए जगह २ आर्यसमाजोंकी स्थापना की थी। जब वे यहां प्रचार कार्य कर रहे थे तब मोरिशससे सनातन धर्मका प्रचार करते हुए पं. रामगोविंद त्रिवेदी भी इस देशमें आ पहुंचे। आर्य प्रतिनिधि सभाने उनका सर्वप्रथम स्वागत किया। तथा कई बार अपने यहां निमंत्रित भी किया। इस देशमें सहयोगसे भारतीय संस्कृतिके प्रचारकी महत्ता को वे समझ न सके। वे सहयोगके लिए तत्पर नहीं हुए। उन्हें सनातन धर्म महामंडल बनानेकी चिन्ता थी। इस तरह दो प्रकारके प्रचारसे जनता दुविधामें पड़ गयी। कई प्रसंगपर जोश भी फैल जाता था। आखिर समय पूरा होनेपर त्रिवेदीजी स्वदेश लौट गये। डॉ. भगतरामजी भी यहांसे ७ जुलाई को इंग्लैंडके लिए रवाना हो गये। आर्य प्रतिनिधि सभाने बडे सन्मानसे डॉक्टरजी को विदाय दी।
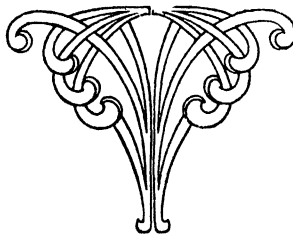
अध्याय चौथा.
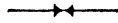
ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी
— तथा —
आर्य प्रतिनिधि सभाकी स्थापना

सन् १९२५ फरवरीमें भारतवर्षमें महर्षि दयानंदकी जन्म शताब्दीका महोत्सव मथुरामें मनाया गया। उसके साथ ही विदेशोंमें भी इस महोत्सव के लिए योजनाएँ होने लगीं। दक्षिण आफ्रिकामें भी इस शुभ अवसरको बडे समारोहसे मनानेका निर्णय हुआ।

दरबनकी आर्य युवक सभाके प्रधान श्रीमान् सत्यदेवजीने इसके लिए सर्वप्रथम आवाज़ उठायी। इस समय तक यह सभा अपने कार्योंसे काफी ख्याति पा चुकी थी। ता. २ नवम्बर १९२४ को आर्य युवक सभाकी तरफ से नातालके वैदिक धर्मावलम्बियोंका एक विराट अधिवेशन बुलाया गया। जिसमें प्रांतकी १०-१२ आर्य संस्थाओंके प्रतिनिधि तथा अनेक आर्य सज्जन उपस्थित हुए। इस अधिवेशनमें सभापति पदसे श्री सत्यदेवजीने ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी महोत्सव मनानेका विचार पेश किया। पं. भवानी दयाल जी तथा संस्थाओंके प्रतिनिधियों ने इस विचारका सहर्ष स्वागत किया और इसके लिए 'दक्षिण आफ्रिका ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी महोत्सव समिति' का निर्माण हुआ। जिसके सभापति पं. भवानी दयालजी, मंत्री श्री सत्यदेव जी एवं कोषाध्यक्ष श्री बी. ए. मेघराज निर्वाचित हुए।

इस समितिके बन जानेसे जन्म शताब्दी महोत्सवको धूमधामसे मनानेके लिए तैयारियां होने लगीं। पं. भवानी दयालजीने भी अपने साप्ता-हिक पत्र 'हिन्दी' द्वारा इसके लिए आन्दोलन किया। कार्यको सुगठित करने
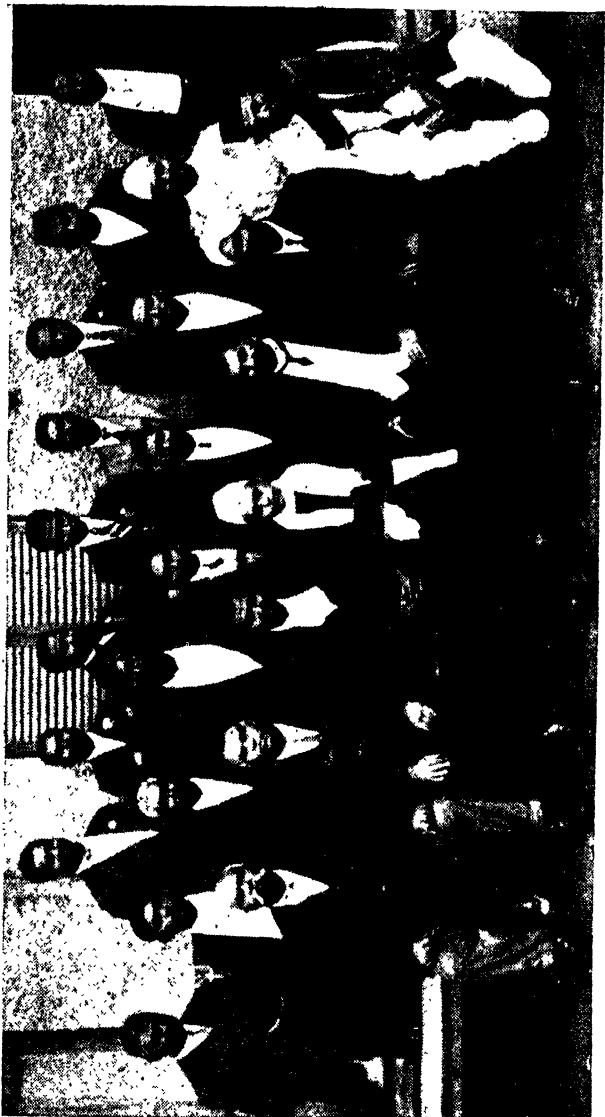
दक्षिण आफ्रिका महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव समिति सन् १९२५

आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

प्रारम्भकालके पदाधिकारी तथ प्रतिनिधिगण, सन् १९२५

के लिए कई उप-समितियाँ बन गईं। जिनके महोत्सव तक २६ अधिवेशन हुए।

जन्म शताब्दी महोत्सव ता. १६ फरवरीसे ता. २२ तक एक सप्ताह पर्यन्त ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया गया। यह महोत्सव दरबनमें तामिल ईन्स्टीटयूटके भवनमें होता था। इस अवसरपर एक महायज्ञ किया गया। प्रतिदिन १॥ घंटे तक यह महायज्ञ होता था। जिसमें यजुर्वेदके २० अध्यायोंसे आहुति दी गयीं। इस प्रदेशमें ऐसा महायज्ञ यह प्रथम ही था। पं. नैनाराजजीने इस महायज्ञमें पुरोहितका कार्य बडी योग्यतापूर्वक किया। इस बृहत् यज्ञका संपूर्ण व्यय लेडीस्मिथके सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता बाबू रघुनाथ सिंहने दिया था।

शताब्दी महोत्सव प्रतिदिन शामके ६ बजेसे रातको ६ बजे तक होता था। उत्सवमें विद्वानोंके भाषण व निबन्ध पढे गये थे। संगीतका कार्यक्रम भी रखा गया था। भाषण ऋषि दयानंदजीकी जीवनी, आर्य सिद्धान्त, संस्कृति, मातृभाषा आदिपर हिन्दी और अंग्रेजी भाषामें होते थे। वक्ताओं में मुख्यतया निम्नलिखित विद्वान थे—पं. भवानी दयालजी, श्री पी. आर. पत्तर, श्री एस. एन रिचार्ड, श्री एफ. रामलगन, श्री एस. एल. सिंह, श्री एस. भगवानदीन, श्री सत्यदेवजी, श्री आर. एम. नायडू, श्री मोहकमचन्द जी, श्री टी. एम. नायकर आदि। श्री एस. एन. रिचार्ड एक ईसाई युवक थे पर उन्होंने स्वामी दयानंदके प्रति गहरी श्रद्धा और भक्ति व्यक्त की थी। जन्म शताब्दी समितिके सभापति पं. भवानी दयालजीने इन उत्सवोंका अध्यक्ष पद बडी योग्यतापूर्वक निभाया। उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानोंका प्रभाव बहुत अच्छा होता था।

विद्यार्थी सम्मेलन इस महोत्सवपर आर्य विद्यार्थियोंके एक सम्मेलन की भी योजना की गयी थी। जिसमें कई हिन्दी पाठशालाओंके विद्यार्थियोंने भाग लिया था। विद्यार्थियोंकी भाषण प्रतिस्पर्धा, संगीत, भजन आदिके कार्यक्रम हुए थे। महोत्सवमें भी विद्यार्थी बालक बालिकाओंने अच्छा भाग लिया था। खासकर कुमारी धर्मदेवी, कुमारी कनकपति एवं

कुमार तिलकने अपने व्याख्यानों तथा भजनोंसे श्रोताओंको मुग्ध कर लिया था। इन विद्यार्थियोंको पुरस्कार भी दिये गये थे।

जुलूस २१ फरवरीके दिन इस शताब्दी महोत्सवके उपलक्षमें एक बड़ा जुलूस भी निकाला गया। आर्य लोगोंका अपना यह प्रथम बड़ा जुलूस था। उसमें आर्य संस्थाएं बेंड और बाजेके साथ भाग ले रही थीं। ओ३म् की पताकाओंसे जुलूस सुशोभित था। वैदिक धर्मकी जयके नारों तथा भजनोंसे आकाश गूंज उठता था। आर्य नरनारियोंका उत्साह देखने योग्य था। दरबनकी विक्टोरिया स्ट्रीटके बायो होलसे यह जुलूस निकलकर विभिन्न मार्गोंपर घूमता हुआ तामिल इन्स्टीटयूटके भवनपर महोत्सवकी सभा के रूपमें समाप्त हुआ था।

प्रथम वैदिक परिषद् इस शताब्दी महोत्सवका सबसे प्रधान कार्य प्रथम वैदिक परिषद्का आयोजन था। इस परिषद्में नातालकी विभिन्न आर्य संस्थाओंके १३६ प्रतिनिधियोंने भाग लिया था। तथा हजारसे अधिक श्रोताजन उपस्थित थे। यह उपस्थिति यहांके लिये एक बडी संख्या है। इस परिषद्में पारसी, मुसलमान और ईसाई बंधु भी उपस्थित होते थे। सन् १९१२ में स्वामी शंकरानंदजी महाराजने जो हिन्दू कोन्फ्रेंस बुलायी थी उस से इस परिषद्की तुलना की जा सकती थी।

इस वैदिक परिषद्के स्वागताध्यक्ष दरबनके प्रसिद्ध उत्साही कार्यकर्ता श्रीमान् आर. के. केपिटन थे। उनके ही प्रयत्नोंसे प्रतिनिधियोंका सुयोग्य स्वागत प्रबंध हो सका था। परिषद्के अध्यक्ष लेडीस्मिथ निवासी आर्य सज्जन बाबू रघुनाथ सिंह निर्वाचित हुए थे।

ता. २१ फरवरी १९२५ को दुपहरको २॥ बजे दरबनके विक्टोरिया स्ट्रीटके रावत बायो होलमें परिषद्का बड़े समारोहसे प्रारंभ हुआ। स्वागताध्यक्ष एवं प्रधानके भाषणों और संगीत आदिके कार्यक्रमके पश्चात् यह परिषद् दूसरे दिनके लिए स्थगित होगई। दूसरे दिन पुनः १०॥ बजेसे परिषद् चालू हुई। इस दिन महिलाओंकी संख्या ध्यान खींचनेवाली थी। श्रीमती कुसुमी, श्रीमती आर. एम. नायडू, तथा श्रीमती एम. भगवानदीन आदि

महिलाओंने स्त्री शिक्षा, परदा प्रथा आदि विषयोंपर महत्वपूर्ण निबन्ध पढ़े।

इस प्रथम वैदिक परिषद्में सात प्रस्ताव स्वीकृत हुए। जिनमें हिन्दू जनताका ध्यान निम्न बातोंकी ओर खींचा गया था: मादक द्रव्योंके सेवन को रोका जाय, सब आर्य षोडश संस्कारोंपर अमल करें, प्रतिदिन संध्या हवन आदि नित्य कर्म किये जायें, गरीब और दलित वर्ग को भाई समझकर, जातपातके भेदोंको भुलाकर उनकी उन्नतिके प्रयत्न किये जावें, हरएक संस्था मातृभाषा और स्त्री शिक्षाका योग्य प्रबन्ध करे।

इस वैदिक परिषद्में नाताल प्रांतकी निम्न लिखित संस्थाएँ सम्मिलित हुई थीं: आर्य युवक सभा, दरबन; हिन्दी आर्य आश्रम, क्लेरस्टेट; सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासु सभा, केटो मेनर; हिन्दी प्रचारिणी सभा, क्लेरस्टेट; आर्य समाज, लेडीस्मिथ; हिन्दू यंग मेन्स एसोसियेशन, न्यूकासिल; हिन्दी प्रचारिणी सभा, न्यूकासिल; हिन्दू यंग मेन्स एसोसियेशन, मेरित्सबर्ग; विद्या प्रचारिणी सभा, मेरित्सबर्ग; वेद धर्म सभा, मेरित्सबर्ग; विद्या प्रचारिणी सभा, रायकोटिस; यंग मेन्स सोसायटी, पोइन्ट; नागरी प्रचारिणी सभा, स्प्रिंगफिल्ड; आर्य युवक मंडल, सीकाउलेक; वैदिक सन्मार्ग सोसायटी, अमगेनी; नागरी प्रचारिणी सभा, केम्प ड्रीफट।

यहांकी समितिकी तरफसे मथुरामें होनेवाली जन्म शताब्दीके लिए पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार, श्री देवीदयालजी तथा सी. वी. पिले प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। दरबन शहरके अतिरिक्त लेडीस्मिथ, पीटर मेरित्सबर्ग आदि स्थानोंपर भी शताब्दी उत्सव मनाया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभाकी स्थापना

ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी तथा उसकी प्रथम वैदिक परिषद्में सब से महत्वपूर्ण कार्य आर्य प्रतिनिधि सभाकी स्थापनाका हुआ। इस प्रदेशमें स्वामी श्री शंकरानन्दजी, पं. भवानी दयालजी तथा अन्य प्रचारकोंके कारण आर्य समाजके विचारोंका प्रचार खूब बढ़ गया था। प्रांत भरमें कई आर्य संस्थाएं भी स्थापित हो चुकी थीं। परन्तु अभीतक इन संस्थाओंका कोई केन्द्रीय संगठन न था। सभी हिन्दुओंका दृढ संगठन करने वाली भी कोई संस्था न थी। स्वामी शंकरानंदजी द्वारा स्थापित हिन्दू महासभा मृत प्राय: हो चुकी थी। उसे जिलानेके प्रयत्न आपसी मतभेदोंके कारण व्यर्थ हो रहे थे।

इस जन्म शताब्दी महोत्सवका विचार जब श्री सत्यदेवजीने रखा तभी उनका यह भी ख्याल था कि इस शुभ अवसरका लाभ उठाकर आर्य संस्थाओंका एक दृढ केन्द्रीय संगठन किया जावे। इस महोत्सवमें भाग लेनेवाली संस्थाओंने इस विचारको प्रीतिपूर्वक अपना लिया।

ता. २२ फरवरी १९२५ को शिवरात्रीके दिन प्रथम वैदिक परिषदमें श्री आर. एम. नायडूने तीसरा प्रस्ताव रखा कि "दक्षिण आफ्रिकामें वैदिक धर्मका प्रचार करनेके लिए 'केन्द्र आर्य वैदिक सभा' की रचना की जाये।" इस प्रस्तावके संशोधनमें पं. भवानी दयालजीने निम्नलिखित प्रस्ताव रखा: "ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी पर इस सम्मेलनमें पधारे हुए लोग निश्चय करते हैं कि एक 'आर्य प्रतिनिधि सभा' की स्थापना हो। तथा उसके द्वारा दक्षिण आफ्रिकामें वैदिक धर्मका प्रचार हो"। प्रस्तावकने इस संशोधनको स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सर्व सम्मतिसे आर्य प्रतिनिधि सभाकी स्थापना की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभाका केन्द्र-स्थल दरबनमें रखनेका निश्चय हुआ। इस सभाके सर्व प्रथम प्रधान पं. भवानी दयालजी निर्वाचित हुए। मंत्री और उपमंत्रीके पदोंपर श्री बी. ए. मेघराज तथा श्री पी. आर. पत्तर चुने गये। कोषाध्यक्ष श्री आर. के. केपिटन बने। प्रतिनिधि सभाके सर्व प्रथम मंत्री और उपमंत्री अपने कार्य भारको निभानेमें असमर्थ रहे। एक मासके बादही उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। जिससे श्री बी. उदित नये मंत्री चुने गये। दूसरे वर्ष श्री सत्यदेवजी सभाके मंत्री निर्वाचित हुए। तबसे आजतक उन्हों ने बडी योग्यतापूर्वक मंत्रीपदके इस उत्तरदायीत्वको निभाया है और उनके इस २४ वर्षके अनथक परिश्रमका ही फल है कि सभा अपनी रजत जयन्ती मना रही है।

सार्वदेशिक सभा, देहलीमें सम्मिलित आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी स्थापना हो जानेपर यह भी विचार हुआ कि इस प्रतिनिधि सभाको देहलीकी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभामें सम्मिलित हो जाना चाहिये। जिससे संसारकी सभी आर्य संस्थाओंका एक सुदृढ़ संगठन हो सके। इस विचारके अनुसार ता. २३ अक्तूबर १९२७को यह प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभामें सम्मिलित हो गई।

अध्याय पाँचवाँ.

आर्य प्रतिनिधि सभा परिषदें और सम्मेलन
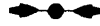
आर्य प्रतिनिधि सभा अपनी स्थापनाके बाद दक्षिण आफ्रिकाके हिंदुओंकी उन्नतिके लिए विविध कार्य करने लगी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य परिषदों और सम्मेलनोंके आयोजनोंका है। हिन्दू-आर्य जनतामें जागृति पैदा करनेके लिए और उनमें धार्मिक व सांस्कृतिक चेतना लानेके लिए समय समय २ विविध सम्मेलन किये गये। इन सम्मेलनोंके द्वारा ही हिंदू महा-सभाको पुनरुज्जीवित किया गया है, हिंदी शिक्षा संघकी स्थापना की गई है तथा दूसरे महत्वपूर्ण निश्चय हुए हैं। यहांपर महत्वपूर्ण सम्मेलनों तथा परिषदोंका संक्षिप्त विवरण दिया जाता हैः—

वैदिक परिषदें सभाने अपने २५ वर्षके जीवनमें ६ महत्वपूर्ण वैदिक परिषदोंका आयोजन किया है। जो निम्न प्रकार हैः—

पहली वैदिक परिषद यह वैदिक परिषद ता. १६-२-२५ को हुई। इसी परिषदमें आर्य प्रतिनिधि सभाकी स्थापना की गई थी। (विवरण देखिये अध्याय ४)

दूसरी वैदिक परिषद यह परिषद ता. ३-१०-२५ को लेडीस्मिथ नगरमें प्रतिनिधि सभाकी तरफसे हुई। परिषदमें प्रांत भरकी आर्य संस्थाएं सम्मिलित हुईं। परिषदके सभापति पं. भवानी दयालजी निर्वाचित हुए। स्वागताध्यक्ष श्री रामसुंदर पाठक थे। इस परिषदके लिए श्री सत्यदेवजी तथा श्री आर. एम. नायडू विशेष मंत्री नियुक्त हुए। इसमें आर्य प्रतिनिधि सभाके नियम-उपनियम आदि स्वीकृत किये गये। लेडी-

स्मिथके उदार आर्य सज्जन बाबू रघुनाथ सिंहके उत्साहसे यह परिषद् सफल हो सकी। उन्होंने इस परिषद्के लिए अत्यधिक परिश्रम किया, एवं भोजन, मंडप आदिकी व्यवस्था भी अपने व्ययसे की थी। परिषद्के मंत्री श्री सत्यदेवजी की छोटी लडकी करुणा अकस्मात्से दो दिन पूर्व ही जल गई। फिर भी वे निष्ठासे परिषद्का कार्य करते रहे। परिषद्के दिन वे लेडीस्मिथ पहुंचे ही थे कि दरबनसे लडकीके अकाल अवसानका दुःखद समाचार पहुंचा और उन्हें पुनः दरबनके लिए रवाना होना पडा था।

तीसरी वैदिक परिषद् यह परिषद् नातालकी राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग नगरमें ता. ३१ जुलाई तथा १ अगस्त १९२६ को हुई। इस परिषद्के सभापति आर्य विद्वान पं. आर. बी महाराज थे। स्वागताध्यक्ष श्री गाहीसिंह थे। इस परिषद्में कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए जिनमें दो महत्वपूर्ण थे। एकमें कहा गया था कि नातालकी सभी हिंदू संस्थाओंकी गोल मेज परिषद् बुलाकर हिंदुओंका संगठन किया जावे। इस प्रस्तावके अनुसार जब कार्य करनेको उद्यत हुए तो कई संस्थाएं इसके लिए तैयार नहीं हुई। इस समय सनातन धर्म के प्रचारक पं. रामगोविंद त्रिवेदी यहां आये हुए थे। उन के साथ भी इस प्रश्न पर चर्चा हुई। पर वे इस संगठनके विरुद्ध थे। स्वामी शंकरानंदजी द्वारा संस्थापित हिंदू महासभाको पुनरुज्जीवित करनेके प्रयत्न भी व्यर्थ गये। श्री रामगोविंद त्रिवेदीने सनातन धर्म महामंडलकी स्थापना की। यह संस्था भी कुछ काम न कर सकी। न इसके कारण कोई संगठन हो सका।

दूसरा प्रस्ताव इस परिषद्में मातृभाषाके संबंधमें स्वीकृत हुआ। जिस में कहा गया था कि प्रतिनिधि सभा तथा सम्मिलित संस्थाएं अपनी सारी कार्यवाही मातृभाषा हिंदीमें करें। इस प्रस्तावके अनुसार आज भी प्रति-निधि सभाका सारा कार्य हिन्दीमें होता है। इस देशमें बहुत कम संस्थाएं हैं जो अपनी सारी कार्यवाही मातृभाषामें करती हों।

चौथी वैदिक परिषद् यह परिषद् ता. ११ और १२ मार्च १९३१ को दरबनके तामिल इन्स्टीटयूट, दरबनके होलमें हुई। इस परिषद्के

अध्यक्ष श्री बी. बोधासिंह थे। स्वागताध्यक्ष श्री एस. एल. सिंह थे। परिषद् का उद्घाटन श्री के. बैजनाथने किया। इस परिषद्में श्री टी. एम. नायकर ने धर्म पर, श्री बी. एम. पटेलने संस्कृति पर तथा पं. अवधबिहारीने मातृ-भाषा पर निबन्ध पढ़े। हरएक संस्थासे मातृभाषा पढ़ानेकी व्यवस्था करनेको आग्रह किया गया।

पांचवी वैदिक परिषद् यह परिषद् ता. १४-१५ फरवरी १९४२ को शिवरात्रीके शुभ अवसरपर दरबनमें हुई। परिषद्के सभापति श्री आर. बोधासिंह, उद्घाटनकर्ता श्री बाबू पद्मसिंह तथा स्वागताध्यक्ष श्री. एस. एल. सिंह थे। इस परिषद्में भी कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए। पं. आर. बी. महाराजने धर्म पर, पं तुलसीरामजीने संस्कारों पर तथा श्रीमती ए. पी. सिंहने स्त्री शिक्षा पर निबन्ध पढ़े। स्त्रियोंको हिन्दी पढ़ाने, पुरुषोंके समान हक देने और स्त्री उन्नतिके विषयोंपर प्रस्ताव हुए।

छठी वैदिक परिषद् यह परिषद् दरबनमें १६ जुलाई १९४७ के दिन सभाके भवनमें हुई। इस परिषद्में काठियावाड हिन्दू सेवा समाजके अध्यापक पं. धनशंकरजी शास्त्रीने धर्म पर, सूरत हिन्दू एसोसियेशनके महा-राज श्री केशवराम त्रिवेदीने मातृभाषा पर निबन्ध पढ़े। इस वर्ष भारतवर्षमें हुए हिन्दू-मुस्लिम दंगोंके लिए भी निन्दात्मक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

शिवरात्री महोत्सव (ऋषि बोधोत्सव) यहांपर भार-तीय त्यौहार और आर्य पर्व हरएक स्थानीय संस्था मनाती है जब कि शिव-रात्री (ऋषि बोधोत्सव) का पर्व खुद आर्य प्रतिनिधि सभा मनाती है। सन् १९२८ में शिवरात्रीके अवसरपर शिवरात्री सप्ताह मनाया गया। इसमें स्वामी भवानी दयालजी, पं. प्रवीण सिंहजी, श्री बी. एम. पटेल तथा श्री सत्यदेवजी आदिके व्याख्यान हुए थे। संगीत आदिका कार्यक्रम भी हुआ था। १९२९ में पुनः शिवरात्री सप्ताह मनाया गया। इस वर्ष देशके विद्वान प्रचारक डॉ. भगतराम, पं. प्रवीण सिंहजी तथा स्वामी भवानी दयालजी उपस्थित थे। इन्होंने विविध विषयोंपर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिये। सन्

१६३२, १६४२ और १६४४ में भी शिवरात्री सप्ताह मनाया गया। १६४२ में इस मौकेपर विद्यार्थी सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन तथा पांचवीं वैदिक परिषद भी हुई थी। शेष वर्षोंमें ऋषि बोधोत्सव दिन मनाया गया।

विद्यार्थी सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभाके साथ सम्मिलित संस्थाओंमेंसे कई हिन्दी पाठशालाएं भी चलाती हैं। इन पाठशालाओंके विद्यार्थियोंमें हिन्दीके प्रति प्रेम तथा उत्साह बढे, वे वैदिक धर्म और आर्य समाजसे परिचित हों तथा जनता भी इन विद्यार्थियोंके कार्योंको देख सके, इस उद्देशसे प्रतिनिधि सभाके द्वारा समय २ पर विद्यार्थी सम्मेलन भी होते हैं। जिनमें बहुतसी संस्थाओंके विद्यार्थी लड़के और लड़कियां भाग लेती हैं। वे हिन्दीमें भाषण, गीत, कवितापाठ, संवाद, अभिनय आदिके कार्य-क्रम कुशलतासे कर दिखाते हैं। प्रतियोगितामें पहले, दूसरे आनेवाले विद्यार्थियोंको सभाकी ओरसे पुरस्कार भी दिये जाते हैं।

आर्य महा सम्मेलन सन् १६३२ में शिवरात्रीके अवसरपर ५ मार्चको आर्य महासम्मेलन हुआ। जिसमें आर्य सज्जनोंमें धार्मिक भाव जागृत करने और तदनुकूल आचरण करनेपर जोर दिया गया। सभी आर्योंसे दैनिक संध्या, हवन आदि नित्य कर्म करनेके लिए अनुरोध किया गया। आर्य सदस्य बढ़ाने और वेद मंदिर बनानेके सम्बंधमें प्रस्ताव हुए।

ऋषि दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी सन् १६३३ में भारत वर्षमें ऋषि दयानंद निर्वाण अर्ध शताब्दी अजमेरमें मनायी गयी। इस अवसर पर यहांपर भी निर्वाण अर्ध शताब्दी मनानेकी योजना हुई। १६ अक्तूबरसे २३ अक्तूबर तक निर्वाण सप्ताह मनाया गया। केटो मेनर, क्लेरवुड, गांधी लायब्रेरी, तामिल इंस्टीटयूट आदिमें प्रचार सभाएं हुईं। इस अवसरपर सभा के प्रधान स्वामी भवानी दयालजी तथा दूसरे वक्ताओंने ऋषि दयानंदकी जीवनी पर तथा सिद्धान्तोंपर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिये। इस अवसरपर विद्यार्थी सम्मेलन भी हुआ था।

हिन्दू परिषद दयानंद निर्वाण अर्ध शताब्दीके शुभअवसरपर हिन्दुओंको संगठित करनेके लिए हिन्दू परिषदका आयोजन किया गया।

स्वामी शंकरानंदजी द्वारा संस्थापित हिंदू महासभा मृत प्रायः हो गई थी। हिंदुओंके संगठनके लिए इसे पुनरुज्जीवित करना बहुत जरूरी था। आर्य प्रतिनिधि सभाने इसके लिए अपनी तीसरी वैदिक परिषदमें प्रस्ताव करके तदनुसार प्रयत्न भी किया था। वह विफल हुआ था। निर्वाण शताब्दी पर इसके लिए फिर प्रयास किया गया और एक हिंदू परिषदकी आयोजना हुई। इस परिषदमें ८० हिंदू संस्थाओंने भाग लिया। और एक प्रस्तावसे हिंदू महासभाको पुनः जाग्रत किया गया और हिंदुओंका संगठन हो सका। तबसे हिंदू महासभाका कार्य हिंदुओंके हितकी दृष्टिसे आजतक चालू है।

पुरोहित सम्मेलन इस प्रदेशमें वैदिक पद्धतिसे विवाहका प्रचार बढ़ने लगा। परंतु पुरोहित लोग संस्कार विधिके ठीक अनुकूल विधि नहीं करवाते थे। वे व्यक्तिगतरूपसे कुछ न कुछ घटा बढा दिया करते थे। इस अव्यवस्थाको दूर करनेके लिए ता. १, २ जुलाई १९४४ को प्रतिनिधि सभाके सभा भवनमें एक पुरोहित सम्मेलन रखा गया। इस सम्मेलनके सभापति पं. अवधबिहारी थे। इस अवसरपर जोहानिसबर्ग की गुजराती संस्थाके अध्यापक, गुरुकुल कांगडीके स्नातक पं सुधीरकुमारजी विद्यालंकार भी उपस्थित थे और मार्गदर्शन करते रहे। इस सम्मेलनमें पुरोहितोंकी पोशाकसे लेकर आशीर्वादमें वरवधूपर फूल या चावल डाले जायें आदि छोटी बडी सभी बातोंपर चर्चा हुई थी। तथा प्रायः संस्कार विधिकी पद्धतिके अनुकूल प्रत्येक क्रिया करनेका निश्चय हुआ था।

आवश्यक महाधिवेशन सम्मिलित संस्थाओंके लिए साप्ताहिक सत्संग, हिन्दी पाठविधि तथा यहांके आर्योंकी जन गणना करनेके लिए प्रतिनिधि सभाका एक महा अधिवेशन १७, १८ नवम्बर १९४५ को हुआ। इसके सभापति पं. अवधबिहारी थे। इसमें साप्ताहिक सत्संगका सामान्य क्रम तय किया गया। पाठशालाओंकी बालवर्गसे आठवें दर्जे तककी सम्पूर्ण पाठविधि निश्चित की गई। तथा आर्योंकी जन गणना करनेका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। व्यवहारिक कठिनाइयोंके कारण यह जन गणना नहीं हो सकी थी।

हिन्दी सम्मेलन नाताल प्रांतकी समस्त हिन्दी पाठशालाओं को संगठित करनेके उद्देश्यसे गुरुकुल कांगडीके स्नातक पं. नरदेव वेदालंकारकी प्रेरणासे यह हिन्दी सम्मेलन ता. २४, २५ अप्रैल १९४८ को हुआ। इसमें 'हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल' नामकी स्वतंत्र संस्थाकी स्थापना की गई। (विवरण देखिये अध्याय ८)

प्रथम आर्य युवक परिषद् प्रतिनिधि सभाने ३१ जुलाई १९४८ के दिन प्रथम आर्य युवक परिषद्का आयोजन किया। इस परिषद्में धर्म और संस्कृतिपर पं. नरदेव वेदालंकार, आरोग्य और दीर्घायुपर डॉ. एन. पी. देसाई, व्यायामपर श्री सनी मोदली तथा संगीत विद्यापर श्री हरिसिंह मुख्य वक्ता थे। अन्य वक्ताओंके भी भाषण हुए। इन चारों विषयोंपर प्रस्ताव भी स्वीकृत हुए।

इस तरह ये विविध सम्मेलन और परिषदें प्रतिनिधि सभाकी ओरसे होती रहीं। जहांतक हो सका इनके प्रस्तावोंको कार्यरूपमें रखनेका प्रयत्न हुआ है।
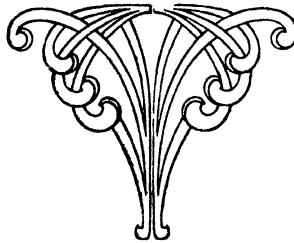
आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

पदाधिकारी तथा प्रतिनिधिगण सन् १९४६

आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

पदाधिकारी तथा प्रतिनिधिगण सन् १९५७। मध्यमें पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय तथा पं. नरदेवजी वेदालंकार

अध्याय छठा.

आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद मंदिरका निर्माण

— तथा —

विविध कार्य

भूमिका खरीदना आर्य प्रतिनिधि सभाकी स्थापनाके दिनसे ही आर्योंके दिलमें यह महती इच्छा थी कि प्रतिनिधि सभाका अपना भवन बने। इस विषय पर बार २ चर्चाएं एवं विचार हुए। पर यह कार्य सहज न था। सामान्यरूपसे आर्य समाजी जनता इस प्रदेशमें अधिक गरीब है। इस से भवनके लिए पैसे इकठे करना बड़ा मुश्किल रहा है। सभा १० वर्षके बाद इस कार्यमें पहला कदम बढ़ा सकी। सभाके उत्साही एवं उदार प्रधान श्री आर. के. केपिटनके प्रयत्नोंसे १ अप्रैल १९३६ में कार्लाइल स्ट्रीट, दरबनमें २००० पौंडके ऋणसे भवनके लिए भूमि खरीदी गई। प्रधानजीने १०० पौंड सर्वप्रथम दिये तभी यह भूमि सभाके कब्जेमें आयी।

भूमिका उऋणोत्सव सभाके पास जमीन हो गई, पर उसे कर्जसे मुक्त करना था। इस कार्यके लिए एक उपसमिति बनायी गयी। वह चंदा इकठा करनेका कार्य करने लगी। इस कार्यमें तन, मन और धनसे सहयोग देनेवाले सज्जन श्री बी. बोधासिंह, श्री आर. बोधासिंह, श्री एस. एल. सिंह, श्री सत्यदेवजी, श्री जी. मेढ़ई और श्री एम. मुन्नू थे। इनके प्रयत्नों से सभा १९४१ में भूमिके ऋणसे मुक्त हो सकी। इसके उपलक्ष्यमें ता. ७-१२-४१ को सभाने अपनी भूमिपर उऋणोत्सव मनाया।

भवन प्रवेश यज्ञ सभाने वेद मंदिरके लिए भूमि तो खरीद ली थी पर वहां जो मकान थे वे इस लायक न थे कि उसमें सभा आदि हो सके। बडा भवन बनाना भी मुश्किल था। सो सभाने निश्चय किया कि थोडा खर्च करके एक छोटा होल तैयार किया जावे। क्योंकि अब तक सभा को अपने कार्योंके लिए दूसरी संस्थाओंपर आश्रित रहना पडता था। इससे एक तात्कालिक काम चलाऊ भवन तैयार किया गया। उसमें कार्य चालू करने के लिये ता. ४–२–४३ के दिन भवन प्रवेश यज्ञ किया गया। तबसे सभाके छोटे बडे सभी कार्य इसी भवनमें होते रहे हैं।

श्रीमान आर. बोधासिंहके उदार दानकी घोषणा

सभाको अब भी एक विशाल वेद मंदिर बनानेका कार्य बड़ा दुष्कर प्रतीत होता था। उसके लिए काफी धनराशीकी जरूरत थी। परम कृपालु परमात्मा की कृपासे सभाको एक उदार हृदय दानवीर आर्य सज्जनका सहयोग प्राप्त हुआ। इनका शुभ नाम है श्रीमान् आर. बोधासिंह। श्री बोधासिंह स्टेंगर के निवासी हैं। वहां उनकी गन्नेकी अच्छी खेती है। श्री आर. बोधासिंह सन् १९४०से प्रतिनिधि सभाके प्रधान हैं। उन्होंने ता. २२ फरवरी १९४४ को शिवरात्रीके शुभ पर्वपर वेद मंदिरके लिए सभाको १०,००० पौंड (लगभग १३२,००० रुपया) दान देनेकी उदार घोषणा की। इस घोषणाने सभा की हिम्मत खूब बढ़ गई और उसने वेद मंदिरका नकशा तैयार करवा लिया है। तथा सभाकी रजत जयंतीके शुभ अवसरपर वेद मंदिरकी आधार शिला रखी जा रही है। चिर प्रतीक्षाके बाद आर्योंकी अभिलाषा पूर्ण हो रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभाके सहायक तथा ट्रस्टीगण

आर्य प्रतिनिधि सभाको सहायता देनेवाले अनेक आर्य सज्जन हैं, जिन्होंने अपने तन, मन और धनसे इसकी सहायता की है। जो सज्जन सभाको १५० पौंड दानमें देते हैं वे सभाके आजीवन ट्रस्टी बन जाते हैं। सभाको सेवा देनेवाले कई सज्जन निर्वाचित ट्रस्टी भी हैं। मुख्य दाताओंके शुभनाम ये हैं:—

२५० पौंड स्व. बी. बोधासिंह, १५० पौंड स्व. जे. बी. डेनियल, ११० पौंड स्व. बी. सुखदेवसिंह, १०५ पौंड श्री आर. बोधासिंह, १०१ पौंड श्री बी. एम. पेटल, १०० पौंड स्व. आर. के. केपिटन, ७५ पौंड स्व. के. बैजनाथ, ६० पौंड श्री जी. मेढ़ई, ५२ पौंड १० शि. श्री आर्य संगीत मंडल।

५० पौंड देनेवाले सज्जन: श्री एम. मुन्नू, श्री बी. ए. मेघराज, स्व. एल. बोधासिंह, श्री चुन्नीलाल ब्रदर्स, स्व. एस. बद्री, ३२ पौंड १० शि. श्री के. आर. दीवान एंड सन्स।

२५ पौंड देनेवाले सज्जनः श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री आर. देवा ब्रदर्स, श्री बी. एम. मिस्त्री, श्री जे. मगनलाल, श्री पी. सीब्रन एंड रघु ब्रदर्स, श्री गांधी एंड कम्पनी, श्री सी. एन. राणा, श्री आर. बी. चेटी, श्री विक्टोरिया प्रोडयुस कम्पनी, श्री जे. रामप्रसाद, स्व. एल. राजकुमार, स्व. बी. बेचू, श्री बी. जे. मिस्त्री ब्रदर्स, स्व. रामगुलाम, श्री जी. रामप्रसाद, स्व. बी. बी. महाराज, स्व. एन. बोधासिंह।

२५ पौंडसे कम रकम देनेवाले अन्य अनेक सज्जन हैं।

माननीय ट्रस्टी श्री बी. ए. मेघराज, श्री बी. एम. पेटल, श्री आर. बी. महाराज, श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री आर. बोधासिंह, श्री एम. मुन्नू, श्री एस. एल. सिंह, श्री वी. सी. नैनाराज, श्री पी. बी. सिंह, श्री जी. मेढ़ई, श्री एच. बोधासिंह।

प्रतिनिधि सभाके विविध कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभाने अपने सम्मेलनों और परिषदों द्वारा तथा प्रचारकों और सम्मिलित संस्थाओं द्वारा इस प्रदेशमें बहुतसे महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। जिनकी वजहसे इस सुदूर प्रदेशमें भी आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यता जीती जागती रही है। परन्तु उन बड़े २ कार्योंके अतिरिक्त भी प्रतिनिधि सभाने छोटे मोटे कार्योंमें बडी दिलचस्पी और जागरूकता दिखलाई है। जिससे आर्य जीवनकी जडें मजबूत रहें और उनमें घुन न लगने पावे। ऐसे कुछ कार्योंका संक्षेपमें यहां उल्लेख किया जाता हैः—

(१) जेलोंमें तथा अस्पतालोंमें प्रचार नाताल प्रांत की जेलोंमें भारतीय कैदियोंको धार्मिक उपदेश देने और प्रचार करनेके लिए रविवारको सुविधा दी जावे; इसके लिए सभाने यूनियन सरकारसे अनुमति मांगी थी। हर्ष है कि सरकारने यह अनुमति दी है और आज २५ वर्षोंसे दरबन, मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ और स्टेंगरकी जेलोंमें सभाके प्रचारकोंकी ओरसे उपासना और धार्मिक प्रचार किया जाता है। इस प्रचारका कैदियोंपर प्रभाव होते भी देखा गया है और कई मौकेपर पश्चातापसे कैदियोंने आँसू भी बहाये हैं तथा जेलसे बाहर आकर अपने जीवनको सुधारा है। जेलोंमें जाकर प्रचार करनेवाले मुख्य सज्जनोंके नाम ये हैं:—श्री सत्यदेवजी. पं. नैनाराज, पं. जगमोहनजी. पं. आर. बी. महाराज, पं. आर. बनवारी, पं. लक्ष्मीनारायण जी, पं. रामसुन्दर पाठक तथा स्व. बाबू रघुनाथ सिंहजी।

इसी तरहसे यहांके अस्पतालोंमें भी प्रचार करनेकी सुविधा मिली है। अस्पतालोंमें मृत्यु पानेवाले हिन्दुओंके शवोंको अग्नि दाह देनेके लिये भी सभाने प्रार्थना की थी। उसका खर्च देना अस्पतालोंके अधिकारियोंके मंजूर न करनेसे वैसा नहीं हो सका है। अस्पतालोंमें हरएक दर्दीके पास जाकर स्वास्थ्य और शांतिकी प्रार्थना करनेवाले सेवाभावी पुरोहितोंकी बडी आवश्यकता है। ईसाई मिशनके कार्यकर्ता हरएक धर्मके रोगीके पास जाकर ऐसी प्रार्थना करते हैं। इसका मानसिक प्रभाव बहुत होता है।

(२) ईसाइयतकी शिक्षाका विरोध सरकारी सहायतासे संचालित तथा ईसाई मिशनकी अंग्रेजी पाठशालाओंमें हिन्दू बच्चोंको भी बाइबिल से प्रार्थना करनी पडती थी। सभाने इसका विरोध किया। इसी तरह मिशन से चलनेवाले विद्यालयोंमें ईसाइयतकी शिक्षा हिन्दू बच्चोंको भी दी जाती थी। इसके विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभाने ता. १५–२–४२ की वैदिक परिषद्‌में घोर विरोध जाहिर किया और प्रस्ताव भी किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप यहांके शिक्षा विभागने यह मान लिया है कि जिन माता पिताओंको इस बातका विरोध हो उनके बच्चोंको ईसाई धर्मकी शिक्षासे मुक्ति दी जावे। अब तो भारतीयोंकी पाठशालाओंमें अपनी प्रार्थना होती है।

(३) "इन्डियन न्यूज़" का गंदा प्रचार तथा पादरीकी कृष्ण निन्दा दरबनके मुस्लिम साप्ताहिक पत्र 'इन्डियन न्यूज़' ने अपने ता. २–६–२७ के अंकमें हिन्दू देव देवियोंके लिए अपमान-जनक शब्दों और गालियोंका प्रयोग किया था। उसके विरुद्ध सभाने ता. १२–६–२७ की अपनी सभामें घोर विरोध प्रस्ताव पास किया था। वह प्रस्ताव कोंग्रेस आदि संस्थाओंको भी भेजा गया था और निवेदन किया गया था कि ऐसा प्रचार झगडेका कारण हो सकता है।

इसी तरह दरबनके हिन्दुस्तानियोंमें ईसाई मिशनके मुख्य प्रचारक पादरी पास्टर रोलेन्डने अपने मासिक 'मूविंग वोटर' के अक्तूबर १६४१ के अंकमें भगवान श्रीकृष्ण और ईसामसीहकी तुलना करके श्रीकृष्णको नीचा दिखानेकी कोशिश की थी। इसके विरुद्ध भी प्रतिनिधि सभाने सख्त विरोध का प्रस्ताव किया था। इस सम्बंधमें दरबनके मेयरको भी लिखा गया था। आखिर पादरी महोदयको अपने लेखके लिए क्षमा मांगनी पडी थी।

(४) सर सैयद रजा अलीका विवाह भारत सरकारके दक्षिण आफ्रिकाके राजदूत सर सैयद रजा अलीने जनवरी १६३६ मासमें किम्बर्लीकी एक हिन्दू कन्या कु० सामीसे विवाह करना तय किया। इस कारणसे हिन्दू समाजमें घोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। इस विरोधका सूत्रपात प्रतिनिधि सभाने किया। इस विवाहके विरुद्ध १६ जनवरी १६३६ के दिन सभाने समस्त हिन्दुओंका एक विराट् अधिवेशन बुलाया, जिसमें सहस्रों हिन्दू उपस्थित थे। इसमें उक्त विवाहका घोर विरोध हुआ और बड़े गरमागरम भाषण हुए। सभाकी प्रेरणासे कई संस्थाओंने उग्र विरोधके प्रस्ताव पास किये। हरएक हिन्दू संस्थाको श्री सैयद रजा अलीसे असहयोग करनेके लिए प्रार्थना की गई। इस तरह इस विवाहके विरुद्ध सारे दक्षिण आफ्रिकामें उग्र विरोध जाग उठा। इसके परिणाम स्वरूप सर सैयद रजा अलीने रजिस्ट्रेशन द्वारा विवाह किया और मृत्यु पर्यन्त कु. सामीका धर्म परिवर्तन नहीं हो सका।

(५) हैदराबाद सत्याग्रह तथा सत्यार्थ प्रकाशकी जब्ती

यह प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा, देहलीके साथ सम्मिलित है। उसके आदेशों और आदर्शोंके अनुकूल कार्य करती है। हैदराबादकी निजाम सरकारने अपने राज्यमें हिन्दुओं तथा आर्योंपर जो धार्मिक प्रतिबन्ध लगाये थे उसके विरुद्ध भारतमें १९३९ में आर्य समाजियोंने सत्याग्रह किया। उसके प्रति इस सभाकी पूर्ण सहानुभूति रही तथा उस परिस्थितिसे बड़ी चिन्तित रही। उस समय सभाने सहायतार्थ चन्दा भी करके भेजा। इसी प्रकार सिंध की मुस्लिम लीगी सरकारने सत्यार्थ प्रकाशके १४वें समुल्लासके छापनेपर प्रतिबन्ध लगाया था। उसका विरोध और निन्दा करनेवाला प्रस्ताव भी सभाने किया था।

(६) प्रकाशन: आर्य समाजके प्रचारका इतिहास

इस देशमें भाई परमानंदजी सर्वप्रथम आर्य समाजका संदेश लेकर पहुंचे थे। ५ अगस्त १९३० को इस देशमें आर्य समाजके प्रथम संदेशको पहुंचे २५ वर्ष होते थे। इस अवसरपर प्रतिनिधि सभाने इन २५ वर्षोंके प्रचारका इतिहास छपवानेका निर्णय किया। सभाके मंत्री श्री सत्यदेवजीने बहुत परिश्रम उठाकर यह इतिहास तैयार किया। इसमें देशसे पधारे हुए सभी आर्य प्रचारकोंका कार्य वृत्तांत, प्रतिनिधि सभाका प्रारंभिक इतिहास, सम्मिलित संस्थाओंका कार्य विवरण एवं मुख्य कार्य कर्ताओंकी जीवनी लिखी गयी थी। जिसके साथ दर्जनों चित्र भी रखे गये थे। यह इतिहास आर्य भास्कर प्रेस, आगरामें छपनेके लिए भेजा गया था। इसके लिए देशमें सभाके प्रधान श्री आर. के. केपिटन तथा स्वामी भवानी दयालजीने बहुत श्रम लिया। जब इतिहास छपकर बम्बई पहुंच गया तो उस समय १९३२ में देशमें सत्याग्रह का आन्दोलन चल रहा था तथा विदेशी मालके बहिष्कारका आन्दोलन उग्र था और उसकी होली जला दी जाती थी। दुर्भाग्यसे सभाका यह इतिहास जहांपर रखा गया था वहांपर भी ऐसी आग लगा दी गई और सबकी सब नकलें उसीमें स्वाहा हो गईं। परिश्रम और व्ययसे तैयार किया गया कार्य भस्मीभूत हो [illegible]।

सभा आर्थिक अभावके कारण दूसरे प्रकाशन नहीं करवा सकी है। १६३३ में दयानंद निर्वाण अर्ध शताब्दीके अवसरपर सभाकी तरफसे ऋषि दयानंदकी संक्षिप्त जीवनी अंग्रेजीमें छापी गई थी। इसी तरह म० नारणजी ने सभा द्वारा गुजराती संध्या भी छपवायी थी।

(७) संस्कृत पाठशाला सभाके एक मुख्य कार्यकर्ता श्री जी. मेढ़ईने अपना सुपुत्र श्री हरिशंकर गुरुकुल कांगडीमें भेजा था। १६४३ में श्री हरिशंकर आयुर्वेदालंकार बनकर यहांपर आये। सभाने उनका स्वागत किया। श्री हरिशंकरजीके आनेसे संस्कृतका वर्ग चलाना सहज हो गया। वे जनवरी १९४४ से संस्कृतकी शिक्षा देने लगे। प्रारम्भमें कई युवक इस वर्ग में प्रविष्ट हुए थे, पर धीमे २ यह संख्या घट गई थी। बादमें तो हरिशंकरजी भारत चले गये और यह पढ़ाई अधूरी ही रह गई।

(८) राष्ट्रीय कार्योंमें सहयोग सभाका कार्य धार्मिक तथा सामाजिक रहा है। परन्तु भारतमें चलनेवाले स्वातंत्र्य संग्रामके प्रति सभाकी सदा सहानुभूति रही है। सत्याग्रहके समय, महात्मा गांधीजीके उपवासोंके समय तथा अन्य अवसरोंपर सभाने तदनुकूल प्रस्ताव करके भेजे हैं। इसी तरह १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता मिलनेपर प्रधान मंत्रीके नाम बधाईका तार भेजा था। स्वराज्य प्राप्तिपर देशमें जो घोर खून खराबियां हुई उनके विरुद्ध निन्दाके प्रस्ताव पास हुए तथा उन दंगोंके लिए चन्दा इकट्ठा करके सहायता दी गई थी।

(९) शोक सभाएँ तथा प्रार्थना सभा समय समयपर सभाने आर्य विद्वानों तथा देशके नेताओंके निधनपर शोक सभाएं तथा शांतिकी प्रार्थनाएं की हैं। स्वामी श्रद्धानंदजीके खून तथा महात्मा गांधीजीकी नृशंस हत्यापर सभाने विशेषरूपसे सभाएं बुलाकर ऐसे कार्योंके निंदात्मक प्रस्ताव किये तथा खेद जाहिर कर स्वर्गीय आत्माओंके प्रति शांति की प्रार्थना की थी। इसी तरह स्व. लाला लाजपतराय, पं. नाथूराम शंकरजी शर्मा, महात्मा नारायण स्वामी आदिके निधनपर शोक प्रस्ताव किये हैं।

जनवरी १९४९में यहांपर हुए आफ्रिकन-भारतीय भीषण दंगोंके समय शांति के लिए खास प्रार्थना सभा रखी गयी थी। जिसमें पं. नरदेव वेदालंकारने विविध वेद मंत्रोंसे शांतिके लिए प्रार्थना की थी।

(१०) अन्य कार्य ऐसे ही अन्य कई विविध कार्योंमें प्रतिनिधि सभाने दिलचस्पी दिखाई है। जैसे कि द्वितीय महायुद्धके दिनोंमें रात्री के समय पूरा ब्लेक आउट रहता था। उन वर्षोंमें सभाने सरकारसे लिखा पढी करके दीपावलीके दिनों रोशनी करनेकी छूट हिन्दुओंको दिलाई थी। १९४५ दिसंबरमें सूखा पड़नेके कारण सभाने अपनी सम्मिलित संस्थाओंके द्वारा जगह २ महायज्ञ करवाये थे। इसी तरह शवको लेजानेवाली गाडियोंके मालिकोंने रविवारके दिन अपना कार्य बंद रखनेका निश्चय किया था। सभा ने उनसे पत्र व्यवहार करके ऐसा नहीं होने दिया।

इस तरहके छोटे मोटे कार्योंके प्रति सभा सदा जागृत रही है और आर्य संस्कृतिकी रक्षाके तथा हिन्दुओंके धार्मिक हितोंके कार्योंको पूरा करने को सभा हमेशा तत्पर रही है।
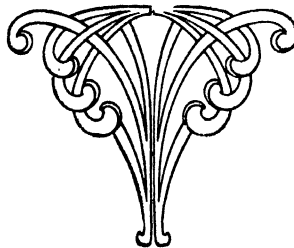
अध्याय सातवाँ.

आर्य समाज
— और —
हिन्दुओंकी धार्मिक तथा सामाजिक दशा

विदेशोंमें आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यताकी रक्षाका गौरव आर्य समाजको है। सिर्फ दक्षिण आफ्रिकामें ही नहीं अपितु अन्यत्र भी जहां भारतीय लोग बसे हुए हैं, उन उपनिवेशोंमें भारतीय संस्कृतिकी ज्योत जीवित रखनेका श्रेय आर्यसमाज और ऋषि दयानंदकी विचार धाराको ही है। परदेशोंमें अनेकविध धर्मों, संस्कृतियों और जातियोंके संघर्षमें रहना होता है, उसमें हिन्दूधर्मका पुराना रुढिवाद टिक नहीं रुकता। महर्षि दयानंदने विज्ञान सम्मत बुद्धिवादी विचारधाराके अनुकूल जिस प्राचीन वैदिक धर्मका पुनरुद्धार किया वही आज हिन्दूधर्मके लिए भारतमें और परदेशमें गौरवका कारण है। यही वजह है कि विदेशोंमें बसे हुए भारतीयोंमें हिन्दू धर्मकी रक्षाके लिए, जो व्यक्ति आर्य समाजी नहीं थे, उन्होंने भी आर्यसमाजके प्रचारको तथा सत्यार्थ प्रकाशको महत्ता दी। इस सम्बन्धमें साधुवर श्री सी. एफ. एंडरूजकी सम्मति बहुत महत्व रखती है। वे लिखते हैं:—

"विदेशोंमें प्रवासी भारतीयोंके कल्याणके लिए आर्यसमाज जो कुछ कर रहा है, उससे मेरे हृदयपर गहरा प्रभाव पड़ा है। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो मातृभूमि या भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दीकी और पुरातन आर्य संस्कृतिकी रक्षापर विशेष ध्यान रखती है।............भारतके जो समाज

प्रवासी भारतीयोंकी सेवाकर सकते हैं, उनमें आर्यसमाजसे बढ़कर क्रियाशील शक्तिशाली और उत्साही दूसरा कोई नहीं है।"

दक्षिण आफ्रिकामें आर्यसमाजके प्रचारका यही महत्व रहा है। इसके प्रचारकोंने, कार्यकर्ताओंने तथा इसकी संस्थाओं और पाठशालाओंने यहांके हिन्दू मानसको ही बदल दिया है। ५० वर्ष तक जो हिन्दू भूले-भटके हुए थे, वे आज आर्यसमाजके प्रचारसे भारतीय सभ्यता और आर्य धर्मको समझ कर कार्य कर रहे हैं। यहांके हिन्दुओंकी धार्मिक और सामाजिक दशामें आर्यसमाजके प्रचारसे कैसा परिवर्तन हुआ है और आज उनकी क्या स्थिति है इसका संक्षेपमें यहां बयान देते हैं:—

उत्सव और त्यौहार किसी समाज, जाति और संस्कृति को जीवित रखनेवाली मुख्य वस्तु धार्मिक उत्सव और महापुरुषोंकी जयंतियाँ हैं। यहांके हिंदू स्वामी शंकरानन्दजीके आनेसे पूर्व अपने त्यौहारोंको एकदम भूल गये थे। उनके त्यौहारोंमें मुहर्रम और होलीका गंदा स्वरूप ही मुख्य था। स्वामीजीने दीपावलीको फिरसे जारी करवाया। आज यहांके हिन्दुओंका सबसे बडा त्यौहार दीपावली हो गया है। इस दिन भारतीयोंकी पाठशालाएँ तथा हिंदुओंकी तमाम दुकानें भी बंद रहती हैं। दिनोंदिन यह त्यौहार महत्ता प्राप्त करता जाता है और जातीय पर्वके रूपमें बड़े उत्साहसे मनाया जा रहा है। परस्पर दीपावलीकी शुभ कामना व अभिनन्दनके कार्ड भेजे जाते हैं। रामनवमी तथा जन्माष्टमी दूसरे प्रधान त्यौहार हैं। जिन्हें प्रायः सभी हिन्दू संस्थाएँ मनाती हैं। १५ अगस्तका स्वातंत्र्य दिन भी भारतीयोंका महत्वपूर्ण त्यौहार बन चुका है। आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफ से ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्री) का त्यौहार बडे उत्साहसे मनाया जाता है। ये ही यहांके प्रधान त्यौहार हैं। मद्रासी तथा गुजराती लोग अपने कुछ स्थानीय त्यौहार भी मनाते हैं। इनके अतिरिक्त रक्षाबंधन, विजयादशमी और गांधी जयन्तीको जातीय त्यौहारके रूपमें चालू किया जाना चाहिए।

संस्कार हिन्दुओंमें मुख्यतया विवाह संस्कार ही चालू है। उस की पुरानी विधि हास्यास्पद थी। वरवधूकी पोशाक भी बड़ी विचित्र होती

थी। कपडोंकी लपेटनोंमें वधूको तो बंद कर दिया जाता था। अब तो युवकों में विवाहकी वैदिक पद्धति अधिक प्रचार प्राप्त करती जाती है। सनातनी कुटुम्बोंमें भी अब वैदिक लग्न चालू हो गये हैं। विवाहके अतिरिक्त चूडाकर्म, नामकरण संस्कार भी होते हैं। शेष संस्कार नहींके बराबर होते हैं। अंत्येष्टि संस्कार तो यहांके हिन्दू परिस्थितियोंके कारण छोड चुके थे। सभी हिन्दू अपने शवोंको गाड़ते थे। स्वामी शंकरानंदजी और स्वामी भवानी दयालजी ने मृत दाहकी प्रथाका अच्छा प्रचार किया। अब तो अधिकतर हिन्दू अपने शवोंको अग्निदाह देने लगे हैं। कई जगह अच्छे नवीन ढंगके श्मशान बन गये हैं। उनमें गोरे भी शवोंको जलाने लगे हैं। परन्तु श्मशान भूमिके लिए बडी कठिनाई होती है। कब्रस्तान प्रायः सर्वत्र हैं पर शवोंको जलानेके लिए श्मशान बनानेको भूमि नहीं मिलती। जनतामें धार्मिक भावनाएँ जागृत रखने के लिए संस्कारोंको अधिक व्यापक रूपमें चालू करनेकी आवश्यकता है।

विवाहका रजिस्ट्रेशन यहांकी यूनियन सरकारके कानूनके अनुसार कोई भी विवाह सरकारी दफ्तरमें रजिस्ट्री कराये बिना मान्य नहीं होता। इस लिए हिन्दू लोग अपनी धार्मिक विधिसे जो विवाह करवाते हैं, वे सरकारमें मान्य नहीं होते। जबतक कि उनकी रजिस्ट्री नहीं करवायी जाये। इस कारण कई स्त्रियोंको विवाहके बाद बड़ी मुसीबतें उठानी पडती हैं। कई मूर्ख और असंस्कारी युवक अपनी जिम्मेदारी न समझकर अपनी स्त्रीको त्याग देते हैं। ऐसी स्त्रीको फिर किसी तरहका हक नहीं रहता; क्योंकि उन की शादी धार्मिक विधिसे होनेपर भी वह सरकारमें मान्य नहीं है। यहांपर ईसाई और मुस्लिम विधिसे विवाह करानेवाले पादरियों और मौलवियोंको हक है कि वे जो शादी करावें उसका प्रमाणपत्र देकर उसे खुद सरकारमें रजिस्ट्री करा देवें। पर यह हक हिन्दू पुरोहितोंको नहीं है। यह हक उन्हें मिले इसके लिए कई प्रयत्न भी किये गये। ता. १५-२-४२की प्रतिनिधि सभा की वैदिक परिषद्में इसके लिए एक प्रस्ताव भी स्वीकृत किया गया था पर सरकारी कानून अभी तक नहीं बदला है। यहांकी हिन्दू महासभा भी इसके लिए प्रयत्न कर रही है। अभी इसके लिए जोरोंसे आन्दोलन करनेकी जरूरत है।

जातपात प्रारम्भमें यहांपर जातपातका प्रश्न हिंदुस्तान जैसा ही जटिल था। परंतु यहांकी परिस्थिति एकदम विभिन्न होनेसे यह प्रश्न बहुत कुछ सुलझ गया है। लोग ऊँचनीचका भेदभाव भूल रहे हैं। शादी–विवाह भी जातपातका ख्याल रखे बिना होने लगे हैं। कुछ पुरानी पीढ़ीके लोग अभी इसका ख्याल रखते हैं बाकी यह प्रश्न अब हल हो गया है। मद्रासी और गुजरातियोंके कुछ वर्गोंके लोग अभी इस प्रथाको चिपके हुए हैं। सदियोंका मानसिक विकार दूर नहीं हो पाता।

धर्मके प्रति श्रद्धा पुराने लोगोंमें रुढ़िवादके प्रति श्रद्धा थी। आर्य समाजके प्रचारने वैदिक सिद्धान्तोंके प्रति श्रद्धा बढ़ायी है। अभी लोग अज्ञान दशामें हैं। अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगोंमें अपने धर्मके प्रति श्रद्धा कम है। पर आजका सामान्य युवक अपनी जाति और धर्मके गौरवको समझने लगा है। अब हवन और यज्ञकी प्रथा बढ़ रही है। उपनिषद्की कथाओंका प्रचार भी बढ़ रहा है। गीता सप्ताहके मनाने और गीताके सिद्धान्तोंको समझनेकी कोशिश होती है। धार्मिक प्रवचन कर सकनेवाले स्वाध्यायशील उपदेशकों और विद्वानोंकी बहुत कमी है। इसी तरह धार्मिक साहित्यकी पुस्तिकाएँ भी नहीं है। उसके होनेसे धर्मके प्रति श्रद्धा बढ़ेगी। नित्य प्रति संध्या हवन करनेका प्रचार कम है। साप्ताहिक सत्संगमें उपस्थिति बहुत थोडी होती है।

वहम और अन्धश्रद्धा सामान्य जनतामें अभी तक अंध–श्रद्धा और वहम बहुत घुसे हुए हैं। लोग अभी तक जादू–टोने, तागे और तावीजोंके अंधविश्वासोंको छोड नहीं सके हैं। बीमारी और मुसीबतोंमें अभी इन बातोंपर लोग झुक जाते हैं। इसी तरहके दूसरे भी कई वहम चालू है। कुछ वर्षपर यहांके वेरुलम स्थानमें एक व्यक्तिने अपनेको कृष्णका अवतार घोषित किया। लोग भेडोंकी तरह उधर झुक पडे। सहस्रोंकी संख्यामें प्रति-दिन नरनारी उसके दर्शन और आशीर्वाद पाने वहां पहुंचते थे। दुःखी, बीमार, अपंग, अंधे उसके आशीर्वादसे चंगा होनेकी आशा रखते थे। पर वह पोप लीला अधिक न चल सकी। कई मंदिरोंमें पहले पशु बलि भी बहुत

होती थी। अब कम हो गई है। पर अब भी इस जमानेमें धर्मके नामपर कुछ मंदिरोंमें पशुबलि होती है।

व्यसन यहांके लोगोंका व्यसनोंने बुरी तरह पीछा पकडा हुआ है। सबसे भयंकर और बरबादी करनेवाला व्यसन मद्यपानका है। शायदही १० प्रतिशत पुरुष इससे मुक्त हों। इसी तरह घुडदौड और जुएका चस्का भी जोरोंसे चालू है। इससे लोगोंका आत्मिक और आर्थिक पतन हो रहा है। इन व्यसनोंके विरुद्ध बहुत कम और मन्द आवाज उठती है। आर्य प्रतिनिधि सभाने अपनी परिषदों और सम्मेलनोंमें इनके विरुद्ध आवाज उठायी है, पर उसका असर न के बराबर है।

धर्मपरिवर्तन और शुद्धि प्रारम्भमें हिन्दुओंके अज्ञानका तथा संगठनके अभावका लाभ उठाकर बहुतसे लोग ईसाई या मुसलमान बना लिये जाते थे। अब उस तादादमें धर्मपरिवर्तन नहीं होता फिर भी मुसलमान और ईसाई बननेवालोंकी संख्या अधिक है। गरीब हिन्दू परवश बनकर विधर्मियोंके जालमें फंस जाते हैं। बहुतसे नवयुवक खासकर अंग्रेजी शिक्षा पाये और मातृभाषाके ज्ञानसे वंचित युवक शादी आदिके लोभमें ईसाई बन जाते थे। पहले हिन्दूधर्मके सच्चे स्वरूपका ज्ञान न होनेसे अश्रद्धासे भी कई लोग हिन्दू धर्म छोड देते थे। परन्तु प्रचारकों और विद्वानोंके आते रहनेसे यह अश्रद्धा निकल गई है। लोगोंमें स्वधर्म और स्वजातिका अभिमान पैदा होने लगा है। स्वामी शंकरानंदजी तथा स्वामी भवानी दयालजी एवं दूसरे प्रचारकोंने यहांपर कई ईसाई और मुसलमानोंको शुद्ध करके आर्य बनाया है। इस दिशामें आर्य युवक सभा, दरबन भी बहुत सजग रही है। शुद्धिके इस कार्य को और अधिक वेग देनेकी आवश्यकता है। हिन्दू महासभा भी अब हिंदुओंके धर्मपरिवर्तनको रोकनेके लिए प्रयत्नशील रहती है। अभी वह दिन तो दूर है जब यहांके मूल निवासियोंमें आर्य धर्मका प्रचार किया जावेगा।

अध्याय आठवाँ.

शिक्षा तथा मातृभाषा

शिक्षाकी प्रारम्भिक दशा इस प्रदेशमें भारतीय लोग मजदूर रूपमें आकर कई वर्षोंसे बस गये थे। परंतु उनके बच्चोंकी शिक्षाका कोई प्रबंध न था। ईसाई मिशन द्वारा कुछ पाठशालाएँ चलायी जाती थीं। उनका ध्यान अपने धर्मके प्रचारकी तरफ ज्यादा रहता था। इसका असर भारतीय बच्चों पर बुरा पड़ता था। जब स्वामी शंकरानंदजीका आगमन इस देशमें हुआ तो उनका ध्यान शिक्षाकी ओर गया। सन् १६०६ में नाताल सरकारकी तरफसे एक शिक्षा कमीशन बैठा। स्वामी शंकरानंदजी इसके सामने साक्षी देने विशेषरूपसे निमंत्रित हुए। स्वामीजीने इस कमीशनके सामने महत्वपूर्ण बयान दिया। जिससे सबका ध्यान भारतीय लोगोंकी शिक्षाकी तरफ गया। इस सम्बंधमें स्वामीजी गवर्नर सर मेथ्यू नेथनसे भी मिले। उन्होंने जोर दिया कि हिन्दुस्तानियोंकी शिक्षा निःशुल्क हो और साथ ही अनिवार्य भी कर दी जावे। इस समय भारतीय बच्चे १४ वर्षकी उम्र तक ही शिक्षा पा सकते थे। इसके बाद वे कानूनसे शिक्षा पानेसे रोके जाते थे। स्वामीजीने इस उम्रकी कैदको हटानेके लिए बहुत प्रयत्न किया और इसमें वे सफल हुए। इस तरह स्वामी शंकरानंदजीने अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्योंके साथ ही शिक्षाके प्रश्नको भी सुलझाया था।

श्री श्रीनिवास शास्त्रीजीके प्रयत्न अब भी भारतीयोंकी शिक्षाका प्रश्न उपेक्षित ही रहता था। सरकार इस ओर कुछ ध्यान नहीं देती थी। हजारों बच्चे आवारेकी तरह इधर उधर घूमते फिरते थे। सन् १६२७ में शास्त्रीजी हिन्द सरकारके राजदूत बनकर इस देशमें आये। इनके समयमें शिक्षापर विशेष ध्यान दिया गया। नाताल सरकारकी तरफसे एक जांच कमीशन बैठा। इसमें भारत सरकारने भी अपने दो विशेषज्ञ भेजे।

नाताल इन्डियन कोंग्रेसने इस कमीशनके समक्ष अपना बयान दिया। इस कमीशनका फल अच्छा हुआ। तबसे सरकारने भारतीय बच्चोंकी शिक्षा की तरफ ज्यादा ध्यान दिया। शिक्षाके लिए अच्छी रकम खर्च करनेको निकाली। भारतीय लोगोंने भी अपनी शिक्षाके लिए अच्छा प्रयास किया। पाठशाला के मकानोंके लिए सरकारकी तरफसे खर्चकी आधी या तिहाई रकम मिलने लगी। इससे भारतीयोंने स्थान २ पर चंदा इकट्ठा करके पाठशालाके मकान बनाये। सरकारी सहायतासे वे पाठशालाएँ चलने लगीं। आर्य समाजकी संस्थाओंकी तरफसे भी कई सरकारी सहायता प्राप्त अंग्रेजी पाठशालाएँ चल रही हैं। भारतीय विद्यार्थियोंको मेट्रिक तकका ज्ञान मिले इसके लिए 'शास्त्री कोलिज' के नामसे विद्यालय खोला गया। जिसके लिए बीस हजार पौंड भारतीयोंने इकठ्ठे किये थे। यह विद्यालय सरकार चलाती है। इसके बन जाने से भारतीय युवक ऊँची शिक्षा पाने लगे। उनमें अबतक कई स्नातक भी बन चुके हैं। ये अच्छे अध्यापक बनने लगे हैं।

मातृभाषाकी शिक्षाका गंभीर प्रश्न श्री श्रीनिवास शास्त्रीजीने अंग्रेजी शिक्षाका प्रश्न तो हल कर दिया पर मातृभाषाका प्रश्न शास्त्रीजीने बिगाड दिया और यहांके भारतीयोंका बड़ा अहित किया। शिक्षा का जो जांच कमीशन सरकारने बिठाया था उसमें बयान देनेके सम्बंधमें विचार करनेको साऊथ आफ्रिकन इन्डियन कोंग्रेसने किम्बर्लीमें एक परिषद बुलायी। जिसमें पाठशालाओंमें मातृभाषाका क्या स्थान हो इस प्रश्न पर विचार होने वाला था।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारतीय मातृभाषाओंको स्थान देनेके लिए प्रस्ताव किये तथा कई अन्य संस्थाओं द्वारा ऐसे प्रस्ताव करवाये। इस परिषदमें स्वामी भवानी दयालजी भी उपस्थित थे। शास्त्रीजी ने इस परिषदमें मातृभाषाको पाठ्यक्रममें स्थान देनेके विरुद्ध भाषण दिया। परिषदका बहुमत उनके साथ हो गया। परन्तु श्री स्वामी भवानी दयालजी, श्री सोराबजी रुस्तमजी आदिने इस प्रश्नको पुनः विचारार्थ उपस्थित करवाया। इस बार शास्त्रीजीके देखते २ परिषदका मत बदल गया। बहुत बडी

संख्या मातृभाषाको स्थान देनेके पक्षमें होगई। इस प्रश्न पर जनतामें शास्त्रीजीका तीव्र विरोध हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभाने उग्र विरोधके प्रस्ताव करके सर्वत्र प्रचारार्थ बांटे। उसके तीन प्रतिनिधि श्री एस. एल. सिंह, श्री बी. एम. पटेल तथा श्री सत्यदेवजी कोंग्रेसकी शिक्षा उपसमितिमें भेजे गये। वहां पर उन्होंने शास्त्रीजीका घोर विरोध किया। यह तो वह जमाना था जब शास्त्रीजी जैसे विद्वान् हिन्दुस्तानके लिए भी राष्ट्रभाषाके रूपमें किसी देशी भाषाके होनेका स्वप्न नहीं देख सकते थे। शास्त्रीजीकी शिक्षा दीक्षा अंग्रेजीमें ही हुई थी, इससे वे अंग्रेजीकी मोहिनीमें मातृभाषाके महत्वको ठीक तरहसे समझ नहीं सके थे। जनताकी तीव्र मांग होनेपर भी शास्त्रीजीका बल पाकर यहांकी सरकारने मातृभाषाकी शिक्षाके सवाल को ठुकरा दिया। इस तरह मातृभाषाके हितमें एक भारतीय विद्वान्ने ही कुठाराघात किया। उसका फल आजतक भोगना पड रहा है। इसका नतीजा यह हुआ कि भारतीय भाषाओं को सिखानेका सारा बोझ जनतापर है। जिसके खर्चको उठाना बहुत कठिन है। इसीसे भारतीय भाषाएँ मृत प्रायः हो रही हैं। सरकारी पाठ्यक्रममें स्थान न होनेसे मातृभाषाओंको सीखना अनिवार्य नहीं है। अतः इसके बिना भारतीय संस्कृतिका लोप हो रहा है। अंग्रेजीके असरसे पाश्चात्य संस्कृति, रीति–रिवाज तथा ईसाई धर्म भारतीय घरोंमें तीव्र गतिसे घुस रहा है।

भारतीयोंकी भाषाएँ यहांपर आनेवाले भारतीयोंकी भाषाएँ अलग २ हैं। तामिल, हिन्दी, गुजराती और तेलगू बोलनेवाले लोग यहां आये हैं। मुसलमान लोग प्रायः गुजरातसे आये हैं, वे गुजराती बोलते हैं। पर आज अपनी जबान उर्दू बतलाते हैं। इस तरह कई भाषा बोलनेवाले यहां आये। वे अनपढ थे। उनमें कोई अंग्रेजी जानता न था। न वे एक दूसरे प्रांतवालों की बोली समझ सकते थे। उस समय हिन्दीने अपनी सहज सरलताके कारण एक भाषाके रूपमें यहां स्थान पा लिया था। परन्तु जैसे २ अंग्रेजी शिक्षाका प्रचार बढ़ता गया तथा देशसे आनेवाली पीढ़ीका स्थान यहांकी पैदा हुई संतानें लेने लगीं, हिन्दी तथा दूसरी मातृभाषाएँ पिछड गईं। अंग्रेजीकी महत्ता

अढ़ती चली गई। आज ३–४ पीढ़ीके बाद यह अवस्था है कि बहुतसे नव-युवक हिन्दी बोल नहीं सकते। हिन्दी भाषियोंमेंसे शुद्ध हिन्दी जाननेवाले नहींके बराबर हैं। छोटे लडके–लडकियाँ और स्त्रियाँ घरमें अक्सर अंग्रेजीमें बोलने लगी हैं। ऐसी ही हालत रही तो हिन्दी तथा दूसरी भारतीय भाषाएँ और एक दो पीढ़ीके बाद समाप्त हो जावेंगी। आज हिन्दी आदिका जो प्रचार होता है वह मुकाबिलेमें बहुत ही कम है।

हिन्दीका प्रारम्भिक प्रचार : पं. भवानी दयालजी

मातृभाषाके प्रचारकी तरफ सबसे पहला ध्यान श्री स्वामी शंकरानंदजीने खींचा। आपने मातृभाषाकी शिक्षाके महत्वपर कई प्रभावशाली व्याख्यान दिये। जिसके फलस्वरूप हिन्दीकी कुछ पाठशालाएँ चालू की गयी थीं।

हिन्दी प्रचारमें महत्वपूर्ण कार्य पं. भवानी दयालजीने किया। ये बच-पनमें देशसे हिन्दीका अच्छा ज्ञान पाकर आये थे। यहांपर आकर उन्होंने स्थान २ पर घूमकर हिन्दीके लिए व्याख्यान दिये। कई हिन्दी प्रचारिणी सभाओंकी स्थापना की। एक हिन्दी आश्रम खोला। सन् १९१६ में पंडित जीके प्रयत्नोंसे सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन लेडीस्मिथ नगरमें हुआ। पंडितजी इसके मंत्री थे। बाबू रघुनाथ सिंह प्रधान और आर. जी. भल्ला स्वागताध्यक्ष थे। दूसरा सम्मेलन १९१७ में पीटर मेरित्सबर्गमें हुआ। जिस के अध्यक्ष बाबू हरदेव सिंहजी तथा स्वागताध्यक्ष श्री डी. के सोनी थे। पं. भवानी दयालजीने दोनों सम्मेलनोंकी सफलताके लिए बहुत परिश्रम किया था। इस व्यापक प्रचारसे हिन्दीकी जड़ जम गई। पंडितजीने आर. जी. भल्लाके 'धर्मवीर' साप्ताहिकका सम्पादन भी किया। परन्तु उससे भी महत्व-पूर्ण कार्य उन्होंने 'हिन्दी' नामक साप्ताहिकके प्रकाशनका किया। पंडितजी तथा उनकी पत्नी श्रीमती जगरानी देवीने इस पत्रको चालू करनेके लिए अत्यधिक श्रम लिया। इस पत्रका प्रथम अंक प्रकाशित होनेसे पूर्व ही जग-रानीजीका देहान्त हो गया। पंडितजीने चार वर्षों तक 'हिन्दी' का अच्छी तरह सम्पादन किया और वह यहांपर तथा अन्य उपनिवेशोंमें भी प्रसिद्ध हो गया था। स्वामी भवानी दयालजीका पिछला जीवन अधिकतर राजनीतिक

कार्योंमें गुजरा। इससे हिन्दी प्रचारका कार्य कुछ पिछड़ गया।

आर्य प्रतिनिधि सभाके हिन्दी प्रचारक प्रयत्न

प्रतिनिधि सभाके कार्योंमें एक प्रधान कार्य मातृभाषा हिंदीके प्रचारका भी रहा है। इससे इसके उत्सवों तथा परिषदोंमें हमें हमेशा मातृभाषाके प्रचार के लिए प्रस्ताव मिलते हैं। प्रतिनिधि सभाने आग्रह रखा है कि उसकी सभी कार्यवाही हिन्दीमें हो। इसी तरह उसने अपनी सम्मिलित संस्थाओं द्वारा हिंदी पाठशालाएँ चलानेपर खास जोर दिया है। आज प्रांत भरमें जितनी हिंदी पाठशालाएँ हैं उनमें अधिकतर प्रतिनिधि सभाकी संस्थाएँ चला रही हैं। इन पाठशालाओंमें एक पाठविधि रहे, इसके लिए भी प्रतिनिधि सभाने प्रयत्न किया है। ता. १८–११–४५ के दिन आवश्यक महाधिवेशन बुलाकर एक प्रकारकी पाठविधि तय की गयी थी।

पं. नरदेवजी वेदालंकार
हिन्दी शिक्षा संघकी स्थापना

सन् १९४७ के आखिरमें पं. नरदेवजी वेदालंकारका इस देशमें शुभागमन हुआ। पंडितजी इस देशमें आनेसे पूर्व भारतमें (सूरतमें) हिन्दी प्रचारका ही कार्य करते थे। पं. नरदेवजी यहां गुजराती अध्यापकके तौरपर आये हैं फिर भी हिंदीके प्रचारके लिए प्रयत्नशील हैं। उन्होंने यहांकी परिस्थिति समझकर हिंदी प्रचारकी एक स्वतंत्र संस्थाकी स्थापनाके लिए संमति दी। आर्य प्रतिनिधि सभाने पंडितजीकी सलाहसे २४, २५ अप्रैल १९४८ को एक हिंदी सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलनमें हिंदी प्रचार करनेवाली सभी संस्थाओंको निमंत्रित किया गया। सम्मेलनका उद्घाटन पं. नरदेवजीके शुभ हस्तोंसे हुआ। इस सम्मेलनमें हिंदी प्रचारके लिए 'हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल' नामकी स्वतंत्र संस्थाकी स्थापना हुई। मतमतान्तरोंके भेदभावोंको छोडकर इसमें सबका सहयोग लिया गया। इस सम्मेलनमें 'हिन्दी शिक्षा संघ' की नीतिके रूपमें मुख्यतया तीन बातें स्वीकार की गयीं। (१) नातालकी सभी हिंदी पाठशालाओंको संघमें सम्मिलित किया जावे। (२) सभी पाठ-

द्वितीय दक्षिण आफ्रिका हिन्दी साहित्य सम्मेलन सन् १९१७

हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल

प्रथम वर्ष (सन् १९४९) के पदाधिकारी तथा 'राष्ट्रभाषा प्रवेश' परीक्षा (वर्धा) में उत्तीर्ण विद्यार्थी

शालाओंमें एक जैसी पाठविधि और परीक्षा प्रणाली चालू की जावे। (३) हिंदी भाषाकी शिक्षाके अतिरिक्त हिंदीमें भारतवर्षका इतिहास, भूगोल, धर्मशिक्षा तथा सामान्य गणित भी सिखाया जावे। संघके सभापति पं. नरदेव जी वेदालंकार तथा संयुक्त मंत्री श्री सुखराज छोटई (सहायक मंत्री आ. प्र. सभा) और पं. बी. जे. महाराज निर्वाचित हुए।

हिन्दी शिक्षा संघने अपनी नियमावली बनाकर अपना कार्य चालू कर दिया है। जनवरी १९४९ में संघके सभापति तथा मंत्रीने सारे नाताल प्रांत में हिन्दी प्रचार यात्राका कार्यक्रम बनाया था। परंतु उन्हीं दिनोंमें भीषण आफ्रिकन–भारतीय दंगोंके कारण वह बीचमेंसे छोड देना पडा था। संस्था के प्रारंभकालमें ही इन दंगोंके होनेसे संघकी प्रगतिमें बहुत रुकावट आई है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्वामी भवानी दयालजी ने सन् १९१६–१७ में हिन्दी साहित्य सम्मेलनका आयोजन किया था। उसके बाद संघकी तरफसे १७ अक्तूबर १९४८ को प्रथम नाताल प्रान्तीय हिंदी साहित्य सम्मेलनका आयोजन किया गया। सम्मेलनके सभापति श्री बी.एम. पटेल तथा उद्घाटनकर्ता श्री बी. परमेश्वर थे। सम्मेलनमें पाठशालाओंके संघ-ठनपर पं. द्वारिका महाराज (सभापति, श्री सनातन धर्म सभा, नेटाल) ने, भारतीयोंकी एक भाषापर डॉ. एन, पी. देसाई (सभापति, द. आ. हिंदू महासभा) ने तथा 'हिंदी साहित्यका इतिहास तथा महत्व' पर पं. नरदेवजी वेदालंकारने व्याख्यान दिये। इन विषयोंपर प्रस्ताव भी स्वीकृत हुए। यह सम्मेलन सफलताके साथ हुआ।

आज हिन्दी शिक्षा संघमें १७ हिंदी पाठशालाएँ सम्मिलित हो गयी हैं। सबके लिए एक पाठविधि तैयार हो चुकी है। संघकी देखरेखमें नियमित और व्यवस्थित कार्य होने लगा है।

राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर हिंदीके प्रचारको स्थायी बनानेके लिए योग्य हिंदी अध्यापक पानेके उद्देश्यसे दरबन तथा मेरित्सबर्गमें राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर खोले गये हैं; जिनमें अध्यापक और नवयुवक भाई

बहन हिंदी शिक्षा ले रहे हैं। इनमें क्रमशः पं. नरदेवजी वेदालंकार तथा पं. जगमोहनजी विद्यारत्न अध्यापन कार्य करते हैं। यहांपर भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओंके लिए तैयारी करवायी जाती है। सितंबर १९४८ में सर्वप्रथम वार इस देशमें हिंदीकी परीक्षाएँ भारतवर्षसे ली गयीं। इनमें उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको ता. ७–८–४९ को मेरित्सबर्गके केन्द्रमें श्री जी. विशुनके तथा दरबनमें ता. २१–८–४९ को श्री एम. रामावतारके करकमलों से बडे समारोहके साथ प्रमाणपत्र दिये गये। इस तरह हिन्दी शिक्षा संघका कार्य ठीक तरहसे चलने लगा है। आशा है इस संस्थाके द्वारा हिन्दी प्रचार का काम जीवित जाग्रत रहेगा।
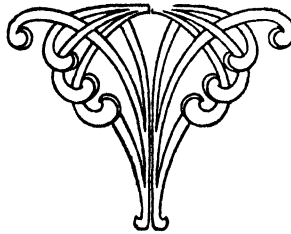
अध्याय नौवाँ.

पिछले आर्य प्रचारक

प्रो. रलाराम एम. ए.

डी. ए. वी. कॉलेजके प्रोफेसर श्री रलाराम एम. ए. का शुभागमन यहांपर सन् १९३१ में हुआ। वे स्व. मोहकमचंदजी वर्मनके प्रयत्नोंसे यहां आये थे। उन्होंने डरबन सेंट्रल आर्यसमाजकी तरफसे प्रचार कार्य प्रारम्भ किया था। यह संस्था आर्य प्रतिनिधि सभामें सम्मिलित न थी। प्रोफेसरजी के कार्यको व्यापक बनानेके लिए आर्य प्रतिनिधि सभाका सहयोग आवश्यक था। इससे सेंट्रल आर्यसमाज सभामें सम्मिलित हो गया और सभाके सहयोगसे वे कार्य करने लगे। प्रो. रलाराम अंग्रेजी और हिन्दीके उच्च व्याख्याता थे। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तोंपर स्थान २ पर घूमकर उच्च कोटिके व्याख्यान दिये। वे नातालके पीटर मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ, डंडी आदि नगरोंमें भी प्रचार कार्यके लिए गये। नाताल प्रांतमें प्रचार करके प्रोफेसरजी ट्रांसवाल और केप प्रांतमें भी गये। जहां अनेक स्थलोंपर उनके व्याख्यान हुए। जब प्रो. रलाराम स्वदेश जाने लगे तो ता. १९ मार्च १९३२ को आर्य प्रतिनिधि सभाने उन्हें विदायमान देना चाहा था परन्तु प्रतिकूलतासे यह कार्य नहीं हो सका था।

स्व. लाला मोहकमचन्द वर्मन दक्षिण आफ्रिकाके आर्य सज्जनोंमें स्व. लाला मोहकमचंद वर्मनका नाम चिरस्मरणीय रहेगा। श्री वर्मन आर्यसमाजके भक्त थे और आर्यसमाजके प्रचारके लिए सदा प्रयत्न करते रहे। प्रो. भाई परमानंदजीसे लेकर जो प्रचारक यहां पधारे उनमेंसे बहुतोंको यहां लानेमें श्री वर्मनका ही प्रयत्न रहा है। इसके लिए उन्होंने खुद धन भी दिया और चन्दा इकट्ठा किया। वैदिक साहित्यकी पुस्तकोंका इस

देशमें प्रचार करनेका श्रेय भी उन्हींको है। श्री वर्मन १६४८ में भारत गये और वहां उनका देहान्त हो गया। उन्होंने अपनी आधी सम्पति हिन्दुओं में धर्म और शिक्षा आदिके प्रचारके लिए दी है।

वैदिक मिशनरी पं. जैमिनी मेहता

श्री जैमिनी मेहता प्रसिद्ध आर्य प्रचारक हैं। विदेशोंमें घूम २ कर आर्य सिद्धान्तोंका प्रचार करनेवालोंमें श्री मेहताजीका नाम बहुत आगे आता है। वे इन्डोनेशिया, जापान, अमेरिका, वेस्ट इन्डीज़के द्वीपोंमें तथा पूर्व आफ्रिका, जंजीबार और दक्षिण आफ्रिका आदि कई देशोंमें आर्य धर्मका प्रचार कर चुके हैं। पूर्व आफ्रिकासे वे यहां आना चाहते थे। उस समय प्रतिनिधि सभाकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होनेसे सभा उन्हें नहीं बुला सकी। तब श्री लाला मोहकमचंदजीके प्रयत्नोंसे वे सन् १६३४ में यहां आये।

श्री जैमिनी मेहता यहांपर प्रचार कार्य करने लगे। उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानोंकी धाक बैठ गयी। वे आर्य संस्कृति और उसके विश्वव्यापी प्रचार पर गवेषणापूर्ण व्याख्यान देते थे। उन्होंने परदेशोंमें बहुत भ्रमण किया था और वहांके अनुभवोंसे ऐतिहासिक दृष्टिसे आर्य सभ्यताके प्रचारपर महत्वपूर्ण व्याख्यान देते थे। उनकी स्मृति बहुत तेज थी और सन् तथा तारीखों के हवाले देकर उसे पुष्ट करते थे। मेहताजीके व्याख्यान बहुत लोकप्रिय हुए। यहांतक कि व्याख्यानके निमन्त्रणपत्र भी छपवाने न पडते थे और अगले व्याख्यान की मौखिक सूचनामात्रसे जनता बडी संख्यामें उपस्थित हो जाती थी। यहांकी प्रायः सभी संस्थाओंने उनके व्याख्यान करवाये थे। हिन्दू महासभाकी तरफसे उनके कई भाषण हुए। सन् १६३४ में उन्होंने हिन्दू महासभाकी कोन्फ्रेंसका उद्घाटन किया था। आर्य प्रतिनिधि सभाने भी उन का स्वागत किया था। श्री जैमिनी मेहताने यहांपर वैदिक साहित्यका भी अच्छा प्रचार किया। उनके आनेसे पूर्व चारों वेद यहांपर पाना मुश्किल था। उन्होंने वेदोंकी कई प्रतियां यहां प्रचारित की थीं। अन्य भी कई पुस्तकोंका प्रचार करनेमें वे सफल हुए थे।

वैदिक मिशनरी महेता जैमिनीजी
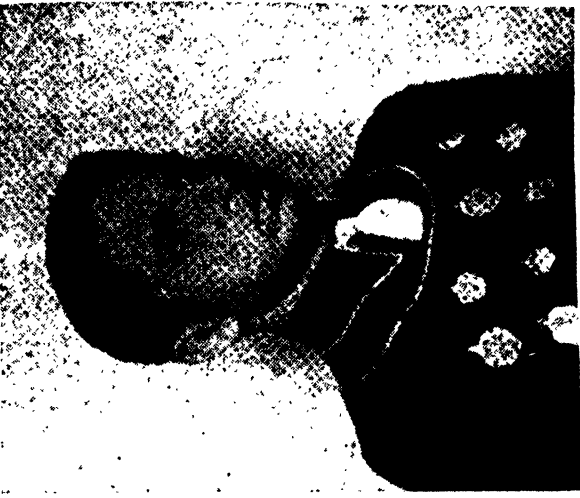
योगी प्रो. यशपालजी
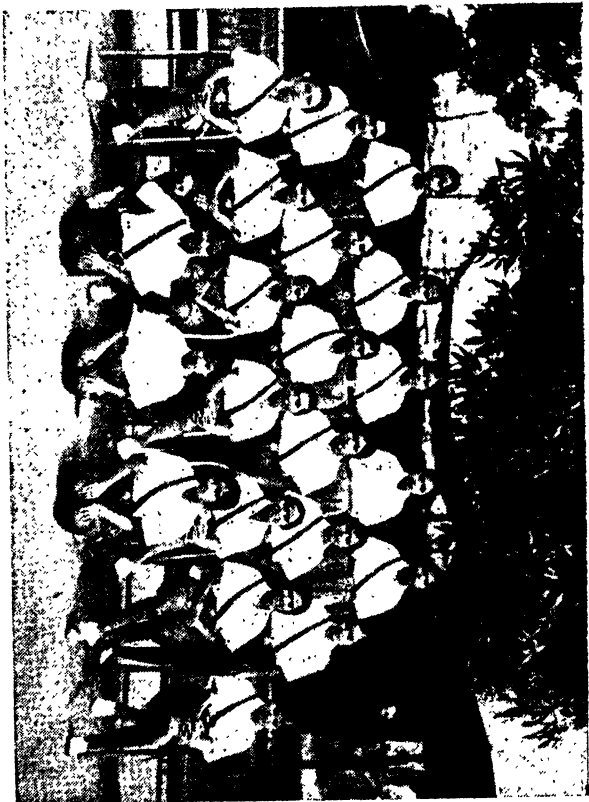
आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा की छात्राएं

आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदाकी प्रचार यात्रा

ता. १८ जुलाई १९३४ को पं. आनन्दप्रियजीकी अध्यक्षतामें बडौदा आर्य कन्या महाविद्यालयकी छात्राएँ दक्षिण आफ्रिकामें उतरीं। बन्दरगाहपर इनका अच्छा स्वागत हुआ। इनके जाहिर स्वागतके लिए विक्टोरिया सिनेमा गृहमें सभा हुई। इन कन्याओंको सूरत हिन्दू एसोसियेशनके हॉलमें उतारा दिया गया।

दूसरे दिनसे ही प्रचार कार्य शुरू हो गया। इन कन्याओंका सारा कार्य क्रम आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे रखा गया था। सभाके प्रधान आर.के. केपिटनने इनके भोजन, निवास और प्रचार यात्राकी व्यवस्था करनेमें पूरा सहयोग दिया। इन कन्याओंके व्यायाम आदिके दो कार्यक्रम सीटी होल, दरबनमें टिकिट रखकर ता. २५ जुलाई और ६ अगस्तको रखे गए। जिनमें ३ हजार नरनारी उपस्थित थे। इनमें बहुतसे यूरोपियन भी थे।

यूरोपियनोंके दरबन गर्ल्स हाई स्कूलमें इन कन्याओंको दो बार विशेष रूपसे निमंत्रित किया गया। यूरोपियन महिलाएं और कन्याएं इनके कार्यक्रम को देखकर बहुत प्रभावित हुई। हाईस्कूलकी मुख्याध्यापिकाने इनकी मुक्त कंठसे प्रशंसा की। इसी तरह एक खास खेल दक्षिण आफ्रिकाके गवर्नर जनरल श्री अर्ल ओफ एथलोनके यहांसे ब्रिटनको बिदा होते समय रखा गया था। इसका भी बहुत अच्छा प्रभाव हुआ। ता. १० नवम्बरके दिन व्यायाम का एक सार्वजनिक कार्यक्रम यहांके भारतीय क्रीडांगणमें हुआ। जिस समय १० हजारके लगभग उपस्थिति थी। इतनी भारी जनमेदनी यहां शायद ही कभी होती है।

दरबनमें अपना सिक्का जमाकर ये आर्य कन्याएँ दक्षिण आफ्रिका और रोडेशियाके लिए निकल पडीं। इस यात्राके लिए यहांकी रेल्वेने भी इन्हें विशेष सुविधा कर दी थी और किराया कम कर दिया था। इनका कार्यक्रम जोहानिसबर्ग, प्रिटोरिया, बुलवायो, सोल्सबरी, केपटाउन, पोर्ट एलिज़ाबेथ, इस्ट लंडन, न्यूकासल, लेडीस्मिथ, डेनहाउजर, ग्लेंको, मेरित्सबर्ग, स्टेंगर आदि स्थलोंपर रखा गया। इस सारी यात्रामें कन्या महाविद्यालयको ५०००

पौंडसे भी ज्यादा रकम मिली। ये कन्याएँ जहां जातीं, अपने व्यायाम और संगीतके खेल दिखातीं तथा वैदिक धर्मका प्रचार भी करती जाती थीं।

प्रचारका प्रभाव बडौदाकी इन आर्य कन्याओंके प्रचारका बहुत गहरा प्रभाव हुआ। यहांके यूरोपियनों और भारतीय लोगोंने भी कन्याओंके ऐसे प्रयोग देखे न थे। जब लोग इन कन्याओंको धनुष बाण और बंदूकसे निशाना मारते, लाठी और छूरेके दाव खेलते, गरबा और संगीत का गान–नृत्य करते, घुडसवारी और सामूहिक व्यायाम करते तथा छटादार जोशीले व्याख्यान देते देखते तो दंग रह जाते थे। साड़ीकी लपटनोंमें लिपटी हुई, परदे और घूंघटमें बंद भारतीय स्त्रियोंकी कल्पना करनेवाले, सैनिक पोशाकमें सज्ज इन कन्याओंको देखकर मुग्ध हो उठते थे।

इन कन्याओंने यहांके समाजमें गहरा असर छोड़ा। आर्य संस्कृति और भारतीय नारीकी कल्पनाको ऊँचा उठाया। यूरोपियन लोगोंमें भारतीयों का गौरव बढ़ाया। इन कन्याओंका सर्वत्र हार्दिक स्वागत हुआ। इन्हें कई पार्टियाँ और प्रीतिभोज दिये गये। यहांके भारतके राजदूत श्री कुँवर महाराज सिंहने भी इन्हें पार्टी दी। इनके कार्यक्रम प्राय: सर्वत्र नगरके मेयरकी अध्यक्षतामें होते थे। ता. ११–११–२४ को आर्य धर्मका विजय डंका बजाती हुई ये कन्याएँ बडे सन्मानसे यहांसे बिदा हुईं।

योगी प्रो. यशपालका आगमन

जून १९३७ में प्रोफेसर यशपालका आगमन इस देशमें हुआ। इनका कार्यक्रम भी प्रतिनिधि सभाकी तरफसे रखा गया। सभाकी ओरसे ता. १०–६–३७ को योगीजीका जाहिर स्वागत हुआ। इन्होंने अपने यौगिक प्रदर्शनों तथा धनुर्विद्याके खेलों के द्वारा प्रचार किया। सबसे पहले इन्होंने यहांके गण्यमान्य यूरोपियन और भारतीय लोगोंको अपने प्रयोग करके बतलाये। जिनमें दरबनके मेयर, चीफ मेजिस्ट्रेट आदि कई महाशय थे। ता. २० जूनको योगी यशपालने भारतीय क्रीडांगणमें १ घंटा २० मिनटके लिए जमीनमें समाधि ली। बडी सफलतासे उन्होंने योगके इस प्रयोगको कर दिखाया। इस रूपसे इस देशमें योगके द्वारा

समाधि लेनेवाले प्रोफेसर यशपाल सर्वप्रथम व्यक्ति हैं। इसे देखने बहुतसे यूरोपियन लोग भी आये थे।

धनुर्विद्याके खेलोंमें भी प्रो. यशपाल बहुत निपुण थे। वे बारीकसे बारीक निशाने ताकते थे। अन्धेरेमें घोडेके बालको वेधना, शब्दवेधी निशान मारना, आंखोंपर रुपया रखकर उसे गिराना आदि उनके निशानोंको देखकर लोग आश्चर्य मुग्ध हो जाते थे।

दरबनके अतिरिक्त प्रोफेसरजीके कार्यक्रम मेरित्सबर्ग, ग्लेंको, वेरुलम, लेडीस्मिथ, डेनहाउजर, जोहानिसबर्ग आदि शहरोंमें भी हुए। इन्होंने सब जगह योग, प्राणायाम, समाधि तथा धनुर्विद्याके प्रयोग कर दिखाये। जिस से लोगोंको योग और प्राणायामकी महत्ता मालूम हुई। प्रोफेसरजी जहां जाते, वैदिक धर्म और आर्य संस्कृतिका प्रचार भी करते। २४ अक्तूबरको वे स्वदेश लौट गये। तब इन्हें अच्छा विदायमान दिया गया।

पं. ऋषिरामजी बी. ए.

पं. ऋषिरामजी सन् १९३७ में इंग्लैंडमें वैदिक धर्मके प्रचारके लिए गये हुए थे। श्री मोहकमचंदजी वर्मन आदि आर्य सज्जनोंके प्रयत्नसे पंडितजी को यहांपर द. आ. हिन्दू महासभाने धर्म प्रचारके लिए बुलाया। पंडितजीके स्थान २ पर व्याख्यान होने लगे। पंडितजी वेद, उपनिषद और गीताके अच्छे अभ्यासी हैं। महात्मा गांधीजी और रवीन्द्रनाथ ठाकुरपर भी पंडित जीका गहरा अध्ययन है। उनकी धार्मिक दृष्टि बड़ी विशाल रही है। उन्हों ने यूरोपियनोंपर भी अच्छा असर डाला। कुछ दिनों तक पंडितजीने स्वा-ध्याय मंडल (Study Group) में गीता और उपनिषद्पर माननीय प्रवचन किये। थियोसोफिकल सोसायटीमें भी पंडितजीने कई व्याख्यान दिये। पंडितजीके व्याख्यानोंका असर युवक वर्गपर उत्तम हुआ। कई भारतीय और यूरोपियन लोग पंडितजीसे धार्मिक चर्चा करने नित्य प्रति आते रहे। ता. ४ अगस्त १९३७ के दिन आर्य प्रतिनिधि सभाने पंडितजीका जाहिर स्वागत किया था।

गांधी-टागोर लेक्चरशिप ट्रस्ट यहांके भारतीयोंको सदा ही किसी विद्वान प्रचारकका लाभ मिलता रहे ऐसे स्थायी प्रबंधके लिए पंडित ऋषिरामजीने एक बहुत सुन्दर योजना बनाई। पंडितजी अपनी पहली यात्रा में इसका श्रीगणेश कर गये थे। वे सन् १९४५में पुनः इस देशमें आये और उन्होंने इस योजनाको पूर्ण किया। पंडितजीने दक्षिण आफ्रिकासे ६००० पौंड एकत्र किये और उसके लिए यहींपर एक ट्रस्ट बना दिया। उसका नाम रखा—'गांधी-टागोर लेक्चरशिप ट्रस्ट'। ये छः हजार पौंड व्याजपर रखे गये। जिससे प्रतिवर्ष करीब ३५० पौंडकी आय होती है। इस रकमसे प्रति वर्ष एक एक विद्वान प्रचारक भारतसे आया करेगा। उसके मार्ग-व्यय आदि का खर्च दिया जावेगा और उसे पारिश्रमिक पुरस्कारके रूपमें १५० पौंड दिये जावेंगे। इस प्रकारकी योजनासे खर्चका प्रश्न और प्रतिवर्ष चंदा इकट्ठा करनेका झंझट दूर हो गया है। १९४५ में पं. ऋषिरामजी इसी ट्रस्टकी तरफ से आये थे। इस ट्रस्टसे आनेवाले पहले सात प्रचारकोंकी पसंदगी पं. ऋषि-रामजी करेंगे। तदनन्तर वे सातों मिलकर नये प्रचारकोंको चुनेंगे।

दूसरी बार पं. ऋषिरामजी जब आये तो ता. २८-६-४५ को प्रति-निधि सभा तथा अन्य कई संस्थाओंने उनका विभिन्न स्थलोंपर स्वागत किया। ता. १० जुलाई १९४५ से एक व्याख्यान माला चालू की गई। जिस में पंडितजीने आठ व्याख्यान दिये। ये व्याख्यान भारतीय तत्व ज्ञान, मानव धर्म, आध्यात्मिकता आदिपर होते थे। व्याख्यान बडे उच्च कोटिके थे। उप-स्थिति सब दिन बहुत अच्छी होती थी। प्रतिदिन विभिन्न जातियोंके विद्वान अध्यक्षपद ग्रहण करते रहे थे। इन व्याख्यानोंने श्रोताओंके मानस तलको ऊँचा उठानेमें बडी सहायता पहुंचायी।

इस व्याख्यान मालाके अतिरिक्त निम्न लिखित संस्थाओंकी तरफसे दरबनमें भाषण और स्वागत समारम्भ रखे गये थे: आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल; सनातन धर्म सभा, नाताल; आर्य युवक सभा; सूरत हिंदू एसोसियेशन; काठियावाड हिंदू सेवा समाज; प्रार्थना मंडल; थियोसोफिकल सोसायटी; दरबन इन्टरनेशनल क्लब; तामिल वेलफेयर सोसायटी; द. आ. आन्ध्र महा

गांधी-टागोर लेक्चरशिप ट्रस्टके संस्थापक

पंडित ऋषिरामजी, बी. ए.

डॉ. एन. पी. देसाई

द. आ. हिन्दू महासभाके अध्यक्ष सन् १९४७–१९४८

श्री मोहकमचंदजी वर्मन

आर्य प्रचारकोंके निमंत्रणदाता

सभा; आर्य युवक समाज, क्लेरवुड; मेकोर्ड जूलू हॉस्पिटल; सनातन धर्म सभा, सिडनम आदि।

डरबनके अतिरिक्त नातालके निम्न लिखित शहरों और कस्बोंमें जाकर भी पंडितजीने भाषण दिये थे: वेरुलम, टोंगाट, चाकस्क्राल, स्टेंगर, पीटर मेरित्सबर्ग तथा आसपासकी ८–१० बस्तियां, लेडीस्मिथ, न्यूकासिल, डंडी डेनहौज़र आदि।

नातालकी प्रचार यात्रा समाप्त करके पंडितजी ट्रांसवाल प्रांतमें गये। वहांपर जोहानिसबर्ग और प्रिटोरियामें कई भाषण हुए। प्रिटोरियामें यूरोपियनोंने बड़े चावसे उनके भाषण सुने थे। वहां थियोसोफिकल सोसायटीने भी पंडितजीसे अच्छा लाभ उठाया था। ट्रांसवालके बाद पंडितजी केप प्रांत की यात्राके लिए गये। इस प्रांतमें इस्ट लंडन, पोर्ट एलिज़ाबेथ, केपटाउन और किम्बर्ली आदि शहरोंमें प्रचार किया। इन सब स्थलोंपर शहरके मेयर पंडितजीके स्वागतके लिए आते थे और उनके लिए प्रीतिभोजकी व्यवस्था करते थे। दक्षिण आफ्रिकासे पंडितजी पोर्चुगीज इस्ट आफ्रिका गये। वहां लोरेन्सो मार्क्समें कई व्याख्यान हुए थे।

इस तरह पंडित ऋषिरामजीने कुछ मास यहांपर रहकर अच्छा प्रचार कार्य किया। सब जगह अच्छी जाग्रति हुई। पंडितजीने भारतीयोंका ध्यान यहांके मूल निवासी लोगोंकी तरफ भी खींचा और उनके प्रति सहानुभूति और समभाव रखनेके लिए सदा प्रेरणा देते रहे। उसके प्रतीक स्वरूप उन्हों ने ६०० पौंड चन्दा भारतीयोंने इकट्ठा करवाकर ६ जूलू संस्थाओंमें दान दिलवाया। भारतीयोंकी ओरसे यह ऐसा पहलाही प्रयत्न किया गया था। पंडितजीने पूर्व आफ्रिका, जंजीबार एवं वेस्ट इन्डीज़ आदि देशोंमें बसे हुए भारतीयोंमें भी वैदिक धर्मके प्रचारका बड़ा कार्य किया है। जब वे पूर्व आफ्रिका गये तो वहां केनिया, युगांडा, टांगानिका और जंजीबारमें प्रचार कार्य किया। वहांपर भी 'पूर्व आफ्रिका गांधी टागोर सोसायटी' स्थापित की।

पं. नरदेवजी वेदालंकारका शुभागमन

दरबनकी गुजराती संस्था सूरत हिन्दू एज्युकेशनल सोसायटीने अपने यहां पं. नरदेवजी वेदालंकारको अध्यापक रूपसे बुलाया है। पंडितजी ता. २४-११-४७ को यहां पहुंचे। पं. नरदेवजी गुरुकुल कांगडीके सुयोग्य स्नातक हैं। यद्यपि वे गुजराती पाठशालामें आये हैं फिर भी उनका लाभ यहांके सभी भारतीयोंको मिल रहा है। अबतक यहां जितने प्रचारक आये प्रायः वे सब बहुत अल्पकालके लिए यहां रहे। पं. नरदेवजी ५-६ सालके लिए आये हैं। इससे स्थायी रूपसे इनका लाभ जनताको मिल रहा है।

पंडितजी समय २ पर यहांके विभिन्न स्थलोंमें वैदिक सिद्धान्तोंका प्रचार कर रहे हैं। दीपावली, रामनवमी, जन्माष्टमी आदि त्यौहारों तथा उत्सवोंपर यहांकी संस्थाएँ उनका लाभ उठानेसे नहीं चुकतीं। इन्होंने संस्कारों तथा उपनिषद् कथाओंका भी अच्छा प्रचार किया है।

पं. नरदेवजीका सबसे महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी प्रचारका है। इनकी ही प्रेरणासे आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित हिन्दी सम्मेलनमें हिन्दी शिक्षा संघ, नातालकी स्थापना हुई है; जिसके पंडितजी सभापति हैं। पंडितजीके लम्बे कालके निवासका एक यह बडा फायदा हुआ कि वे हिन्दी अध्यापकोंको हिन्दीकी शुद्ध तथा उच्च शिक्षा दे रहे हैं। पहले ऐसी कोई सुविधा नहीं थी। पंडितजीकी प्रेरणासे दक्षिण आफ्रिकामें ही नहीं अपितु सारे आफ्रिका महाद्वीपमें हिन्दीका व्यवस्थित प्रचार होने लगा है और राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धाके १०-१२ केन्द्र थोडे समयमें ही सारे महाद्वीपमें खुल गये हैं और भी कई केन्द्र खुल रहे हैं।

पंडितजीने यहांके सूरत हिन्दू एसोसियेशनके द्वारा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ १९४९ की दीपावलीके शुभ पर्वपर करवाया। महाराज केशवराम त्रिवेदी इनके सहयोगी थे। ऐसा महायज्ञ दक्षिण आफ्रिकामें सर्वप्रथम हुआ। इसी एसोसियेशनके भवनमें इन्होंने साप्ताहिक बृहद् यज्ञ भी चालू किया है। मदिरापानको रोकनेके लिए पंडितजीने गुजरातियोंमें 'मद्य निषेध व्रत' चालू

किया है। शीघ्रही इस व्रतका प्रचार यहांके समस्त भारतीयोंमें करनेका इनका इरादा है। इसी तरह पंडितजीने प्रवासी भारतीय बच्चोंको हिन्दू धर्मकी, आर्य संस्कृतिकी तथा राष्ट्रीयताकी शिक्षा मिल सके इसके लिए 'धर्मशिक्षा पाठावली' की योजना तैयार की है। इसके गुजरातीके दो भाग छप चुके हैं। हिन्दीके अनुवाद भी छप रहे हैं। बच्चोंके पाठ्यक्रमके आधारपर क्रमशः विकासके अनुकूल ये भाग लिखे गये हैं। धर्मशिक्षाकी ये पुस्तकें यहांके अतिरिक्त पूर्व आफ्रिका, पोर्चुगीज़ इस्ट आफ्रिका, रोडेसिया, अरबस्तान आदि कई जगहोंपर भारतीय बच्चोंके पाठ्यक्रममें चलने लगी हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा प्रकाशित पंडितजी लिखित 'राष्ट्रभाषाका सरल व्याकरण' भी यहांपर हिन्दी सिखानेमें उपयोगी हो रहा है।

पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए.

आर्य प्रतिनिधि सभाने ता. १५ फरवरी १९५० के दिन होनेवाली अपनी रजत जयन्तीके शुभ अवसरके लिए पं. गंगाप्रसादजी उपाध्यायको यहांपर बुलाया। वे ता. ३०-१२-४९ के दिन यहांपर पधारे। यह पहला अवसर है जब सार्वदेशिक सभाका कोई पदाधिकारी यहांपर आया हो। पंडित जी आर्यसमाजके नेता हैं और उद्भट विद्वान हैं। उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजीमें वैदिक साहित्य संबन्धी बहुतसी पुस्तकें लिखी हैं।

ता. २-१-५० के दिन पं. गंगाप्रसादजी उपाध्यायका आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे जाहिर स्वागत किया गया। उसके बाद पंडितजीके स्वागतों की परंपरा चालू है। सभाने पंडितजीकी एक व्याख्यान मालाका भी प्रबन्ध किया। उन्होंने धर्म और संस्कृति सम्बंधी उच्च कोटिके ६ व्याख्यान अंग्रेजी में दिये हैं। अन्य अनेक संस्थाओंमें व्याख्यान दे रहे हैं। प्रतिनिधि सभाने उनके प्रचारका कार्यक्रम बनाया है। पंडितजीके आगमनसे रजत जयन्ती सप्ताह बड़ी धूमधामसे मनाया जावेगा ऐसी आशा है। इस समय उनके आने से सिर्फ आर्यसमाजियोंमें ही नहीं अपितु सभी हिंदुओंमें नयी चेतना आ गयी है। आशा है उपाध्यायजीके आनेका प्रभाव चिरकाल तक रहेगा। पंडित जी यहांके लिए हिंदू धर्मपर प्रश्नोत्तरी रूपसे एक पुस्तिका भी लिख रहे हैं।

डॉ. एन. पी. देसाई पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे डॉ. पी. एन. देसाईके मेहमान बने हैं। डॉ. देसाई और श्रीमती देसाईने भारतीय आतिथ्य धर्म अंगीकार किया है। इससे भी पूर्व पं. ऋषिरामजीको भी डॉ. देसाईने ही अपना अतिथि बनाया था। डॉ. देसाई महात्मा गांधीजीके कुटुम्बके उज्ज्वल रत्न हैं। भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्मको इस देशमें जीवित जाग्रत रखनेमें डॉ. देसाईने बहुत प्रयत्न किया है। द. आ. हिन्दू महासभाको सक्रिय बनानेमें डॉ. देसाईका बहुत बडा हाथ रहा है। वे सन् १९४५ और ४६में उसकी मुख्य समितिके प्रधान थे तथा सन् १९४६ और ४७ में महासभाके अध्यक्ष रहे। इन चार वर्षोंमें डॉ. देसाईके प्रयत्नोंसे महासभाने बहुत उन्नति की। स्वामी शंकरानंद स्मारक भवन बनानेके लिए कठिन परिश्रम उठाकर चंदा इकट्ठा किया और भूमि खरीद ली। गरीब और अनाथ हिंदुओंको मदद करनेके लिये सेवा समितियों की स्थान २ पर महासभाकी तरफसे स्थापना करवायी और प्रतिमास उन्हें सहायता दी जाने लगी। इस प्रकार हिन्दुओंमें होनेवाले धर्म परिवर्तनको रोकनेके लिए डॉ. देसाईने बडा प्रयत्न किया। पं. ऋषिरामजीकी सहायता लेकर महासभाके द्वारा समस्त हिन्दुओंके लिए एक धार्मिक प्रार्थना तैयार करवायी। इसी तरह पं. नरदेवजी वेदालंकारकी सहायतासे अन्त्येष्टि प्रार्थना तैयार की। इन दोनों प्रार्थनाओंका समस्त आफ्रिका महाद्वीपमें खूब प्रचार हुआ है। दक्षिण आफ्रिकाके सभी वर्गोंके हिन्दुओंका डॉ. एन. पी. देसाई पर विश्वास है। उनकी धर्म और संस्कृतिकी भावना संकुचित और साम्प्रदायिक न होकर विशाल है। यहांकी हिन्दू महासभा भी राजनीतिक क्षेत्रकी साम्प्रदायिकतासे परे है और उसका क्षेत्र हिन्दुओंके सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकासका रहा है।

ट्रांसवालके प्रचारक

दक्षिण आफ्रिकाके नाताल प्रांतमें ही भारतीयोंकी बहुत बडी बस्ती रहती है। ट्रांसवाल और केप प्रांतमें बहुत कम भारतीय लोग बसे हैं। इससे प्रचारकोंका मुख्य कार्यक्षेत्र नाताल ही रहा है। फिर भी प्रायः सब प्रचारक

प्रचारके लिए ट्रांसवाल और केप प्रांतमें भी जाते रहे हैं। दो चार आर्य प्रचारक ऐसे भी थे जिन्होंने मुख्यतया ट्रांसवालमें प्रचार कार्य किया। इनमें प्रथम हैं **पं. हरिशंकरजी विद्यार्थी**। पं. हरिशंकरजी गुजरात प्रांत से आये थे। ये बम्बई प्रतिनिधि सभाके साप्ताहिक 'आर्य प्रकाश'के संपादक थे। श्री विद्यार्थीजीने जगह २ घूमकर, खासकर गुजरातियोंमें आर्य भावना पैदा की। ये दरबन भी आये थे। आर्य प्रतिनिधि सभाने इनका स्वागत भी किया था। इनके व्याख्यान हास्यरससे पूर्ण होते थे इससे श्रोता लोगोंको बहुत पसंद आते थे। विद्यार्थीजीने मातृभाषा गुजरातीके प्रचारके लिए भी खूब प्रयत्न किया था। ये प्रचारके लिए रोडेशिया भी गये थे।

स्व. पं. सुधीरकुमारजी विद्यालंकार पंडितजीको ट्रां. यू. पाटीदार सोसायटी, जोहानिसबर्गने यहां बुलाया था। वे गुजराती पाठ-शालामें अध्यापन करते थे। पंडितजी गुरुकुल कांगड़ीके सुयोग्य स्नातक थे। अपने सच्चरित्रसे ट्रांसवालमें अच्छा प्रभाव जमाया था। वैदिक विवाह पद्धति एवं संध्या हवनका वहांपर प्रचार किया। इन्होंने "दयानंद वैदिक मिशन" की योजना तैयार की थी। जिसके द्वारा इस देशमें आर्यसमाजका प्रचार करने वाले थे। बडा खेद है कि पं. सुधीरकुमारजीका युवावस्थामें ही इस देशमें अकाल अवसान हो गया।

श्री विनयचन्द्र पटेलने जोहानिसबर्गमें आर्य युवक व्यायाम शालाकी स्थापना करके व्यायामका अच्छा प्रचार किया। जोहानिसबर्गके आर्य सज्जन श्री नाथुभाईजीके सुपुत्र **श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य** भी सूपा गुरुकुलमें विद्याध्ययन करके यहां आये हैं। ये उत्साही भावनाशाली युवक हैं। ट्रांसवालमें वैदिक संस्कार और यज्ञ आदि करवाते हैं। ट्रांसवालमें इन्हों ने हिन्दी प्रचारका भी कार्य प्रारम्भ किया है। वहांके राष्ट्रभाषा विद्या मंदिर के संचालक हैं। उनके प्रयत्नसे वर्धाकी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका वहां केन्द्र खुल गया है। तथा प्रथम प्रमाणपत्र वितरणोत्सव भी हो चुका है।

श्री वसन्तराय पारेख भी वहां सूपा गुरुकुलसे पढकर पहुंचे हैं। प्रिटोरियामें **श्री छोटुभाई मेहता** वैदिक संस्कार, कथा, यज्ञ आदि करवाते हैं। तथा केपटाउनमें **श्री रामचन्द्र 'कोविद'** सूपा गुरुकुलमें विद्याभ्यास करके पहुंचे हैं। ये सब आर्य सज्जन ट्रांसवाल और केप टाउनमें आर्य भावनाओंके प्रचारमें अपना सहयोग दे रहे हैं।

अन्य प्रचारक

पं. रविशंकरजी विद्यालंकार पोर्चुगीज इस्ट आफ्रिकामें स्वामी भवानी दयालजीके प्रयत्नोंसे आर्यसमाजका अच्छा प्रचार हुआ है। यहांपर अधिकतर गुजराती व्यापारी बसे हुए हैं। यहां १६३२ में भारत समाजकी स्थापना हुई। सन् १९३७ में 'वेद मंदिर' नामसे महान् भवन बनाया गया। इस समाजमें अध्यापकका कार्य करनेके लिए भारतसे गुरुकुल कांगडीके सुयोग्य स्नातक पं. रविशंकरजीको बुलाया गया है। अब वहाँ दूसरे स्नातक पं. सुमनकुमारजी विद्यालंकार भी पहुंच गये हैं।

सन् १६४४ में पं. रविशंकरजी दक्षिण आफ्रिका पधारे। आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे ता. ४–२–४४ को पंडितजीका स्वागत हुआ। पंडितजीने दरबन और जोहानिसबर्गमें कई विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिये थे।

सन् १६३३ में जालंधर कन्या महाविद्यालयके लिए धन संग्रह करनेके लिए **श्रीमती रामप्यारी देवी** तथा **कु. नारायणी देवी** आयी थीं। उनके भी कई व्याख्यान हुए थे। ता. ११-६-३३ के दिन प्रतिनिधि सभाने उनका स्वागत किया था।

रामकृष्ण मिशनके प्रचारक श्री स्वामी अध्यानंदजी सन् १६३४ में रामकृष्ण मिशनकी ओरसे आये थे। तथा श्री स्वामी घनानंदजी उक्त मिशनकी तरफसे सन् १६४७ में यहां पधारे थे। दोनों अच्छे विद्वान थे। अंग्रेजीमें उनके बहुत उत्तम व्याख्यान हुए थे। भारतीय दर्शनपर उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान सुननेके लिए यूरोपियन भी आते थे। स्वामी घनानंद

जीने सी ड्यूमें रामकृष्ण मिशनकी स्थापना की थी। उन्हें प्रतिनिधि सभाने स्वागतके लिए निमंत्रित किया था पर उन्होंने यह निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। उन्हें आर्यसमाजसे एक तरहकी चीड़ थी।

श्रीमती सरोजिनी नायडू सन् १९२४ में इन्डियन नेशनल कोंग्रेसकी प्रतिनिधि बनकर इस देशमें भारतीयोंकी दशाकी जांच पड़ताल करने आयी थीं। उनके आगमनका सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव खूब पड़ा। उनकी विद्वत्ता और वाक शक्तिसे यहांके यूरोपियन भी बहुत प्रभावित हुए थे। भारतीय महिलाओंकी मनोदशामें और उन्हें प्रगतिकी ओर उत्ते-जित करनेमें श्री सरोजिनी देवीका बड़ा प्रभाव रहा है।

श्री श्रीनिवास शास्त्री यहां भारतीय सरकारके राजदूत बन कर १९२७ में आये थे। श्री शास्त्रीजीने यहांके भारतीयोंकी सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी दशाके सुधारनेमें बड़ा कार्य किया है। वे उच्च कोटिके वक्ता थे। उनकी विद्वत्ता और प्रतिभाकी धाक यूरोपियनोंपर भी जम गयी थी। भारतीय लोगोंको मेट्रिक तक शिक्षा मिल सके। इसके लिए शास्त्रीजीने बड़ा प्रयत्न किया है और उन्हींकी स्मृतिमें 'शास्त्री कोलिज' खोला गया है।

सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन सन् १९३८ में यहांपर पधारे। तत्कालीन भारतीय राजदूत श्री रामरावके प्रयत्नोंसे यहां आये थे। भारतीय दर्शनोंके इस प्रकाण्ड पण्डितका नाम जगप्रसिद्ध है। उनकी विद्वताने यहां के यूरोपियनोंको बहुत प्रभावित किया। श्री राधाकृष्णन् यहां अधिक समय नहीं ठहर सके थे।

उपरोक्त तीनों नेता यहांके लिए भारतीय संस्कृतिके उच्चतम प्रतिनिधि थे। इन्होंने अपने व्यक्तित्वसे यहांके भारतीयों और यूरोपियनोंको एकसा प्रभावित किया है। दक्षिण आफ्रिकामें इनका आगमन आशीर्वादके समान था।

अध्याय दसवाँ.

आर्य युवक सभा, दरबन
— तथा —
आर्य अनाथाश्रम, दरबन

स्थापना श्री सत्यदेवजी अपने घरपर कई नवयुवकोंको रातके समय हिन्दी पढ़ाते थे। इनमेंसे कई उत्साही युवकोंके साथ मिलकर उन्होंने ता. १६ अप्रैल १९१२ को 'आर्य बाल मित्र मंडल' नामक संस्थाकी स्थापना की। श्री स्वामी शंकरानंदजीने इस मंडलका नाम बदलकर 'आर्य युवक सभा' रखवाया।

कार्य स्वामी शंकरानन्दजीने आर्य युवकोंको सर्वप्रथम सन्ध्या और हवनकी विधि सिखलायी। तदनुसार पं. नैनाराजजीने संध्या हवन करवाना प्रारम्भ किया। प्रति गुरुवारको सभाका साप्ताहिक सत्संग होने लगा यह सत्संग मायावंत होल, तामिल इन्स्टीटयूट तथा पटेल होलमें कई वर्षों तक होता रहा। बादमें आर्य प्रतिनिधि सभाका भवन बननेपर उसमें होता है। आजतक नियमित रूपसे यह साप्ताहिक सत्संग होता है।

सन् १९२१ में गुरुकुल कांगड़ीके स्नातक पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार को आर्य युवक सभाने ही ट्रांसवालसे नातालमें प्रचारके लिए बुलाया और सभाके द्वारा ही वे प्रचार कार्य करते रहे। धर्म प्रचारके कई कार्योंका सूत्रपात करनेका श्रेय भी इसी सभाको है। सन् १९२५ में इस देशमें महर्षि दयानंद की जन्म शताब्दी मनानेके लिये इसी संस्थाने ता. १०–११–२४ को एक आर्य महासम्मेलन बुलाया था। उसीमें जन्म शताब्दी समितिकी रचना हुई थी। सभा अपने स्थापना कालसे सदा जीवित जाग्रत संस्था रही है।

आर्य युवक सभा, दरबन
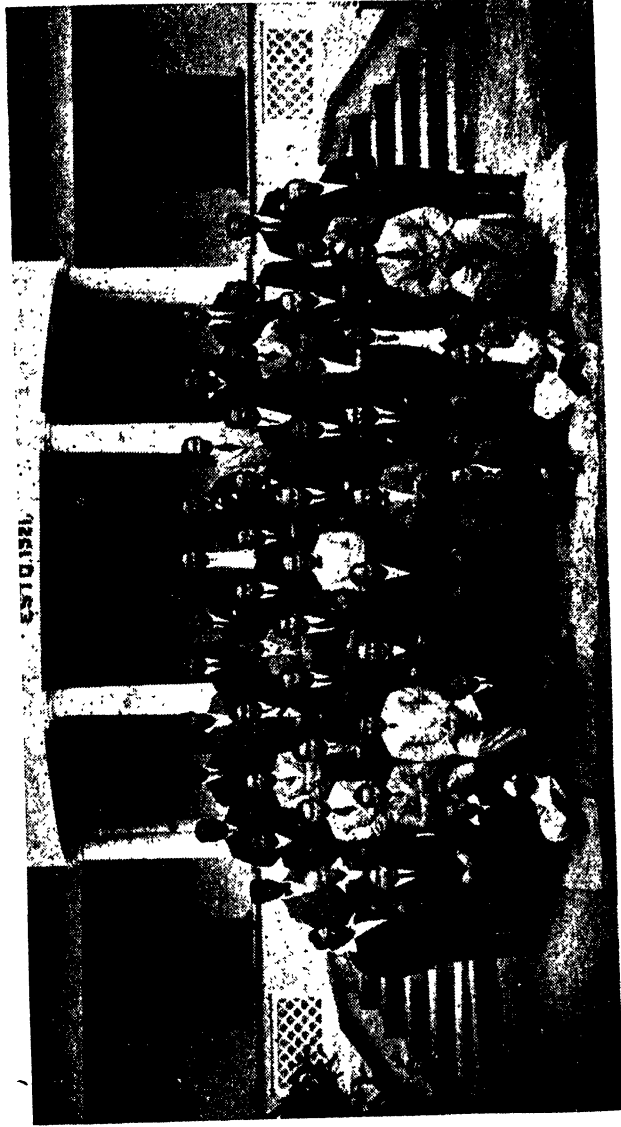
पदाधिकारी तथा सदस्यगण १९३२

आर्य युवक सभा, दरबन
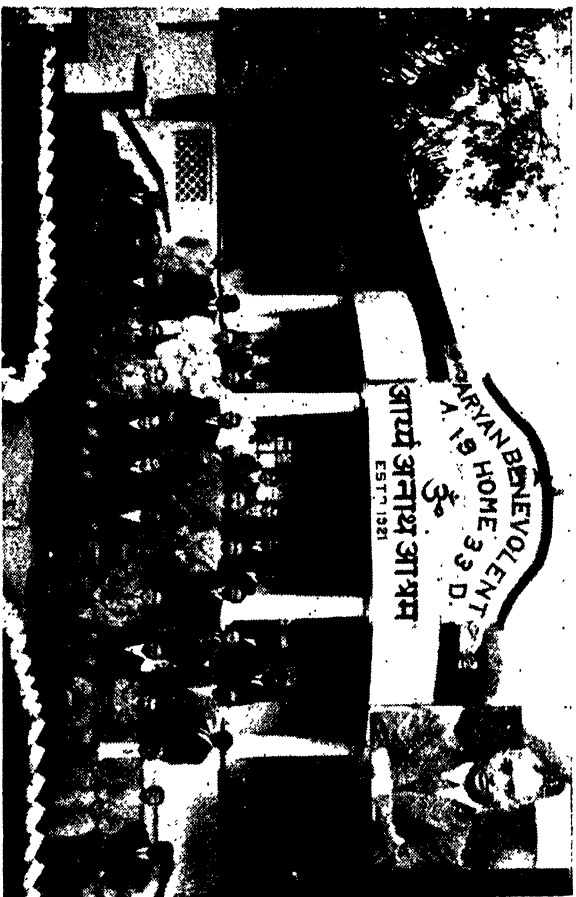
पदाधिकारी तथा सदस्यगण १९४६

आर्य युवक सभा, दरबन
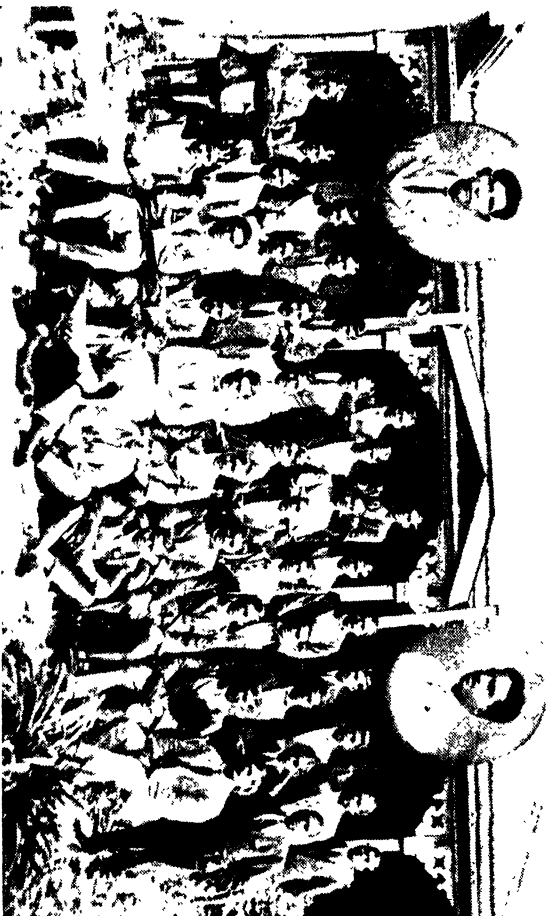
प्रारम्भकालके पदाधिकारी तथ सदस्यगण १९२१

आर्य अनाथाश्रम, दरबन
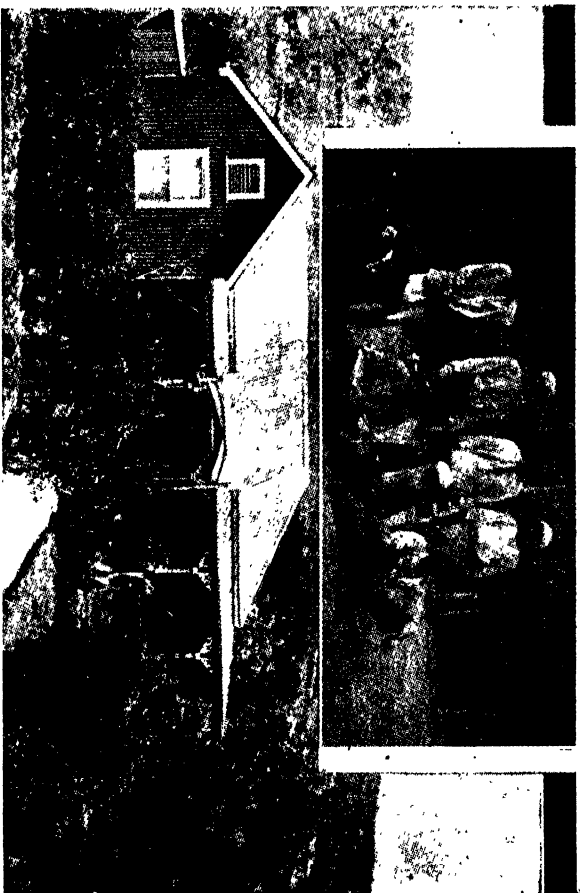
आश्रमकी प्रारम्भिक दशा तथा अनाथ १९२१

शुद्धि सभाने डरबनमें सबसे ज्यादा शुद्धियां करवायी हैं। बिछुड़े हुए हिन्दुओंको अपनेमें मिलानेके लिए सभा हमेशा कोशिश करती रहती है। साथ ही जो हिंदू ईसाई या मुसलमानोंके फंदेमें फँसनेवाले होते हैं उनकी खबर पाते ही सभा उन्हें बचानेके लिए तैयार हो जाती है। सन् १६१७ में श्री जंगबहादुर सिंह डी.सी.एम., जो प्रथम महायुद्धमें उच्च भारतीय सैनिक अफसर रह चुके थे, उनके धर्म परिवर्तनके लिए यहांके ईसाई गिरजेमें योजना की गयी। श्री सत्यदेवजीके साथ सभाके कई नवयुवक गिरजेमें पहुंचे और पादरी महोदयको शास्त्रार्थके लिए आह्वान किया। जिसके लिए वे तैयार न हुए। तब सभाके लोग श्री जंगबहादुर सिंहको चर्चके अन्दरसे छुडा लाये। वे जीवन पर्यंत आर्य रहे। इसी वर्ष श्री परसरामनको भी सभाने ईसाई होने से बचा लिया। इसके लिए ईसाइयोंने सभाके ३० सदस्योंको गिरफ्तार भी करवा दिया था। जिसके लिए जुर्माना भरा गया था। पर परसरामनको ईसाई होनेसे बचा लिया।

पाठशाला श्री बी. एम. सिंहकी भूमिमें कई सज्जन अंग्रेजी पाठशाला चलाते थे। ठीक प्रबंध न हो सकनेसे उन्होंने उसे बंदकर देना चाहा। इससे आर्य युवक सभाने यह पाठशाला १–८–२८ को अपने अधीन ले ली और अपने भूमिमें इसका संचालन करने लगी। विद्यार्थियोंकी संख्या दिन प्रतिदिन बढती गयी जिससे पाठशालाके मकानकी तीन बार वृद्धि करनी पडी, फिर भी मकानोंकी कमी रहती है। इस पाठशालाको सरकारी सहायता प्राप्त है। प्रातःकालके समय भारतीय बच्चोंको सरकारी पाठ्यक्रमके अनुसार अंग्रेजीकी शिक्षा दी जाती है। शामके समय मातृभाषा हिन्दी और तामिल पढ़ानेकी भी व्यवस्था है। पाठशालाके मैनेजर स्व. बी. एम. सिंह तथा स्व. बी. एस. सिंह रह चुके हैं। अब श्री एस. एल. सिंह मैनेजर हैं। हिन्दीके अध्यापक श्री एस. रघुवीर हैं।

पदाधिकारी तथा सहयोगी सभाके वर्तमान सभापति श्री बी. गोविंद, मंत्री श्री आर. शिशुपाल तथा कोषाध्यक्ष श्री आर. शिव–प्रसाद हैं। श्री सत्यदेवजी सभाकी स्थापनासे २९ वर्ष तक सभापतिपद पर

रहे थे। उनकी अध्यक्षतामें ही सभा इतनी उन्नति कर सकी। उनके लघु भ्राता स्व. एस. डी. शंकर कई वर्षों तक सभाके मंत्री रहे। श्री शंकर बडे उत्साही कार्यकर्ता थे और अच्छे वक्ता थे। युवावस्थामें ही उनके स्वर्गवास से सभाको तथा आर्यसमाजको बडी क्षति पहुंची है। स्व. के. रामकैलास भी सभाकी स्थापनासे मदद देते आये थे। वे तीन वर्ष तक सभाके प्रधान भी रह चुके थे। इसी तरह निम्न लिखित सज्जनोंका सभाको सदा सहयोग मिलता रहा है : स्व. बी. भगवान, श्री आर. सी. सिंह, श्री एस. एल. सिंह और श्री नैनाराज आदि।

आर्य अनाथाश्रम, दरबन

आर्य युवक सभाका सबसे महान कार्य आर्य अनाथाश्रमका संचालन है। यह संस्था यहांके आर्यसमाजियोंके लिए ही नहीं सभी भारतीयोंके लिए गौरव स्वरूप है। भारतीय अनाथोंकी सेवाकी दृष्टिसे यह आश्रम सारे दक्षिण आफ्रिकामें बेजोड है।

स्थापना सन् १९१८ के सालकी एक रात्रीको आर्य युवक सभाके सभापति श्री सत्यदेवजीको एक अत्यंत करुण अनुभव हुआ। आपने देखा कि एक आफ्रिकन सिपाही एक भारतीय वृद्ध भिक्षुकको, जो कि रातको एक सडकके किनारे सो गया था, मारकर वहांसे खदेड रहा है। उस भिक्षुकके लिए अन्य कोई आसरा न था। सो वह एक सार्वजनिक पाखानेके अन्दर जाकर सो रहा। इस घटनासे श्री सत्यदेवजीका हृदय दयार्द्र हो गया। तभीसे उन्हों ने अनाथ भारतीयोंके लिए कुछ न कुछ करनेका संकल्प कर लिया। इनकी प्रेरणासे आर्य युवक सभाने ता. ७–७–१८ को आर्य अनाथाश्रम स्थापित करनेका प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया।

आश्रम खोलनेका प्रस्ताव तो हो गया पर सभाके पास इसके लिए किसी तरहका साधन न था। इससे सभाके भजन मंडल द्वारा नाटकोंका अभिनय दिखाकर धन प्राप्त करनेकी योजना हुई। मंडलके अध्यापक श्री एन. लालबहादुरजीके रचित नाटकोंका सभाके सदस्योंने बडी खूबीसे अभिनय

आर्य अनाथाश्रम, दरबन

आश्रमके अनाथ वृद्ध स्त्री-पुरुष, १९४९

आर्य अनाथाश्रम, दरबन
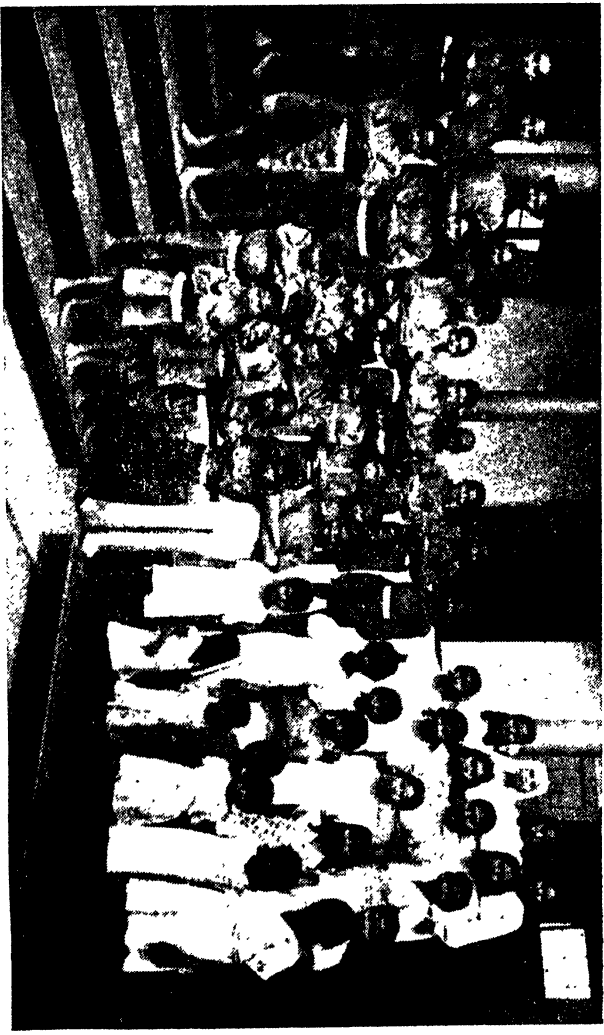
आश्रममें सरकार द्वारा भेजे गये अपराधी बच्चे—१९४६

कर दिखाया। जनताने इसे खूब पसंद किया। इस तरह जो धन मिला उसमें जमीन और भवन खरीदे गये। ता. १ मई १६२१ को पं. भवानी दयालजी ने इसका उद्घाटन किया। आश्रमके शुरु होनेपर श्री सत्यभूषणने इसके संचालनके लिए अवैतनिक कार्यकर्तारूपमें १९ मास तक अपनी सेवाएं आश्रमको दी थी।

आश्रमकी वृद्धि आश्रमका कार्य धीमे धीमे बढ़ता चला गया। हिन्दू जनता तथा दूसरे लोगोंको भी इसपर विश्वास होने लगा। तीन वर्षके बाद ही श्री एच. रोबिनसनके प्रयत्नोंसे आश्रमको प्रान्तीय सरकारकी तरफ से मदद मिलनी शुरु हुई।

आश्रममें पहले प्रौढ़ अनाथोंको ही लिया जाता था। फिर अनाथ बच्चोंको आश्रममें रखनेकी मांग बढती गई। जिससे ता. ७–१०–२६ से इस में अनाथ बच्चे भी प्रविष्ट होने लगे और तबसे आजतक दक्षिण आफ्रिका के विभिन्न प्रदेशोंसे अनाथ बच्चे यहां भेजे जाते हैं। अब तो आश्रितोंकी संख्या दिनपर दिन बढने लगी इससे आश्रमके मकानोंको बढानेकी जरूरत रही। प्रौढ स्त्री और पुरुषोंके लिए तथा बच्चोंके लिए पृथक् २ वार्ड बनाये गये। सन् १६२८ में बने भवनकी आधार शिला सभाके उत्साही कार्यकर्ता श्री बी. एम. सिंहके शुभ हस्तोंसे रखी गयी। इसका उद्घाटन भारतके राजदूत सर कूर्मा रेड्डीके करकमलोंसे हुआ। इसके बननेपर भी मकानोंकी बहुत कमी रहने लगी। इससे सन् १६३३ में तथा १६४३ में पुनः नये मकान बनाये गये। पहले मकानका उद्घाटन इन्डियन इमिग्रेशन प्रोटेक्टर श्री एच. रोबिनसनके शुभ हस्तोंसे हुआ। तथा दूसरी बार प्रान्तिक सरकारके एडमिनिस्ट्रेटर श्री हीटन निकलसके द्वारा उद्घाटन हुआ।

आश्रमकी व्यवस्था आश्रमकी व्यवस्था आर्य युवक सभा की एक उपसमिति द्वारा होती है। सभी अनाथ बच्चोंको तथा आश्रितोंको पृथक् २ खाट दिये गये हैं। उनकी देखरेखके लिए एक पुरुष और एक स्त्री कार्यकर्ता चौबीसों घंटे आश्रममें रहते हैं। आश्रमके आश्रितोंको तीन बार

भोजन दिया जाता है। आश्रमकी तरफसे उनको कपडे दिये जाते हैं। रोगी आश्रितोंके लिए दवा दारु आदिकी भी पूरी व्यवस्था होती है। आवश्यकता होनेपर डोक्टर भी आकर जांच कर जाते हैं। आश्रमके बच्चोंको अंग्रेजी और मातृभाषाकी शिक्षा मिल सके, इसके लिए आर्य युवक सभा एक पाठशाला भी चला रही है। अनाथाश्रमकी व्यवस्था की दर्शकोंने मुक्त कंठसे प्रशंसा की है। इन प्रशंसकोंमें भारत सरकारके यहांपर आनेवाले राजदूत, यूनियन सरकार और प्रान्तीय सरकारके कर्मचारी, दरबन शहरके मेयर तथा भारतीय प्रचारक विद्वान सभी तरहके लोग हैं। आश्रममें भोजनकी व्यवस्था और सफाई पर खूब ध्यान दिया जाता है। सभीने इसके लिए आश्रमकी प्रशंसा की है।

आश्रमके कार्यके सम्बंधमें दो चार मुख्य सम्मतियाँ नीचे देते हैं:—

श्रीमती सरोजिनी नायडू (इन्डियन नेशनल कोंग्रेसकी प्रतिनिधि) लिखती हैं:—"हम यहां आये, आश्रमको बडा स्वच्छ और व्यवस्थित पाया"। ता. २४ मई १९२४।

दक्षिण आफ्रिकाके प्रधान मंत्री श्री जे. सी. स्मट्स आश्रमकी जयंतीके प्रसंगपर संदेश भेजते हैं:—

"........बहुत छोटे रूपसे प्रारम्भ होनेपर भी तथा आर्थिक कठिनाइयोंके होते हुए भी आप लोग ऐसी संस्थाका निर्माण करनेमें सफल हुए हैं जो अपने भलाईके कार्योंके लिए सारे नाताल प्रांतमें प्रसिद्ध है। इतने थोडे समयमें इतनी उन्नति करनेके लिए आप लोग धन्यवादके पात्र हैं। भविष्यमें सब प्रकारकी सफलता चाहता हूं। ता. १० अप्रैल १९४६।

दरबनके मेयर श्री एस. जे. स्मिथ लिखते हैं:—

"यह आश्रम दक्षिण आफ्रिकाके सभी प्रान्तोंके अनाथों, निराधार बूढ़ों और अपराधी बच्चोंकी बिना किसी तरहके धार्मिक भेदभावके लम्बे अरसेसे देखभाल कर रहा है। इसके लिए यह गौरवान्वित है।......... इस ढंगकी यह एक ही गैर यूरोपियन संस्था है जिसे यूनियन सरकारने मान्य

आर्य अनाथाश्रम, दरबन
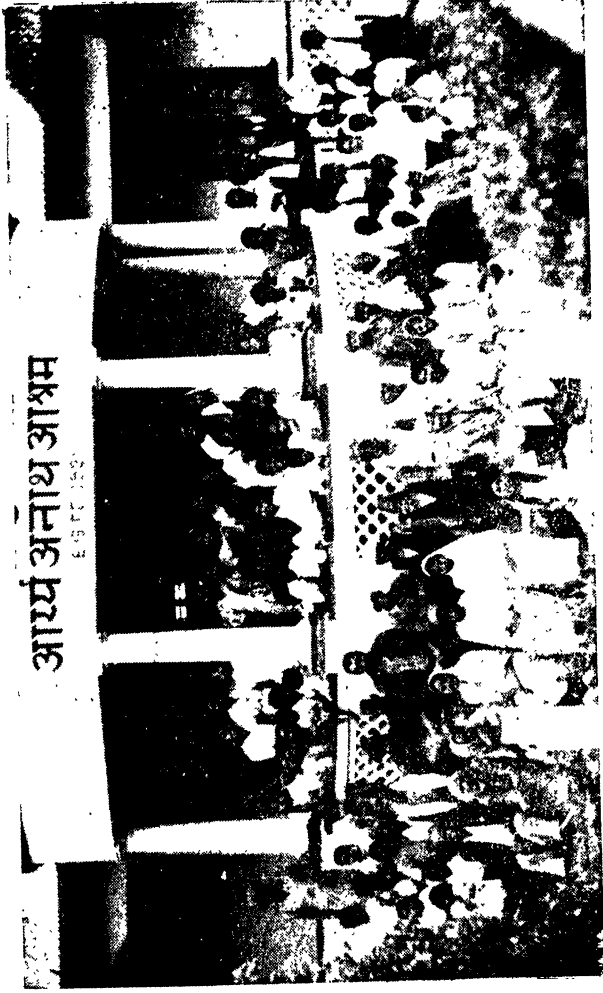
आश्रमका अनाथ समुदाय, १९४६

आर्य युवक सभा, दरबन

वार्षिकोत्सवके अतिथि और सदस्य, १६३२

किया है। यह संस्था सेवाका जो कार्य कर रही है उसका डरबन शहरकी तरफ से अंगीकार करते हुए मुझे प्रसन्नता होती है। हम इसकी सब तरहसे शुभ कामना करते हैं।" ता. १० अप्रैल १९४६।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहलीके मंत्री श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय आश्रमकी मुलाकात लेनेके बाद लिखते हैं:—

"यह आश्रम आर्य युवक सभाका अद्भुत कार्य है। यहांकी यह अद्वितीय संस्था है और आर्य समाजकी परोपकार वृत्तिका सुन्दर नमूना है। परमात्माका आश्रमपर आशीर्वाद हो और आश्रमको सफल बनानेमें जिनका हाथ है प्रभु उनका कल्याण करे।" जनवरी १९५०।

आश्रमकी प्रगति आश्रमकी प्रगति तेजीसे होने लगी। इस की व्यवस्था और कार्य शक्तिसे प्रभावित होकर यहांकी यूनियन सरकारने अपराधी भारतीय बच्चोंको सुधारनेके लिए अनाथाश्रममें भेजनेका निश्चय किया। जो बच्चे किसी अपराधमें पकडे जाते, अथवा माता पिता जिन बच्चोंके सुधारनेकी जिम्मेदारी नहीं उठा सकते उन्हें सरकार आश्रममें भेजने लगी। इसके लिए सरकारके सोशियल वेलफेयर विभागसे आश्रमको प्रति बच्चेके लिए म ि क ३० शि. (२० रुपये) सहायता भी प्राप्त होती है।

आश्रममें बच्चोंकी निरन्तर बढती हुई संख्याके कारण सभाने अभी हालमें १७॥ बीघा जमीन केटोमेनरमें खरीद ली है। यहां नये और अच्छे मकानोंमें बच्चोंको रखा जावेगा। बच्चोंको हुन्नर आदि सिखाने की भी व्यवस्था की जावेगी। यह जमीन ७२५० पौंडमें ली गयी है। जिसपर अभी ६००० पौंड का कर्ज है। सभाके अधिकारी इसे चुकानेके लिए बहुत प्रयत्नशील हैं।

आश्रमकी प्रगतिका ख्याल आगे दी हुई तालिकासे आ सकेगा:—
(आश्रमकी स्थापनासे लेकर ता. ३०-११-४९ की संख्याएं)

आश्रित	प्रविष्ट	मुक्त	मृत्यु
प्रौढ पुरुष	६८४	४८७	१६५
प्रौढ स्त्री	३७८	२७७	८४
लडके	३०३	२५४	३
लडकियाँ	२४५	२०५	३
कुल	१६१०	१२२३	२५५

यह आश्रम सात अनाथोंसे चालू हुआ था। आजतक इसमें १६१० अनाथ आश्रय पा चुके हैं। इनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी धर्मके अनुयायी हैं। सन् १९२१ से आजतक यहांपर पलनेवाले बच्चोंमें सिर्फ ६ ही की मृत्यु हुई है। आश्रमके सुप्रबंधका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आश्रममें पलनेवाले बालक बालिकाओंको १८ वर्षकी उम्र तक आश्रम में रखा जाता है। इस कालमें सरकारकी ओरसे जो अपराधी बच्चे आते हैं उनको शिक्षा दीक्षा देकर सुधारा जाता है और फिर वे अपने माता पिता या रिश्तेदारोंके यहां चले जाते हैं। जो अनाथ बच्चे होते हैं उनको बडा होनेपर कुछ काम धंधा मिल जावे इसके लिए आश्रमकी तरफसे प्रयत्न होता है। ऐसे बच्चोंमें श्री शिशुपालका उदाहरण बडा ज्वलन्त है। श्री शिशुपाल अनाथ बच्चेके रूपमें प्रविष्ट हुए। वे होनहार थे। पढाईमें अच्छी तरक्की की और आज वे सरकारी पाठशालाके शिक्षक बन गये हैं। इतना ही नहीं; जिस आश्रममें पले उसकी सेवा करना भी उन्होंने अपना धर्म समझा और आश्रम की संचालिका संस्था आर्य युवक सभाके मंत्री पदको वे सम्भाले हुए हैं। आश्रममें पलनेवाली अनाथ लडकियाँ बडी हो जाती हैं तो उनकी शादीकी व्यवस्था भी संस्थाकी ओरसे की जाती है। अपनी शिक्षा, संस्कार आदिसे ऐसी कन्याएँ गृहस्थी बनकर अपने संसारको अच्छी तरह चला रही हैं। आश्रममें जो बूढे स्त्री पुरुष आते हैं उनके रिश्तेदारोंके परिवारकी आर्थिक अवस्था ठीक होनेपर वे उन्हें पुनः ले जाते हैं। अथवा तो वे मृत्यु पर्यन्त आश्रममें पलते हैं और शांतिसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

आर्य अनाथाश्रम, दरबन

आफ्रिकन–भारतीय दंगे (जनवरी १९४९) के निराश्रित

आर्य अनाथाश्रम, दरयागंज

दंगेके निराश्रितोंकी भोजन व्यवस्था

दाता और सहायक आश्रमने इन तीस वर्षोंमें भारतीयोंकी ठोस सेवा की है। इससे यह संस्था जनप्रिय हो गई है। इसकी आवश्यकताएं जनताके द्वारा ही पूर्ण होती हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदिके भेदभाव को तथा काले गोरेके रंग द्वेषको छोडकर सभी लोग इस संस्थाकी मदद करते रहे हैं। केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकार, दरबन म्युनिसीपालिटी तथा अन्य संस्थाएँ भी इसे आर्थिक सहायता देती हैं। अनाजकी दुकानवाले, शाक भाजी वाले तथा कपडेवाले सभी आश्रमको मदद करते रहते हैं। कई व्यक्ति प्रतिदिन अथवा प्रति सप्ताह अपनी तरफसे विविध वस्तुएँ आश्रमको भिजवाते हैं। प्रति वर्ष आश्रमको दान देनेवाली निम्न लिखित संस्थाएं हैं। सन् १९४९ में इनकी ओरसे इस प्रकार सहायता मिली है:—

१२२० पौंड सोशियल वेलफेयर डिपार्टमेन्ट, यूनियन सरकार
प्रत्येक बच्चेके लिए मासिक १ पौंड, १० शि. ० पे.
३०० पौंड एन. यू. सी. रेगसे
१०० पौंड प्रान्तीय सरकार, नातालकी ग्रांट
५० पौंड दरबन म्युनिसीपालिटी
५० पौंड दरबन टर्फ क्लब
५० पौंड क्लेरवुड टर्फ क्लब

इन संस्थाओंसे प्रतिवर्ष इस तरहसे न्यूनाधिक मदद मिलती रहती है। आश्रमके मुख्य दानियोंके शुभ नाम भी यहां दिये जाते हैं:—२५० पौंड: श्री बी. सुखदेव सिंह, २५० पौंड दरबन पब्लिक हाउस ट्रस्ट, १२५ पौंड श्री रुस्तमजी ट्रस्ट।

१०५ पौंड देनेवाले सज्जन: सर सी. जी. स्मिथ, श्री धुपेलिया एंड सन्स, श्री सी. एन. राणा एंड सन्स, श्री शामजी देवशी एंड सन्स, श्री बी. एम. पटेल, श्री एन. नारण चेरेटी ट्रस्ट, श्री डर्बी शर्ट मेन्युफेक्चर्स, श्री पी. हरगोवन एंड कम्पनी, श्री लोखात चेरेटी ट्रस्ट, श्री केपिटन चेरेटी ट्रस्ट, दी प्रिमियर प्रोडयूस कम्पनी, श्री एम. एल. सुलतान, श्री बी. एन. नायक।

५२ पौंड १० शि. देनेवाले सज्जनः श्री कोमर्शियल प्रोडयुस सप्लाई कम्पनी, श्री टी. एन. भूला, श्री एम. एस. रांदेरी चेरेटीबल ट्रस्ट, श्री डाह्या खुशाल एन्ड कम्पनी, श्री विक्टोरिया प्रोडयुस कम्पनी।

२६ पौंड ५ शि. देनेवाले सज्जनः श्री ई. जी. पारेख फेमिली ट्रस्ट, श्री. एच. एम. भूला।

२५ पौंडः श्री बी. गंगाराम।

२५ पौंडसे कम देनेवाले अन्य अनेक सज्जन हैं।

सहयोगी और संचालक आश्रमको अनेक निस्वार्थी सज्जनोंकी अमूल्य सेवाएं मिल रही हैं। इनमें श्री बी. एम. पटेलका नाम विशेष उल्लेखनीय है। संस्थाकी स्थापनासे लेकर आजतक वे इसमें सक्रिय रस लेते आये हैं। इन्होंने आश्रमके लिए चन्दा इकट्ठा करनेमें, भूमि खरीदनेमें एवं मकानोंके निर्माणमें अपार सहयोग दिया है। सभाको बेंकसे ऋण दिलवानेमें श्री बी. एम. पटेलका बहुत उद्योग रहा है। सभाने इन कार्योंसे कृतज्ञ हो उन्हें अपना संरक्षक बनाया है। अब भी श्री बी. एम. पटेलपर संस्थाको बहुत आशा है। इसी तरह पारसी गृहस्थ भारतीय नेता श्री सोराबजी रुस्तमजीकी भी संस्थापर बडी कृपा रही है। चन्दा इकट्ठा करनेमें उनकी सेवाओं और प्रतिष्ठाका संस्थाको लाभ मिला है। श्री सोराबजी भी संस्थाके परम सहायक हैं।

इनके अलावा आश्रमको मदद करनेवाले इतने सज्जन हैं कि हरएक का नामोल्लेख करना भी मुश्किल है। फिर भी जिन महानुभावोंके बलपर आजतक संस्थाका सफलतापूर्वक संचालन हो सका है और आश्रमकी स्थापनासे आजतक जिन्होंने अपूर्व त्यागमय सेवाएं दी हैं उनके शुभ नाम ये हैं:- श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री एस. एल. सिंह, पं. नैनाराज, श्री डी. गनौरी, श्री ए. दलीप सिंह, श्री एन. लालबहादुर, श्री के. रामस्वरूप, श्री बी. गोविंद आदि। दरबनके प्रसिद्ध भारतीय डोक्टर श्री के. एम. मिस्त्री तथा श्री एम. जी. नायडू बिना फीस लिए आश्रममें विजिटपर आते हैं और अपनी सेवाएं देते हैं।

खंडाला एस्टेट हिन्दू संगठन

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

खंडाला एस्टेट हिन्दू संगठन
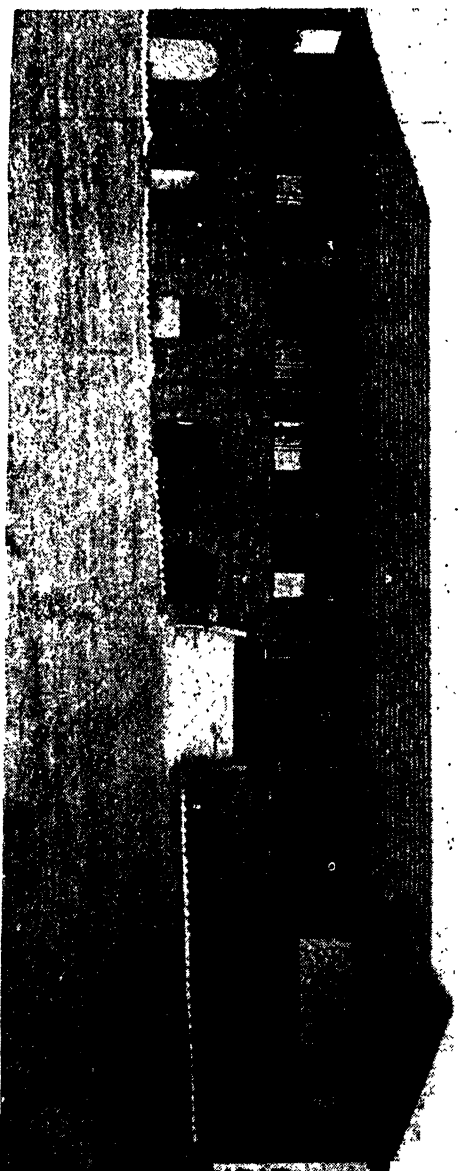
पाठशालाका भवन

अध्याय ग्यारहवाँ.

दरबनकी आर्य संस्थाएँ

खन्डाला एस्टेट हिन्दू संगठन

स्थापना ११ जनवरी १६३१ को खंडाला प्रदेशके हिन्दुओंमें शिक्षा और धर्मके प्रचार तथा संगठनके उद्देश्यसे 'खंडाला एस्टेट हिन्दू संगठन' नामक संस्थाकी नींव पडी। इसकी स्थापनामें श्री लौटन महाराज, श्री एफ. शिवप्रसाद, श्री पी. चित्रकूट, श्री बी. एम. चैतू तथा श्री आर. करपत ने बडा उद्योग किया था।

कन्या पाठशाला सन् १९३४ में संस्थाने अपने लिए भूमि खरीदी। उसपर भवन बनानेके लिए 'मित्र नाटक मण्डल' की स्थापना की गयी। नाटकोंके अभिनयसे चन्दा इकट्ठा किया गया। इस आमदनीसे पाठशाला खोलनेका निर्णय हुआ, तो ज्ञात हुआ कि इस प्रदेशमें एक दूसरी संस्था पाठशालाके लिए प्रयत्नशील है। एक तरहसे यह अच्छा ही हुआ क्योंकि इससे हिन्दू संगठनका ध्यान अब एक कन्या विद्यालय खोलनेकी तरफ गया। इसके लिये जोर शोरसे प्रयत्न होने लगा। श्री सोराबजी रुस्तम जीने इस कार्यमें बडी मेहनत की। ता. १-१२-३५ के दिन दरबनकी मेयरसके द्वारा कन्या विद्यालयकी नींव रखी गयी। तथा ता. २६-१-३६ को लेडी चार्ल्स जी. स्मिथके शुभ हस्तोंसे इसका उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर श्रीमती स्मिथ तथा श्री बी. बोधासिंहने १० वर्ष तक २५ पौंडकी वार्षिक छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। श्री सोराबजीने इस मौकेपर प्रतिष्ठित भारतीयों और यूरोपियनोंको पार्टी भी दी। जिससे कन्या विद्यालयका कार्य सभी वर्गोंमें परिचित हो गया। प्रारम्भमें तो हिन्दू माता पिता अपनी लडकियों

को पाठशालामें भेजनेसे भी झिझकते थे। संस्थाकी तरफसे लडकियोंको मुफ्तमें कपडे, पुस्तकें आदि देनेका भी प्रबंध किया। इस तरह २२ कन्याओं को लेकर जो पाठशाला चालू की गयी थी उसमें आज १८० लडकियां पढ रही हैं। सवेरे सरकारी पाठ्यक्रमके अनुसार अंग्रेजी पाठशाला चलती हैं और शामको ३ से ५ बजे तक हिन्दी पाठशाला लगती है। सन् १९३५–३६ में संस्थाके लिये आर्थिक संकटका समय आया था परन्तु अधिकारियोंके प्रयत्न से वह संकट टल गया।

कार्य कन्या पाठशालाके संचालनके अतिरिक्त हिन्दू संगठनकी तरफसे दूसरी भी प्रवृत्तियां होती हैं। स्त्रियोंमें प्रचारके लिये सन् १९४३ में महिला समाजकी स्थापना की गयी। संस्थाका मित्र भजन मंडल भी है जिस के संगीतके कार्यक्रमसे आमदनी भी होती है। संस्थाकी तरफसे वार्षिकोत्सव धार्मिक त्यौहार आदि भी मनाये जाते हैं। भारतसे पधारनेवाले विद्वानोंके व्याख्यानका भी प्रबंध किया जाता है। स्थानीय हिन्दू सेवा समितिसे मिल कर प्रति रविवारको साप्ताहिक सत्संग भी किया जाता है। संस्थामें श्रीमती नानजी कालिदास भी पधारी थीं। उन्होंने कन्याओंको भोज दिया था। तथा ५० पौंड दान दिया था।

पदाधिकारी तथा सहयोगी संस्थाके वर्तमान सभापति श्री आर. करपत हैं। वे ही संस्थाके प्राण हैं। मंत्री श्री पी. चिरकूट तथा कोषाध्यक्ष श्री बी. एम. चैतू हैं। संस्थाके सहयोगियोंमें स्व. बी. बेचू तथा एफ. रामलगनका नाम स्मरणीय रहेगा। वे दोनों सज्जन संस्थाके सभ्य न थे। पर उनकी सेवाएं बहुमूल्य हैं। स्व. बी. बेचूने नातालमें संस्थाके लिये चंदा इकठ्ठा करनेमें बडी मदद की थी। स्व. एफ. रामलगनने नाताल बिल्डिंग सोसायटीसे लोन दिलवानेमें अच्छी सहायता पहुंचायी थी। श्री ए. ग्रे कन्या पाठशालाके मैनेजर रहे हैं। उन्होंने नवम्बर १९३६ में संस्थाको सरकारी ग्रांट दिलाकर बडी सेवा की है। श्री स्वामी भवानी दयालजी भी संस्थाका समय २ पर मार्ग दर्शन करते रहे हैं। इनके अलावा संस्थाके कार्योंमें सहयोग

युवक आर्यसमाज, क्लेरवुड

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

युवक आर्यसमाज, क्लेरवुड
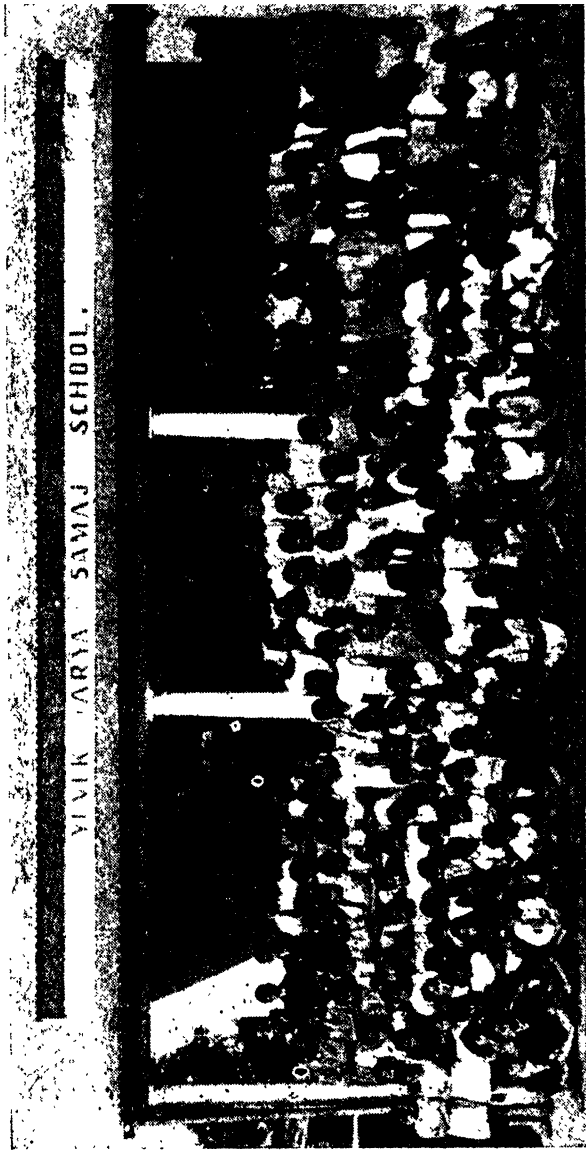
हिन्दी पाठशाला

देनेवालोंके चिरस्मरणीय नाम ये हैं:—स्व. यू. शिवजतन, स्व. बी. गरीब, स्व. बी. बोधासिंह, श्री बी भगवानदीन, श्री बी. रघुनंदन, श्री. के. देवीप्रसाद, श्री बी. गोविंद, श्री. एस. शालीग्राम, श्री आर. अलगू, श्री आर. बोधासिंह, श्री के. गोपी, श्री आर. रघुवीर, स्व. बी. सुखदेव सिंह, कुमारी अमीनाखान, कुमारी मैनावती चिरकुट, श्रीमती सुखियावती रघुवीर, श्रीमती रूथ विन्डन, श्री एफ. शिवप्रसाद, श्री एल. रामप्रसाद, श्री. सुन्दर सिंह, श्री. बी. रामनारायण सिंह, श्रीमती कल्याणी देवी, आदि।

युवक आर्य समाज, क्रेरवुड

स्थापना क्रेरवुडकी बस्ती दरबनके पास है। यहांपर कई सहस्र भारतीय लोग बसे हुए हैं। उनमें वैदिक धर्मके प्रचारके उद्देश्यसे श्री आर. बी. भूषणने ता. ३-४-१९३२ को अन्य कई सहयोगियोंकी सहायतासे 'युवक आर्य समाज, क्रेरवुड' की स्थापना की।

कार्य समाजकी ओरसे हर रविवारको सांयकाल साप्ताहिक सत्संग होता है। त्यौहार तथा उत्सव भी मनाये जाते हैं। भारतसे आनेवाले विद्वानों और प्रचारकोंके समय २ पर व्याख्यान भी करवाये जाते हैं। समाजका अपना एक संगीत दल भी है। जिसके कार्यक्रमोंके द्वारा समाजको आमदनी भी होती है। संगीतके अध्यापक श्री जे. रमेश हैं। समाजने सन् १९३३ में एक भजन मंडल की भी स्थापना की। इसकी तरफसे नाटकोंका अभिनय होता है और समाजको आमदनी होती है। समाजकी तरफसे एक व्यायाम शाला भी चलती थी।

पाठशाला तथा भवन ता. ५-२-३३ के दिन समाज द्वारा एक हिन्दी पाठशालाका प्रारम्भ किया गया। जिसके लिए समाजके संस्थापक सदस्य श्री आर. भूषणने अपना कमरा सात वर्ष तक बिना किराये के दिया। स्व. डी. रविवरण एवं श्री एस. एम. महाराज अवैतनिक अध्यापक रहे। पाठशालामें निरन्तर विद्यार्थी बढने लगे। अतः समाजके उत्साही कार्य कर्ता भूमि खरीदने और भवन बनानेके लिए घोर परिश्रम करने लगे। समाज

के भजन मंडलके द्वारा नाटकोंका अभिनय किया गया। छः बार नाटक दिखाये। जिसके लिये श्री एफ. सत्यपालने बडा श्रम उठाया। इनसे समाज को अच्छी रकम मिली। जिससे सन् १९३५ में भूमि खरीदकर मकान बनाया गया। इस भवनमें हिन्दी पाठशाला लगने लगी और अन्य कार्य भी इसी में होने लगे। विद्यार्थी प्रति वर्ष बढते गये और अब यह मकान भी छोटा पडने लगा है। इससे नया बडा मकान बनानेका समाजने निर्णय किया है। उसके लिए परमीट भी मिल गयी थी। परन्तु म्युनिसिपालिटी मकान बनाने की इजाजत नहीं देती। क्योंकि जमीन थोडी होनेसे बच्चोंके लिए खेलनेको मैदान नहीं रहता। इस समय हिन्दी पाठशालामें २७३ विद्यार्थी पढते हैं। यह पाठशाला सवेरे और शाम दोनों वक्त लगती है। पाठशाला हिन्दी शिक्षा संघमें सम्मिलित है। इसके मुख्याध्यापक श्री रामचन्द्र महादेव सिह हैं।

अधिकारी तथा सहायक समाजके वर्तमान सभापति श्री रामानंद, मंत्री श्री जे. बैजनाथ तथा कोषाध्यक्ष श्री पी. काशीप्रसाद हैं। समाजको आगे बढानेमें श्री आर. भूषण तथा स्व. डी रविवरणका बडा हाथ रहा है। थे अवैतनिक पढाते थे, भजन मंडल कायम किया तथा तीन वर्ष समाजके मंत्री रहे थे। १९४२ में श्री डी. रविवरणका देहांत हो जानेसे समाजने अपना एक आधार स्तंभ खो दिया है। समाजकी उन्नतिमें निम्न लिखित सज्जनोंका सहयोग सदा चिरस्मरणीय रहेगा—श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री ईश्वरसिंह, श्री आर. बी. लाल, श्री करुणादत्त प्रसाद, श्री जे. महादेव सिंह, श्रीमती लाल, श्री बी. पी. सिंह, श्री एन. सितलू, श्री एन कन्धई, श्री पी. डी. परसाद आदि।

आर्य समाज, केटो मेनर

स्थापना २० सितम्बर १९२१ को केटो मेनरकी भारतीय बस्ती में वैदिक सिद्धान्तोंके प्रचारके उद्देश्यसे एक संस्थाकी स्थापना की गयी। संस्थाका नाम 'श्री सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासु सभा' रखा गया। इस संस्थाकी स्थापनामें स्व. साधु अयोध्यादास, स्व. एस. पदार्थ, श्री ईश्वरप्रसाद तथा

युवक आर्यसमाज, क्लेरवुड

भजन मंडल

आर्यसमाज, केंटोमेनर

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

श्री आर. देवदत्तका बहुत परिश्रम था। संस्थाके प्रधान स्व. अयोध्यादास तथा मंत्री श्री आर. देवदत्त चुने गये थे। सन् १६२९ में डॉ. भगतराम इस देशमें पधारे। उनकी सलाहमें इस संस्थाका नाम बदलकर आर्य समाज. केटा मेनर कर दिया गया।

कार्य समाजके द्वारा साप्ताहिक सत्संग होता है। त्यौहार और जयन्तियां मनायी जाती हैं। भारतमे यहां आनेवाले सभी प्रचारकोंको बुलाकर प्रचार कार्य किया जाता है। समाजका कार्य अनाथ और पीडित लोगों की सेवा करना भी है। समय २ पर इसने उनको मदद पहुंचायी है। सन् १९३१ में समाजके मुख्य कार्यकर्ता श्री एम. रघुवीरका अकाल देहान्त हो गया। उनका परिवार निराधार हो गया। समाजने उनके बच्चोंके पालन करनेकी जिम्मेदारी उठायी। आज ये बच्चे बडे होकर समाजके कार्योंमें सहयोग दे रहे हैं। समाजके अन्तर्गत एक आर्य हितैषी भजन मंडल है। जिसके द्वारा संगीत आदिका कार्य होता है। इसकी आयसे हिन्दी पाठशालाको भी मदद मिलती है। इसी तरह समाजका अपना आर्य वीर दल भी है। जिसके द्वारा व्यायामकी शिक्षा दी जाती है। इस दलके सदस्य जनताकी सेवामें भी हाथ बंटाते हैं।

हिन्दी पाठशाला समाजके उद्देश्योंमें हिन्दी प्रचार मुख्य है। इससे समाजकी स्थापनाके साथ ही वह हिन्दी पाठशाला चलाता है। ता. २०–६–२१ को स्व. बालकिशोर महाराजके हस्तोंसे इस पाठशालाका उद्घाटन हुआ था। सन् १६३१ में समाजके आर्य हितैषी भजन मंडल द्वारा तथा अधिकारियोंके सहयोगसे चन्दा इकट्ठा किया गया और मेविलमें हिन्दी पाठशालाके लिए जमीन और मकान खरीदे गये। जिसका उद्घाटन स्व. बी. एम. सिंहके द्वारा हुआ। इस पाठशालामें निम्न लिखित अध्यापक अवैतनिक रूपसे अपनी सेवाएं देते रहे हैं—श्री ए. बरन, श्री जी. ईश्वरप्रसाद, श्री एम. रामप्रसाद, स्व. हरिभजन, श्री ओ. देवनारायण, श्री एस. गोकुल, श्री. डी. हरिश्चन्द्र।

समाजके संरक्षक स्व. बी. सुखदेव सिंहने समाजके लिए ४०० पौंडमें जमीन खरीदी है। वे इसपर आर्य मंदिर बनवाना चाहते थे। पर दुख है कि उनका अवसान हो गया। समाजके अधिकारी भवन बनानेके प्रयत्नमें लगे हुए हैं।

पदाधिकारी तथा सहयोगी श्री आर. देवदत्त समाजके सभापति हैं। समाजकी स्थापनासे लेकर आज तक वे बहुत ही निष्ठासे संस्था की सेवामें लगे हुए हैं। संयुक्त मंत्री श्री डी. एस. पदारथ और पी. सीब्रन हैं। कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र हैं। समाजके कार्योंमें सहयोग देनेवाले सज्जनों के शुभ नाम ये हैं—श्री बी. रामावतार, श्री एस. बद्रीनाथ, श्री सी. एन. राणा, श्री के. जगरूप, श्री बी. हरिप्रसाद, श्री आर. शिवप्रसाद, श्री ए. जंगबहादुर, श्री बी. बेचू, श्री ए. दलीप सिंह, श्री के. हरिप्रसाद, श्री जितू, पं गजाधर, श्री एस. प्रीति, श्री देवव्रत, श्री आर. अर्जुन, श्री एम. भिखारी, श्री आर. राजकुमार, श्री रामप्रसाद, श्री आर. आर. प्रसाद आदि।

आर्य समाज, वेस्टविल

स्थापना जनवरी १९३१ में १३ सदस्योंके उत्साहसे आर्य समाज, रायकोपिस की स्थापना हुई थी। प्रारम्भिक कार्य बड़ा शिथिल रहा। सन् १९३३ में हिन्दी पाठशाला चालू की गयी। जिसमें ५० बच्चोंको निःशुल्क शिक्षा दी जाने लगी। सन् १९३६ में समाजमें नवजीवन आया; तबसे इस समाजका नाम 'आर्य समाज, वेस्टविल' रखा गया।

कार्य १९३६ में समाजने हिन्दी पाठशालाके लिये जमीन खरीदने का निश्चय किया। इसके लिये समाजके सदस्योंने नाट्य प्रयोग करके चंदा इकट्ठा किया जिसके लिये श्री बी. गोविंदने बडी मेहनत की थी। मेहन रोड पर जमीन खरीदी गयी। इस समय एक आर्य समाज सेवा दलकी भी स्थापना की गयी। जिसके स्वयं सेवक उत्सव, सभा, शादी आदि अवसरपर जनताकी सेवा कर रहे हैं। इसी तरह ता. ८-८-४२ को स्त्रियोंमें प्रचारकी

आर्य समाज, वेस्टविल
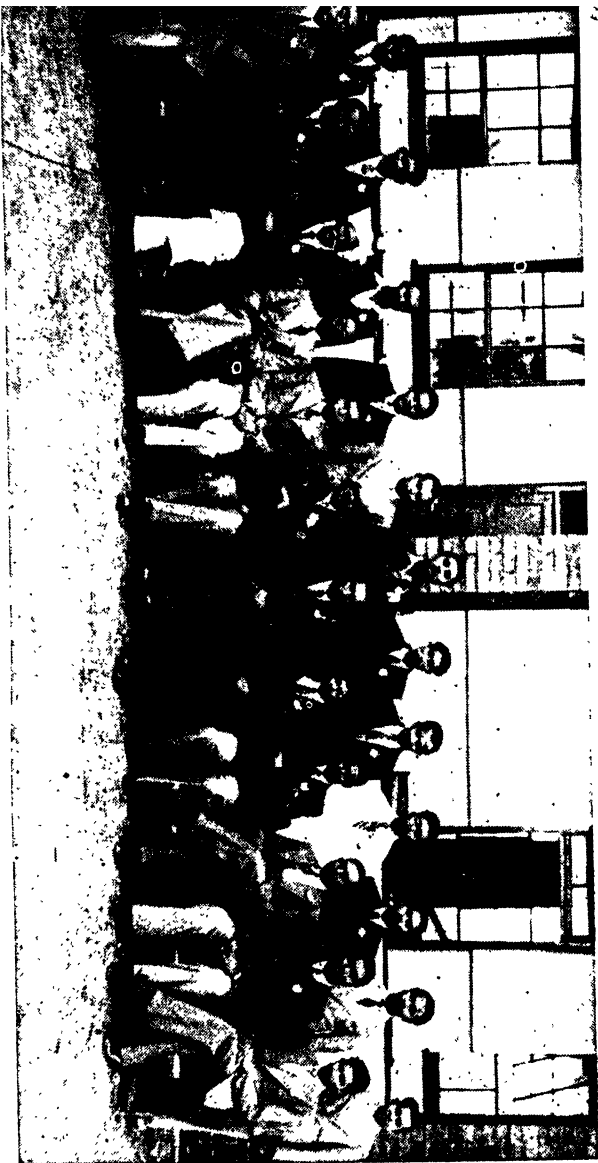
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य समाज, वेस्टविल
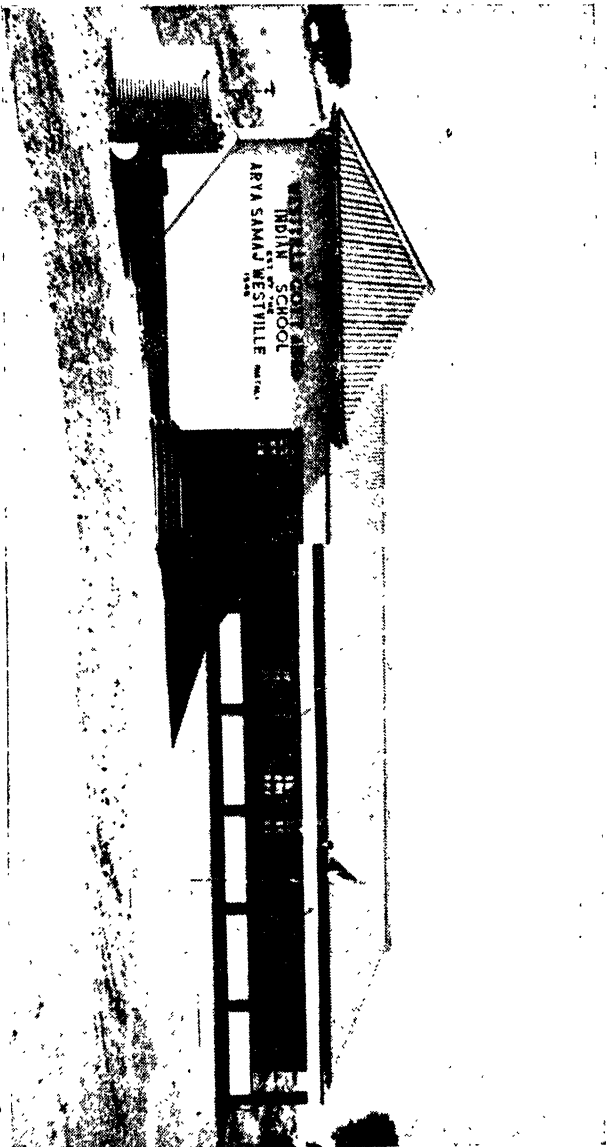
पाठशालाका मकान

दृष्टिने महिला आर्यसमाजकी स्थापना की गयी। जिसके द्वारा चंदा इकट्ठा करनेमें, साप्ताहिक सत्संगमें एवं हिन्दी पाठशालाके संचालनमें मदद मिलती है। यह समाज महिला समाजके साथ मिलकर त्यौहार, उत्सव आदि भी मनाता आया है। समय २ पर संस्कार और यज्ञ करवाये जाते हैं। प्रचारकों द्वारा प्रचार भी होता है। इस समाज द्वारा कई लोगोंको स्वामी भवानी दयालजी द्वारा यज्ञोपवीत दिया गया था।

पाठशालाका मकान वेस्टविलके इलाकेमें ईसाई मिशनका सेन्ट थोमस इन्डियन स्कूल नामका एक ही स्कूल था। १९४३ के नवम्बरमें मिशनवालोंने वह स्कूल बंद करनेका इरादा कर लिया। इसका मतलब था सैंकडों बच्चोंका शिक्षा से वंचित रहना। इस लिए समाजने जमीन खरीदकर नया स्कूल खोलनेका निश्चय किया। मिशनसे ३०० पौंडके मूल्यसे ४॥ बीघा जमीन खरीदी गयी। इस समय समाजके पास १५० पौंड ही कुल रकम थी। ऐसे समय श्री आर. बोधासिंहसे बिना सूदके २५० पौंड उधार मिले। बादमें यह रकम पाठशाला बन जानेपर उन्होंने समाजको दान दे दी। मकानके लिए स्टेन्डर्ड बिल्डिंग सोसायटीसे ४५०० पौंडकी लोन ली गयी। प्रान्तीय शिक्षा विभागको आधा खर्च देनेके लिए अर्जी की गयी जिसे उसने मंजूर कर लिया। तब समाजके एक आधारस्तंभ श्री बी. बेचूको मकान बनानेका कार्य सौंपा गया। मकानके लिए एकदम सारा पैसा जुटाना मुश्किल था। ऐसे समय श्री बी. बेचूने अपनी बहुत बडी रकम लगाकर पाठशालाका मकान बनवाया। समाजके अन्तर्गत 'नवजीवन विद्या मंडल' है; जिसने नाट्य प्रयोगोंके द्वारा द्रव्य इकट्ठा किया और श्री बी. बेचूका पैसा चुकता किया जा सका। इस कार्यके लिए चन्दा करने समाजके सभापति श्री बी गोविंद, श्री सत्यदेवजी तथा श्री देवीप्रसाद रूसवाल भी गये। इस कार्यके लिये श्री सत्यदेवजी तथा श्री एस. एन. सिंह की बहुत अधिक सहायता मिली है। फरवरी १९४५ में श्री आर. बोधासिंह द्वारा मकानकी आधार शिला रखी गयी थी तथा ता. २८-७-४६ को श्री बी. सुखदेव सिंहके द्वारा इसका उद्घाटन हुआ। अब भी स्टेन्डर्ड बिल्डिंग सोसाइटीकी बहुत बडी रकम देनी बाकी है। पिछले

साल समाज उसकी किश्तकी रकम भी भर न सका था और सारी जायदाद बेचनेकी नौबत आ गयी थी। ऐसे संकटके मौकेपर श्रीमान बी. परमेश्वर समाजकी सहायताके लिये आगे बढे। उन्होंने बडी उदारतापूर्वक ३९६ पौंड समाजको दान दिये; जिससे समाज अपनी जमीन जायदादकी रक्षा कर सका है। श्री बी. परमेश्वरकी यह रकम समाजको दान देनेवालोंमें सबसे बडी है। संकटकालकी इस सहायताके लिए समाज इनका बहुत कृतज्ञ है।

अधिकारी और सहायक समाजके वर्तमान पदाधिकारी ये हैं—सभापति श्री बी. गोविंद, मंत्री श्री आर. देवनारायण, कोषाध्यक्ष श्री के. देवीप्रसाद। समाजको इस बातका बडा खेद है कि उसके दो संस्थापक सदस्य श्री बी. बेचू तथा श्री डी सितलूका अवसान हो गया है। वे समाज के कार्योंमें बहुत रस लेते थे। समाजके अन्य सहायकोंके शुभ नाम ये हैं—श्री ईश्वरप्रसाद, श्री रघुनंदन, श्री एस. छोटई, श्री हरिचन्द्र, श्री किसुन, श्री पी. रामप्रसाद, श्री आर. शंकर आदि।

महिला आर्यसमाज, वेस्टविल

स्थापना वेस्टविल आर्यसमाजके कार्यकर्ताओंने स्त्रियोंमें जाग्रति लानेके उद्देश्यसे महिला आर्यसमाज खोलनेका निश्चय किया। तदनुसार स्त्री आर्यसमाज, दरबनकी संचालिकाओंकी मददमें ता. २६ जुलाई १९४२ को श्री बी. गोविंदके सभापतित्वमें वेस्टविलकी स्त्रियोंकी एक सभा हुई। इसमें महिला आर्य समाजकी स्थापना करनेका निर्णय हुआ। इस नयी संस्थाकी सभानेत्री श्री धर्मवती डी. सितलू, संयुक्त मंत्री कुमारी एस. शांतिवती और कुमारी आर. जगरानी एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती सुखराजी बैजनाथ निर्वाचित हुईं। ता. ८ अगस्त १९४२ को श्रीमती ए. पी सिंहके शुभहस्तोंसे महिला समाजका उद्घाटन समारम्भ हुआ। इस समय गुरुकुल कांगडीके स्नातक श्री हरिशंकरदेव आयुर्वेदालंकारका स्वागत भी किया गया।

कार्य स्थानीय आर्यसमाजको इस संस्था द्वारा हरएक कार्यमें मदद मिलती रहती है। जब समाजकी पाठशालाका मकान बनाया गया तो महिला

महिला आर्य समाज, वेस्टविल
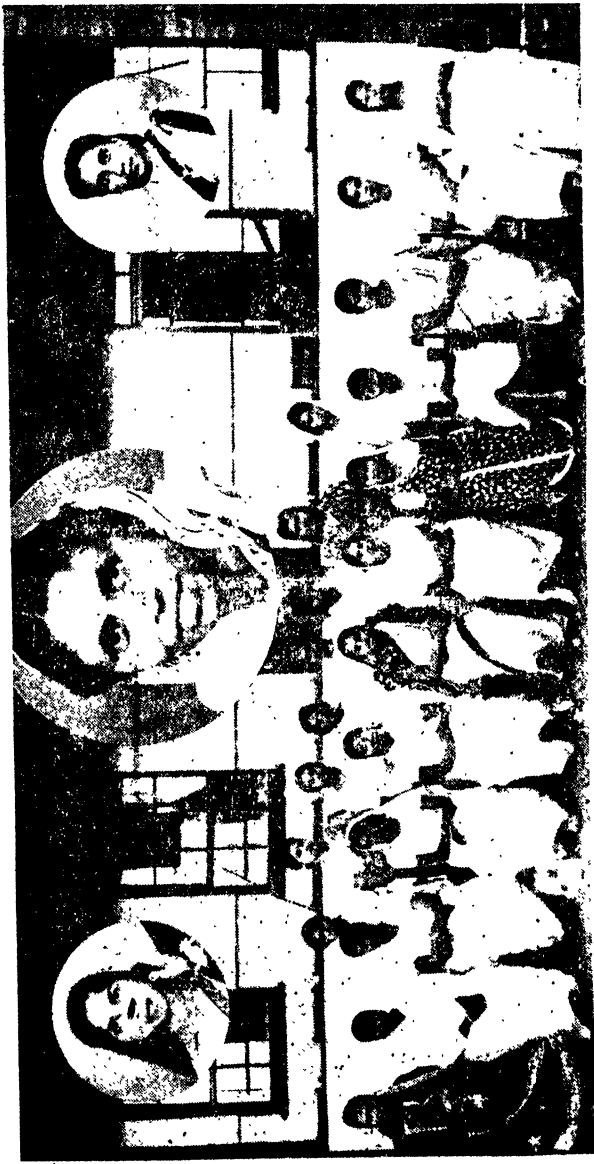
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

नागरी प्रचारिणी सभा, स्प्रिंगफिल्ड

संस्थापक सदस्य

सदस्याओंकी तरफसे चन्दा इकट्ठा करनेमें; बाजार लगानेमें तथा प्रदर्शनोंमें बडी सहायता मिली है। इसी तरह हिन्दू त्यौहार तथा अन्य धार्मिक कार्य दोनों संस्थाएं संयुक्तरूपसे मनाती हैं।

सभाके कार्योंमें आर्यसमाजके कार्यकर्ताओंके अलावा श्रीमती वी. लाल सिंह, श्रीमती पी. बी. सिंह, श्रीमती पी. बी. सिंह, श्रीमती पी. रामप्रसाद, श्रीमती देवकी देवनारायण आदिसे सदा सहायता मिलती रहती है।

नागरी प्रचारिणी सभा, स्प्रिंगफिल्ड

स्थापना स्प्रिंगफिल्डके भारतीयोंमें मातृभाषा हिन्दीके प्रचार और धार्मिक जागृति लानेके उद्देश्यसे सन् १९१७में नागरी प्रचारिणी सभा स्प्रिंगफिल्डकी स्थापना की गयी। इस संस्थाकी स्थापना करनेवालोंमें मुख्य सज्जन थे—स्व. लगनबर्ती, श्री बदरी उदित, श्री आर. हीरालाल, स्व. एम. रामचरण, स्व. सी. बिपत आदि।

कार्य सन् १९१७ में अमगेनी नदीमें बडी बाढ आयी थी, जिसने स्थानीय भारतीयोंको बहुत क्षति पहुंचायी। इस मौकेपर सभाने विपदग्रस्त लोगोंको भोजन, कपडा, दवाई आदिकी सहायता पहुंचानेमें बडी मदद की थी। सभाकी तरफसे समय २ पर भारतसे आनेवाले आर्य विद्वानोंके व्याख्यानोंका प्रबन्ध किया गया है। तथा धार्मिक प्रचारके प्रयत्न हुए हैं।

पाठशाला सभाकी स्थापनाके समयसे एक हिन्दी पाठशाला चालू की गयी। श्री ईश्वरप्रसाद इसके प्रथम अध्यापक थे। इसके बाद श्री रामावतार शुक्ल १९ वर्ष तक अध्यापक रहे। हिन्दी पाठशालाको चलानेके लिए 'सत्य दीपक नाटक मंडल' तथा 'विद्या उन्नति नाटक मंडल' की स्थापना की गयी। नाटकोंके अभिनयसे सभाको जो धन मिला उसके द्वारा वह पाठशालाको चला सकी और उसके लिए मकान भी बना सकी।

सभा १९२४ से प्राइवेट रूपसे हिन्दी और अंग्रेजीकी पाठशाला चलाने लगी। बादमें श्री बी. उदितके प्रयत्नोंसे अंग्रेजी विभागको सरकारी ग्रांट

मिलने लगी। सन् १९२९ में यह पाठशाला हिन्दी गवर्नमेन्ट एडेड स्कूलमें परिवर्तित हो गयी। सरकारी सहायतासे अंग्रेजी पाठशाला चलने लगी। अंग्रेजीके बाद हिन्दीकी पाठशाला भी चलती है। १९४७ में सभाने पाठशालाके लिए जमीन खरीद ली है। इस जमीनपर ६००० पौंड के व्ययमे पाठशालाका अच्छा मकान बनानेका सभाका इरादा है। सभाको श्री एन. देवी प्रसादसे जमीन खरीदनेको १०० पौंड का दान मिला है।

सभाका पुराना मकान जहां था उस जगहको दरबनकी सीटी कौंसिलने स्प्रिंगफिल्ड हाउसिंग स्कीमके लिये ले लेनेका हुक्म निकाला। इससे सभा बडी विपदामें फंस गयी। ऐसे मुसीबतके वक्त स्प्रिंगफिल्ड हिन्दू सभासे बडी सहायता मिली। जिसने अपने स्कूलके मकानमें प्लेटून योजनाके अनुसार सभाको अपनी पाठशाला चला देनेकी सुविधा कर दी है। इसके लिये हिन्दू सभाको बडा आभार है।

पदाधिकारी और सहयोगी सभाके वर्तमान सभापति श्री डी यदुनंदन हैं, मंत्री श्री आर. छोटई तथा कोषाध्यक्ष श्री एम. लछमन हैं। सभाके कार्योंमें सदा सहयोग देनेवालोंके शुभ नाम ये हैं—श्री. बी. शिवप्रसाद श्री. डी, अवधबिहारी, श्री जे. भरतराम, श्री एम. दुखरन, श्री. के. बेचू, श्री के. दुखी, स्व. बी. आर. पेनी, स्व. गंगादीन, स्व. गंगाशरण, श्री बी. जगनन, श्री आर. फेकू. श्री एम. रामपुकार आदि।

आर्यसमाज, स्प्रिंगफिल्ड

स्थापना और कार्य स्व. बी. ईश्वरप्रसादकी प्रेरणा और उत्साहसे इस संस्थाकी स्थापना २२ अगस्त १९४१ को हुई। समाजकी ओरसे हिन्दी पाठशालाका उद्घाटन २८–९–४१ के दिन हुआ। इसके लिये श्री सत्यदेवजीके सभापतित्वमें उत्सव हुआ था। समाजका अपना भवन न होनेसे स्थानीय नागरी प्रचारिणी सभाके भवनमें एक रात्री पाठशाला खोली गयी। जिसमें १५० विद्यार्थी दाखिल हुए। श्री ईश्वरप्रसाद तथा श्री गिरधारी अध्यापक कार्य कराते रहे। कई कारणोंसे १९४२ के अन्तमें यह पाठशाला बंद करनी पडी।

आर्य समाज, स्प्रिंगफिल्ड

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य स्त्री समाज, दरबन

पदाधिकारी तथा सदस्याएँ

भवन समाजका अपना भवन बनानेके लिए नवयुवकोंने नाट्य प्रयोग करके पैसा इकट्ठा किया। जिससे जमीन खरीद ली गयी। यहांपर समाजका भवन बनानेका प्रयत्न जारी है। स्प्रिंगफिल्डमें कोर्पोरेशनकी हाउसिंग स्कीमके अनुसार एक तरहके घरोंमें भारतीय लोग बसे हैं। जिससे प्रचार कार्यकी बडी सुविधा है। भवन बननेसे पाठशाला और प्रचारका कार्य अच्छी तरहसे चालू हो जावेगा।

पदाधिकारी व सहायक इस समय समाजके सभापति श्री बी. रामप्रसाद, मंत्री श्री एम. चेचन तथा कोषाध्यक्ष श्री आई. देवचन्द हैं। समाजके सहायकोंके शुभ नाम ये हैं—श्री के. रामलगन, श्री एस. कोमल, श्री जी. लाला, श्री बी. मनबोध, श्री एस. एल. सिंह, श्री सत्यदेवजी, श्री. ए. ई. मेलिन्सन एस्टेट मेनेजर, दरबन म्युनिसीपालिटी आदि। समाजके आधारस्तंभ श्री बी. ईश्वरप्रसादका सन् १९४८के जुलाईमें देहान्त हो गया जिससे समाजको बडी क्षति पहुंची है।

आर्य स्त्री समाज, दरबन

इस स्त्री समाजकी स्थापना ता. २४-१-४२ के दिन हुई। श्रीमती एम. एल. सिंह तथा श्रीमती ए. पी. सिंहके प्रयत्नोंसे यह कार्य हो सका। इस स्त्री समाजकी तरफसे हर मास सत्संग होता है। दीपावलीके अवसरपर अनाथोंको भोजन और कपडे बांटे जाते हैं। समय २ पर चंदा इकट्ठा करके आवश्यक कार्योंमें मदद पहुंचायी जाती है।

वर्तमान समयमें सभानेत्री श्रीमती लालसिंह, मंत्राणी श्रीमती डी. रूपानन्द तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती बिज्जू हैं। समाजके कार्योंमें निम्नलिखित देवियां दिलचस्पी लेती हैं—श्रीमती रामकैलास, श्रीमती सत्यदेव, श्रीमती देवीसिंह, श्रीमती बी. परमेश्वर, श्रीमती पी. बी सिंह, श्रीमती एच. बोधा सिंह, श्रीमती मगनलाल, श्रीमती शिशुपाल, श्रीमती आत्मानंद आदि।

आर्य संगीत मंडल, दरबन

स्थापना विदेशोंमें भारतीय संस्कृतिको कायम रखनेमें संगीतका बडा हाथ है। क्योंकि पाश्चात्य संगीतकी अपेक्षा भारतीय लोगोंमें अपना संगीत ही प्रिय है। इसपर विशेष ध्यान देनेके लिए सन् १९३० में श्री डी. रूपानंदकी अध्यक्षतामें दरबन शहरमें आर्य संगीत मंडलकी स्थापना की गई। स्थापनामें सहयोग देनेवाले थे—श्री पी. एच. नरसिंह, श्री जे. रामलखन, श्री डी. रामदत्त, श्री आर. रामशंकर आदि।

कार्य इस मंडलकी स्थापनासे पूर्व भारतीय संगीत विद्या इस देश में बहुत उपेक्षित थी। आर्य संगीत मंडलने अब इसका व्यापक प्रचार कर दिया है। जिसके फलस्वरूप अब जगह २ संगीत मंडल खुल गये हैं। यह मंडल समय २ पर जाहिर कार्योंमें निःशुल्क सम्मिलित होकर जनताकी सेवा करता रहा है। मंडलके द्वारा भारतसे आनेवाले प्रचारकोंके द्वारा प्रचार कार्य भी होता रहा है। इसी तरह यह मंडल दीपावली, जन्माष्टमी, स्वातंत्र्य दिन आदिके कार्यक्रम भी रखता रहा है। मंडलने श्री डी. रूपानंद तथा श्री डी. सिवबरनको संगीत सीखनेके लिए भारतवर्ष जानेमें सहायता भी पहुंचायी थी। मंडलके द्वारा दरबनके ब्रोड कास्टिंग स्टेशनपर भी कई धार्मिक कार्यक्रम रखे गये हैं।

पदाधिकारी तथा सहायक वर्तमान सभापति श्री जी. रामदत्त; मंत्री श्री जे. डी. योगानंद तथा खजानची श्री डी. आर. दीपानंद हैं। संगीत शिक्षक श्री जे. रामलखन तथा श्री पी. एच. नरसिंह हैं। इस मंडलको सहायता देनेवाले सदस्योंके शुभ नाम ये हैं—श्री एन. मदनजीत, श्री के. बी. सिंह, स्व एम. आर. वर्मा, श्री सुखराज छोटई, स्व. आर. एस. प्रसाद आदि।

आर्य संगीत मंडल, दरबन
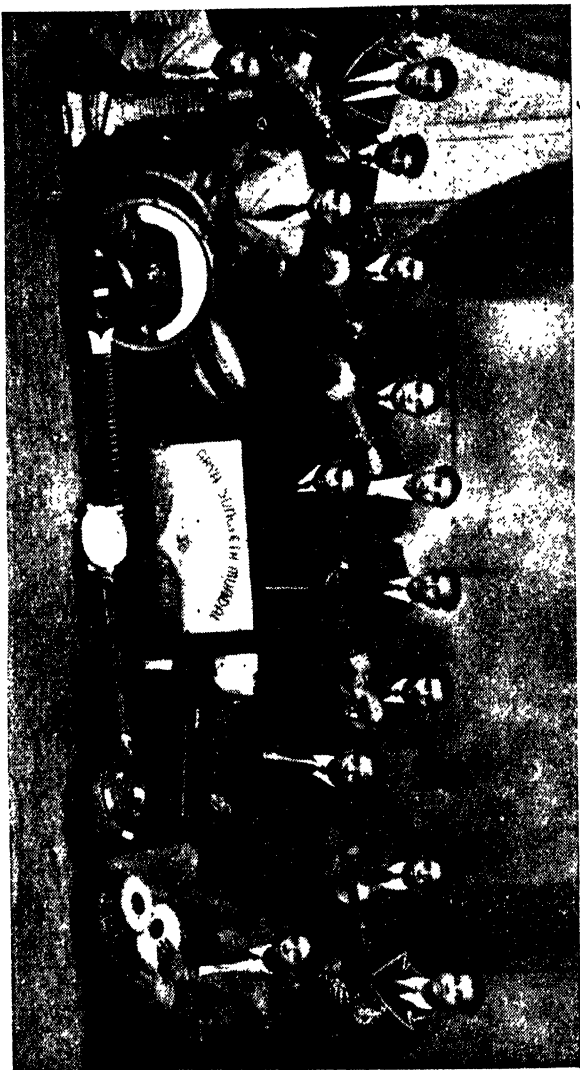
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य मित्र मंडल, सिडनम

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य भजन मंडल, दरबन
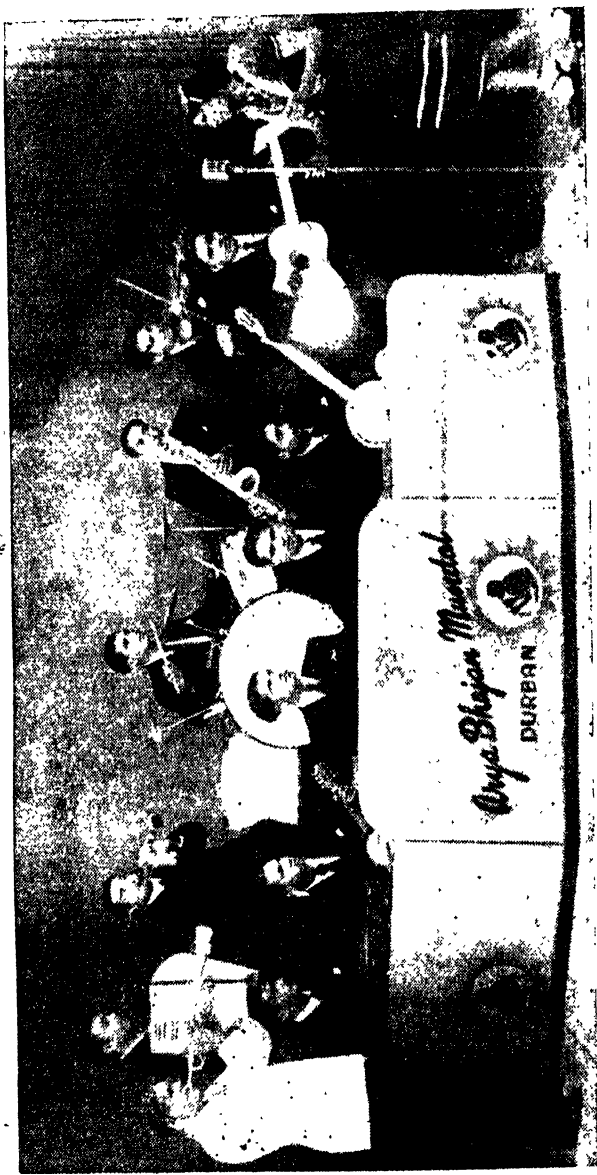
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य युवक मंडल, सीकाउलेक

पदाधिकारी तथा सदस्यगण – मध्यमें पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय

आर्य मित्र मंडल, सिडनम

वैदिक सिद्धान्तोंके प्रचारके उद्देश्यसे सन् १९३९ में आर्य मित्र मंडल सिडनमकी स्थापना हुई। मंडल साप्ताहिक सत्संग, वादविवाद सभा आदि का कार्य करता रहा। युवकोंको हिन्दी पढानेके लिए एक हिन्दी वर्ग चालू किया। फिर लडकोंके लिये भी मांग बढनेपर सन् १९४०में हिन्दी पाठशाला चालू की गई। यह पाठशाला मंडलके सदस्योंके घरपर चलती थी। सन् १९४२में एसनडीन स्कूलका मकान हिन्दी पाठशालाके लिये मिला। तबसे विद्यार्थी बहुत बढने लगे और २०० तक यह संख्या जा पहुंची। मंडलने प्रचारको बढानेके लिये १९४४ में आर्य बालक मंडल, आर्य कन्या मंडल तथा सेवादलकी भी स्थापना की। मंडलकी तरफसे समय २ पर उत्सव, यज्ञ, त्यौहार आदि भी मनाये जाते रहे।

वैदिक सिद्धान्तोंके प्रचारके लिये १९४२ में मंडलने 'टोर्च बेरर' नामक साप्ताहिक भी निकालना शुरु किया। शीघ्रही इसने अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली। एक तरहसे आर्य प्रतिनिधि सभाका यह मुख पत्र बन गया और आर्य संस्थाओंके विविध समाचार भी इसमें छपने लगे। युद्ध कालमें कागज आदि के दाम बहुत बढ जानेसे इसके आर्थिक प्रश्नको हल नहीं किया जा सका और इस उपयोगी मासिक को बन्द कर देना पडा।

आर्य भजन मंडल, दरबन

संगीतके द्वारा आर्य धर्मके प्रचारके उद्देश्यसे आर्य भजन मंडलकी स्थापना हुई है। सप्ताहमें एक बार इसके सदस्य संगीतके अभ्यासके लिये इकट्ठे होते हैं। विविध स्थलोंपर आवश्यकता होनेपर मंडलके संगीत दलसे सेवा दी जाती है। मंडलके सभापति श्री बी. शिवदीन हैं।

आर्य समाज, सिडनम

सिडनमके हिन्दुओंमें जागृति लानेके लिये ता. १९ फरवरी १९२९ के दिन श्री सत्यदेवजीके उद्योगसे इस समाजकी स्थापना हुई थी। समाज वैदिक

धर्मके प्रचारपर ध्यान देता रहा है। इसके लिये पं. तुलसीरामजीने बडे परिश्रम से तीन पुस्तिकाएं लिखीं। समाजने उन्हें प्रकाशित करके बिना मूल्य प्रचारार्थ वितरित किया। पुस्तिकाओंके नाम ये हैं—१. अन्त्येष्टि संस्कार पर विचार, २. सत्य सनातन धर्म क्या है, ३. वैदिक सन्ध्या और प्रार्थना। इस तरह पुस्तिकाएं प्रकाशित करके प्रचार करनेवाली संस्थाएं बहुत कम हैं। समाजकी तरफसे दीपावली, होली, जन्माष्टमी आदि त्यौहार तथा नामकरण, चूडाकर्म अन्नप्राशन, विवाह, अन्त्येष्टि आदि संस्कार भी करवाये जाते हैं। समाजका साप्ताहिक सत्संग भी होता है। समाजकी तरफसे एक हिन्दी पाठशाला भी चलती थी।

आर्य युवक मंडल, सीकाउलेक

स्थापना सीकाउलेक, अमगेनी नदी पर स्थित है। यहांपर ईसाई और मुसलमानोंका काफी प्रभाव रहा है। हिन्दुओंकी भी अच्छी बस्ती है। हिन्दुओंका विष्णु मंदिर और वैदिक स्मारक सभा है। १९१२ में आर्य युवक सभा, दरबनकी शाखाके रूपमें पं. वी. सी. नैनाराजने एक पाठशाला स्थापित की। जो श्री गुरु स्वामी मोदलीके घरपर चलती थी। फिर यह पाठशाला श्री नैनाराजके घरपर भी चलती रही पाठशालाके विद्यार्थियोंके लिये आर्य बाल मित्र मंडल स्थापित हुआ। ता. ४–११–१९२९ को इसे आर्य युवक मंडलका रूप दे दिया गया। जिसके सभापति पं. नैनाराज और मंत्री श्री एस. नारायण थे।

कार्य इस मंडलकी तरफसे यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग आदि होने लगे। कई हिन्दू इस मंडलके बडे विरोधी हो गये और कहने लगे कि जन्म के ब्राह्मणको ही यज्ञ कार्य करनेका हक है। एक दिन तो वे लडाई करने पर भी उतारु हो गये। परन्तु मंडलके कार्यकर्ताओंके शान्तिभावसे उन्हें लज्जित होना पडा। श्री नैनाराजके यहांसे जानेपर भी श्री जे. मगनलाल इस मंडल का कार्य उत्साहसे करने लगे। वे मंडलके मंत्री थे।

यहांके श्री के. पी. पीटरने अपनी जमीनका टुकडा मंडलको बिना

आर्य समाज, सिडनम
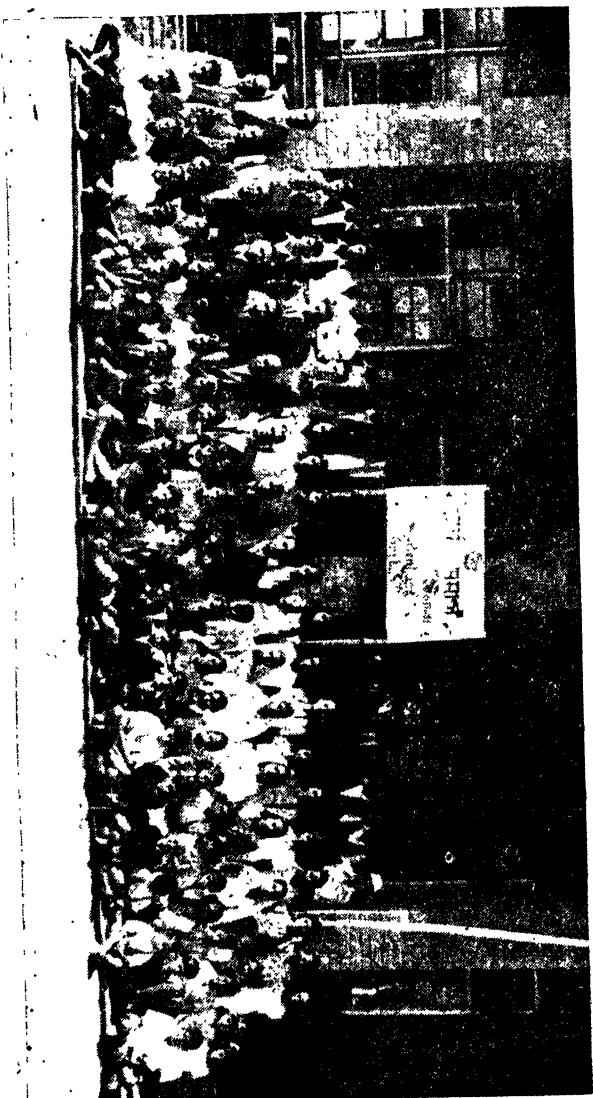
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

पं. आनन्दप्रियजी

मंत्री, आर्य कन्या महाविद्यालय, बडौदा।

स्व. पं. सुधीरकुमारजी विद्यालंकार
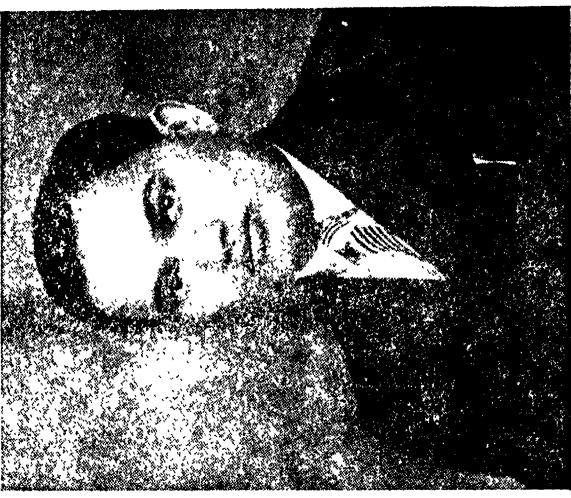
ट्रांसवालके आर्य प्रचारक

किरायेके दिया। जिसपर एक छोटासा मकान बनाकर मंडल अपनी हिन्दी पाठशाला चलाने लगा। मंडल एक रात्री पाठशाला भी चलाता रहा। सन् १९३३ में मंडलके कार्यमें बडा विघ्न उपस्थित हुआ। श्री के. पी पीटरने अपनी जमीन मुहमद आकुनजीको बेच दी। मंडलके कार्य कर्ताओंने बडी कोशिश की कि यह जमीन पाठशालाके लिए मिल जावे। श्री पीटरने मंडल को जमीन देनेका विश्वास दिया था। परन्तु उसका लेख न होनेसे जमीनका कब्जा लेनेमें निष्फलता हुई। इस प्रकार धन और परिश्रम बेकार हुआ। तभीसे इस मंडलका कार्य ढीला पड गया है।

मंडलकी पाठशाला समय २ पर श्री एम. जे. नारायण, श्री जी. राम प्रसाद, श्री जे. शिवमंगल तथा श्री बी. रूपलालके गृहपर भी चलती रहती थी।

हिन्दी प्रचारिणी सभा, अवोका

बारह वर्ष पूर्व अवोकामें हिन्दी प्रचारिणी सभाकी स्थापना हुई। सभाने हिन्दी पाठशाला स्थापित कर कार्य शुरु किया। यहां वैदिक सिद्धांतों की भी शिक्षा दी जाती थी। इससे कई लोग सभाका विरोध करने लगे। यहांपर स्थित मंदिर समितिके प्रधान श्री ईश्वर विलाससे सभाको मदद मिली। इससे विरोध शांत हो गया। सभाकी तरफसे साप्ताहिक सत्संग भी होने लगा। सभाने युवकोंको शिक्षा देनेके लिये एक रात्री पाठशाला भी खोली। समय २ पर सभाकी तरफसे प्रचारकोंके व्याख्यान भी होने लगे। स्त्री समाज और भजन मंडल भी कायम किये गये।

सभाके सहायक श्री सुन्दरप्रसादजी थे। उनके स्वर्गवासके बाद सभा का कार्य शिथिल हो गया और धीमे २ प्रवृत्ति मन्द होने लगी। ऐसी अवस्था में सभाके मंत्री भी इस बस्तीको छोडकर दूसरी जगह चले गये। जिससे काम एकदम रुक गया। हिन्दी पाठशाला भी अब बंद पडी है। जनतामें रुचि है। यदि कार्यको पुनः चालू किया जाये तो उन्नति होनेकी संभावना है।

सभाके प्रधान श्री एस. ए. नायडू, मंत्री श्री कालीप्रसाद तथा कोषाध्यक्ष श्री जे. शिवपाल थे।

अध्याय बारहवाँ.

नाताल प्रान्तकी शेष आर्य संस्थाएँ

वेद धर्म सभा, पीटर मेरित्सबर्ग

स्थापना पीटर मेरित्सबर्ग, नाताल प्रांतकी राजधानी है। इस शहरमें १०,००० भारतीय लोग बसते हैं। भारतसे यहांपर आये हुए श्री गाईसिंह, श्री मक्खन सिंह, श्री भिखारी महाराज आदिने इस शहरमें १९०८ में आर्यसमाजकी स्थापना की थी। यह आर्यसमाज इस देशका प्रथम आर्यसमाज था। इसी वर्ष स्वामी शंकरानन्दजी इस देशमें आये। स्वामीजी प्रचारके लिए यहांपर भी पहुंचे। यह वह जमाना था जब लोग आर्यसमाजके नामसे चिढते थे, इससे स्वामीजीने आर्यसमाजका नाम बदलकर 'वेद धर्म सभा' रखा। स्वामीजीके प्रचार कार्यसे बहुत जागृति आयी। स्वामीजीने खुद वेद धर्म सभाके लिये जमीन खरीदी। उनसे प्रेरणा पाकर कई सज्जनोंने मिलकर यहां आर्य अनाथाश्रम भी खोला। जिसमें आज भी कई अनाथ पल रहे हैं।

सन् १९१७में इस शहरमें द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन भी हुआ था। जिसकी सफलताके लिए सभाने बहुत उद्योग किया था। इस सम्मेलन से प्रेरणा पाकर इस प्रदेशमें आसपास कई हिन्दी पाठशालाएँ चलने लगी थीं। सन् १९२१में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य हिन्दी पाठशालाके संचालनका था। संगठनको ध्यानमें रखकर यह सभा १४० पौंडकी अपनी जायदादके साथ वेद धर्म सभामें मिल गयी है।

वेद धर्म सभा, पीटरमेरित्सबर्ग

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

हिन्दू स्त्री समाज, पीटरमेरित्सबर्ग

पदाधिकारी तथा सदस्याएँ

भवनका निर्माण सन् १९३४ में सभाने चर्च स्ट्रीटमें १७५० पौंडकी जमीन खरीदी। बादमें इसका कुछ भाग अच्छे दामोंपर बेच दिया। सभाके संचालकोंने बहुत परिश्रम करके ३००० पौंडके खर्चसे एक विशाल भवन बनवाया। वेद धर्म सभाके इस भवनकी आधार शिला श्रीमान् कूर्पी मारीने रखी थी। तथा भारतीय विद्वान सर राधाकृष्णन्के शुभ हस्तोंसे ७ अप्रैल १९३९ को इसका उद्घाटन हुआ।

आर्य समाजकी स्थापना और विलीनीकरण

डॉ. भगतराम सहगल यहांपर सन् १९२९ में आये। उन्होंने बहुतसी संस्थाओंके नाम बदलकर उन्हें आर्यसमाज नाम दे दिया था। इसी तरह उन्होंने वेद धर्म सभाका नाम भी बदल देना चाहा। पर सभाके सदस्य इस के लिए सहमत नहीं हुए। तब उन्होंने नये आर्यसमाजकी स्थापनाके लिए प्रयत्न किया। श्री एफ. सत्यपालजीके घरपर 'आर्यसमाज पीटर मेरित्सबर्ग' की स्थापना की गयी। पं. आर. बी. महाराज इसके सभापति, श्री एस. महाराज तथा श्री आर. बनवारी संयुक्त मंत्री बने। इस समाजने ११५० पौंडसे जमीन और मकान खरीदे। परन्तु मेरित्सबर्गके कार्यको सुसंगठित रखनेकी इच्छासे यह आर्यसमाज अपनी जायदादके साथ सन् १९४१में वेद धर्म सभा में तिरोहित हो गया। यहांपर एक 'सत्य वर्धक सभा' भी बनी थी। जो सन् १९४०में ९५० पौंडकी जायदादके साथ वेद धर्म सभामें मिल गयी।

हिन्दी पाठशाला और प्रचारके कार्य वेद धर्म सभा द्वारा हिन्दी पाठशाला चल रही है। जिसमें ६ कक्षाएँ लगती हैं और २२० विद्यार्थी पढते हैं। इसके मुख्याध्यापक पं. जगमोहन 'विद्यारत्न' हैं। पंडितजी वैदिक सिद्धान्तोंका तथा हिन्दीका ऊंचा ज्ञान पाने भारतवर्ष गये थे। वहां लाहौरमें रहकर उन्होंने विद्याध्ययन किया तथा प्रचारका अनुभव लिया था। इससे हिन्दी पाठशालामें एवं आर्य समाजके प्रचारमें बहुत प्रगति हो सकी है। पंडितजीके साथ अन्य ६ अध्यापक-अध्यापिकाएँ पाठशालामें सहयोग दे रहे हैं। यह पाठशाला हिन्दी शिक्षा संघमें सम्मिलित है। आज तक

पाठशालाके लिए अध्यापकरूपसे निम्न महानुभावोंका सहयोग मिला है—पं. रामप्रसाद पांडेय, पं. दशरथ पांडेय, पं. शिवनारायण पांडेय, श्री सरदवन सिंह, श्री पुष्करनाथजी, श्री आर. बनवारी, श्री मैकूराम, श्री रामप्रताप सिंह पं. सदानंद दुबे तथा बाबू रामबली सिंह।

वेद धर्म सभाकी ओरसे प्रति रविवारको सत्संग होता है। संस्थाने स्त्रियोंमें प्रचार करनेके उद्देश्यसे 'हिन्दू स्त्री समाज' की स्थापना की है। सभा की तरफसे त्यौहार मनाये जाते हैं। संस्थाका वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधामसे होता है। सन् १९३४ में संस्थाने अपनी रजत जयन्ती मनायी थी। यहांपर भारतसे आनेवाले प्रचारकों द्वारा प्रचार करनेकी व्यवस्था संस्थाकी ओरसे होती है। हिन्दी पाठशालाको आर्थिक सहायता पहुंचानेके उद्देश्यसे संस्था प्रति वर्ष बाज़ारका आयोजन करती है। जिसके द्वारा २००—३०० पौंडके करीबका लाभ संस्थाको होता है। अनाथों और गरीबोंको सहायता देनेका कार्य संस्थाकी तरफसे होता है। इसके लिए प्रति वर्ष ५० पौंड खर्च किये जाते हैं। इस समय संस्थाके पास करीब १० हजार पौंडकी जमीन जायदाद है।

पदाधिकारी तथा सहायक सभाके वर्तमान प्रधान श्री देवानंद सरवण हैं। संयुक्त मंत्री श्री रणछोड बनवारी तथा श्री बी. भूखन हैं। कोषाध्यक्ष श्री मोतीराम शिवपाल हैं। सभाको अपनी अमूल्य सेवाएँ देनेवाले कई सज्जन हैं, जिनके सहयोगसे ही यह संस्था इतना कार्य कर सकी है। संस्थाके कुछ सहयोगियोंका स्वर्गवास हो गया है। उन स्वर्गस्थ आत्माओंके शुभ नाम ये हैं:—स्व. गाही सिंह, स्व. ब्रह्मदेव, स्व. बुलाकी, स्व. हनुमान, स्व. रामछबि महाराज, स्व. एन. वी नायक, स्व. डी. के. सोनी, स्व. बी. रामचरण, स्व. सुन्दर, स्व. शिवचरण सिंह, स्व. भगवानदीन, स्व. मक्खन सिंह, स्व. परागजी सोनी, स्व. सरवण, स्व. भूठा पटेल, स्व. हरिभाई मकनजी, स्व. चार्ली नलैया।

वर्तमान समयमें सभाको सहयोग देनेवाले सज्जनोंके शुभ नाम ये हैं—श्री सोमचंद वातर, श्री दामजी वातर, श्री आर. बोधासिंह, श्री एम. एन.

भूला, पं. आर. बी. महाराज, श्री एफ. सत्यपाल, बाबू रामबली सिंह, श्री पद्मसिंह, श्री ई. गुलदीप, श्री घेला दयाराम, श्री प्रभु मकनजी, श्री आर. राजकुमार, श्री जी. जगवंत, श्री एम. रामदीन, श्री बी. शिवपाल, श्री जी. एस. महाराज, श्री ए. वी. मुदली, बाबू गणपत सिंह, श्री जे. बी. सिंह, श्री टी. रामखेलावन, श्री गोपाल दामजी सोनी, श्री बी. नगेसर, श्री जे.एम. सोनी, श्री कालीचरण, श्री हरिकिसुन घेला, श्री आर. वावजी आदि।

हिन्दू स्त्री समाज, पीटर मेरित्सबर्ग

स्थापना मेरित्सबर्गकी स्त्रियोंमें जागृति लानेके लिए तथा वैदिक सिद्धान्तोंके प्रचारके लिए वेद धर्म सभाकी प्रेरणासे इस हिन्दू स्त्री समाजकी स्थापना ता. ४–४–४३ को हुई। इसे स्थापित करनेमें श्री एफ. सत्यपाल, श्री आर. बी. महाराज तथा श्री ई. गुलदीपके प्रयत्न बहुत हैं। ता. ९.-५-४३ के दिन श्रीमती सुशीलाबहन मणिलाल गांधी (महात्मा गांधीजीकी पुत्रवधू) के शुभ हस्तोंसे बड़े समारोहके साथ इस संस्थाका उद्घाटन हुआ। श्री सुशीला गांधीने नारी जागृतिपर बड़ा मार्मिक व्याख्यान दिया।

कार्य स्त्री समाजकी तरफसे वार्षिक धार्मिक विराट् सभा होती है। मासिक सत्संग होता है। स्त्रियोंके लिए स्वाध्याय और वादविवादके खास कार्यक्रम रखे जाते हैं। उत्सव और त्यौहार भी मनाये जाते हैं। समाज का अपना एक सेविका दल भी है। इसकी तरफसे संस्कारों, उत्सवों आदि में सहयोग दिया जाता है। वेद धर्म सभाके वार्षिक बाज़ारमें इस स्त्री समाज का बड़ा सहयोग रहता है। कपड़े सीने, चाय तथा अन्य भोजन सामग्री तैयार कर देने आदिका कार्य समाजकी सदस्याएँ करती हैं।

स्त्री समाजका मुख्य कार्य गरीब और दुखी अबलाओंको मदद पहुंचाना भी है। भगवान देवी नामक असहाय स्त्रीको समाजकी तरफसे श्री एफ. सत्य पालके परिवारने डेढ वर्ष तक अपने घरपर रखा था। इसी तरह ६ अनाथ बच्चोंको स्त्री समाजने पाला था, फिर उन्हें आर्य अनाथाश्रम, दरबनमें भेज दिया था। इस आश्रमकी एक १६ वर्षकी लड़कीकी शादी स्त्री समाजने अपने खर्चसे करवा दी थी।

स्त्री समाज अन्य संस्थाओंके कार्योंमें भी सहयोग देती रहती है। उन के लिये चन्दा भी एकत्रित कर देती है। भारतीय-आफ्रिकन दंगोंके समय समाजने पीडितोंकी सहायताके लिये २० पौंड इकट्ठे किये थे। हिन्दी शिक्षा संघ, नातालको समाजने २५ पौंडका चन्दा इकट्ठा करके दिया है।

वर्तमान समयमें इस समाजकी सभानेत्री श्रीमती आर. बी. महाराज हैं। मंत्राणी श्रीमती एस. जगमोहन तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती डी. ब्रह्मदेव हैं। समाजके कार्योंमें सेवाभावसे सहयोग देनेवाली महिलाओंके शुभ नाम ये हैं— श्रीमती डी. के. सोनी, श्रीमती डी. एस. वातर, श्रीमती ई. गुलदीप, श्रीमती बी. सुन्दर, श्रीमती टी. रामखेलावन, श्रीमती बी. रामचरण, श्रीमती एफ. सत्यपाल, श्रीमती बी. शिवपाल, श्रीमती आर. तिलक, श्रीमती एम. मैक, श्रीमती पराग, कु. रामदुलारी, श्रीमती आर. राजकुमार, श्रीमती एस. डी. चेटी आदि।

प्लेसिसलेयर आर्य समाज

स्थापना मेरित्सबर्गके पास प्लेसिसलेयर एक ग्राम है। यहां हिन्दुओंकी अच्छी बस्ती है। यहांपर ईसाई मिशनरियोंकी तरफसे अंग्रेजी पाठशाला चलती है। जिसमें ५०० के करीब भारतीय बच्चे पढते हैं। इस प्रदेशमें कोई हिन्दू संस्था कार्य नहीं कर रही थी। यह बात श्री एफ. सत्यपाल को बहुत अखरी। उन्होंने ता. ३०-३-२४ को स्थानीय लोगोंका एक विराट् सम्मेलन बुलाया। उसमें इस संस्थाकी स्थापना हुई। उस समय इसका नाम 'नागरी हितैषी सभा' रखा गया था। सन् १९२९में डॉ. भगतराम सहगल प्रचारके लिये भारतसे इस देशमें आये वे इस ग्राममें पधारे। उन्होंने यहां अच्छा प्रचार कार्य किया। उन्हींकी सलाहसे संस्थाका नाम बदलकर 'प्लेसिसलेयर आर्य समाज' रखा गया।

कार्य समाजमें साप्ताहिक सत्संग होता है। उत्सव, त्यौहार आदि मनाये जाते हैं। प्रचारकों द्वारा प्रचार समय २ पर करवाया जाता है। अब-लाओं और अनाथोंकी रक्षाका कार्य समाज करता रहा है। इस समाजमें

आर्य समाज, प्लेसिसलैयर
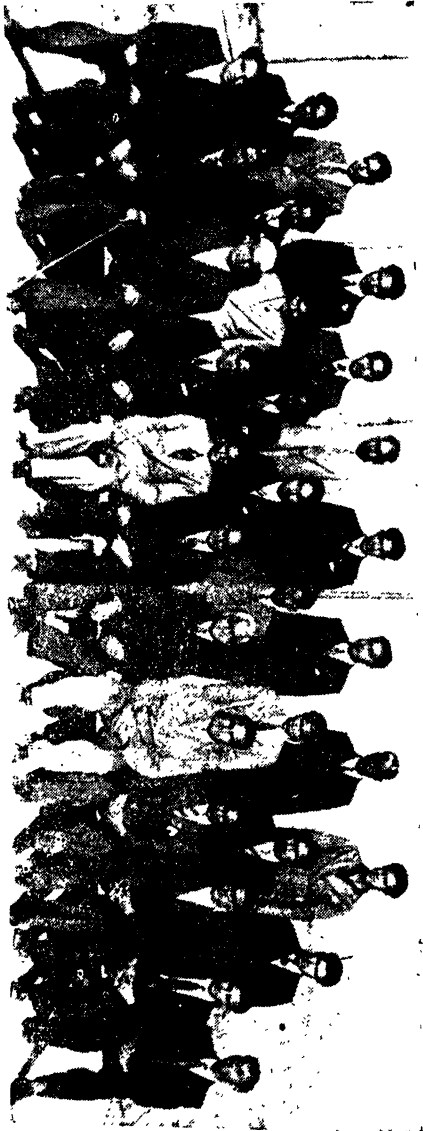
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्यसमाज, प्लेसिसलेयर

पदाधिकारी, सदस्य तथा विद्यार्थीगण

माउन्ट पाट्रिजके लोग भी सम्मिलित थे। सन् १९३४ में वहांके लोगोंने श्री गंगाबिशुनकी अगुवानीमें पृथक् आर्य समाजकी स्थापना की। तबसे श्री एस. दुखरन यहांके समाजके सभापति हैं। श्री दुखरन एक जोशीले नवयुवक हैं। उन्होंने अपने साथ नवयुवकोंकी एक अच्छी सेना खडी करली है।

समाजका भवन तथा पाठशाला समाजके कार्यकर्ताओंकी अपना भवन बनानेकी बडी अभिलाषा थी। इसके लिये समाजके अन्तर्गत भजन मंडलकी स्थापना की गयी। इस मंडलके द्वारा श्री एफ. सत्यपाल विरचित 'खूनी खंजर' नामक नाटक खेला गया। इससे अच्छी आमदनी हुयी और समाजके लिये भूमि खरीदी गयी। इस अवसरपर पं. जगमोहनजीने यहां वैदिक कथा की। समाजकी भूमि हो जानेपर भी मकान बनानेका प्रश्न जटिल था। पडौसके ईसाई मिशनने हिन्दी पाठशालाके लिये अपना मकान पुनः देनेसे इन्कार कर दिया। इससे नवयुवकोंने कमर कसी। चन्दा इकट्ठा किया गया। समाजकी ओरसे बाजार लगानेकी योजना हुई, जिससे अच्छी आमदनी हो सकी। इस तरह ता. १८-६-४६ के दिन समाज के संस्थापक श्री एफ. सत्यपाल द्वारा आर्यसमाज भवनकी आधार शिला रखी गयी। इस मौकेपर काफी लोग उपस्थित हुए। पं. नरदेवजी वेदालंकारने 'आर्यसमाज' पर ओजस्वी व्याख्यान दिया। इस समय पं. जगमोहनजी, श्री एस. एल. सिंह, श्री सत्यदेवजी आदिके व्याख्यान हुए।

समाजकी तरफसे हिन्दी पाठशाला चल रही है, जिसमें १३० बच्चे पढ रहे हैं। अध्यापक सेवा भावसे पढाते हैं। यहांपर पं. जगमोहनजीने रात्री पाठशाला तथा प्रचारक श्रेणी कायम की है। पाठशालाके अध्यापक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी परीक्षाएँ दे रहे हैं। इस समय समाजके पास ३१०० पौंडकी सम्पत्ति है।

पदाधिकारी तथा सहयोगी समाजके सभापति श्री एस. दुखरन हैं। मंत्री श्री डी. बन्धु तथा कोषाध्यक्ष श्री जे. जी. बिशुन हैं। समाजकी प्रगतिमें सदा सहयोग देनेवाले सज्जनोंके शुभ नाम ये हैं—श्री एम.

एन. भूला, म० के. परदेशी, म० डी. एल. वातर, म० एस. रामदीन, म० डी. छेदी, म० रामछध मारी, म० एम. बन्धु, म० बी. हरखू, म० एल. रामप्रसाद, म० एल. बी. संगम, म० गंगाबिशुन, म० बी. भोला, म० राम जतन, कु. दुलारी, श्रीमती रामकिसुन, म० पी. आर. सिंह, म० लक्ष्मण सिंह, म० सत्यभूषण, म० डी. आर. सिंह, पं० आर. बनवारी आदि।

आर्य स्त्री समाज, प्लेसिसलेयर

इस स्त्री समाजकी स्थापना स्थानीय आर्यसमाजके द्वारा ता. १२-९-४२ को हुई। स्त्री समाजकी स्थापना करनेमें पं. जगमोहनजीका परिश्रम बहुत है। उन्हींके शुभ करकमलोंसे संस्थाका उद्घाटन हुआ था।

इस गांवकी स्त्रियोंकी बडी दुर्दशा थी। उनमें किसी तरहकी जागृति न थी। इससे समाजकी संचालिकाएँ तथा सदस्याएँ खुद हिन्दी तथा संध्या हवन सीखने लगीं और सीखकर स्त्रियोंमें प्रचार करने लगीं। इसमे साप्ताहिक सत्संग, त्यौहार, उत्सव आदिके कार्य करना सरल हो गया। यह स्त्री समाज स्थानीय आर्यसमाजके सहयोगमें हिन्दी प्रचार आदिका कार्य करता है। जनवरी १९४९ के आफ्रिकन-भारतीय दंगोंमें भी समाजने पीडितोंकी मदद की।

समाजकी सभानेत्री श्रीमती एस. दुखरन, मंत्राणी श्रीमती एच. अर्जुन और कु. चम्पावती तथा कोषाध्यक्ष कु. सविमति बंधु हैं। संस्थाको निम्न लिखित बहिनोंसे अच्छा सहयोग मिलता रहता है–श्रीमती परदेशी, श्रीमती आर. बन्धु, श्रीमती एच. बेचू, श्रीमती एस. रामदीन, श्रीमती एस. छेदी, श्रीमती एम. रामदीन, श्रीमती एफ. सत्यपाल, श्रीमती डी. बंधु, श्रीमती शिवरन आदि।

वैदिक विद्या प्रचारक सभा, पेंट्रिच

स्थापना पेन्ट्रिच मेरित्सबर्गकी एक बस्ती है। जहां भारतीय लोग काफी संख्यामें बसे हुए हैं। इनमें अधिकतर हिन्दी भाषी लोग हैं। ता. २-२-२८ के दिन यहांपर वैदिक विद्या प्रचारक सभा की स्थापना की

वैदिक विद्या प्रचारक सभा, पंट्रिच
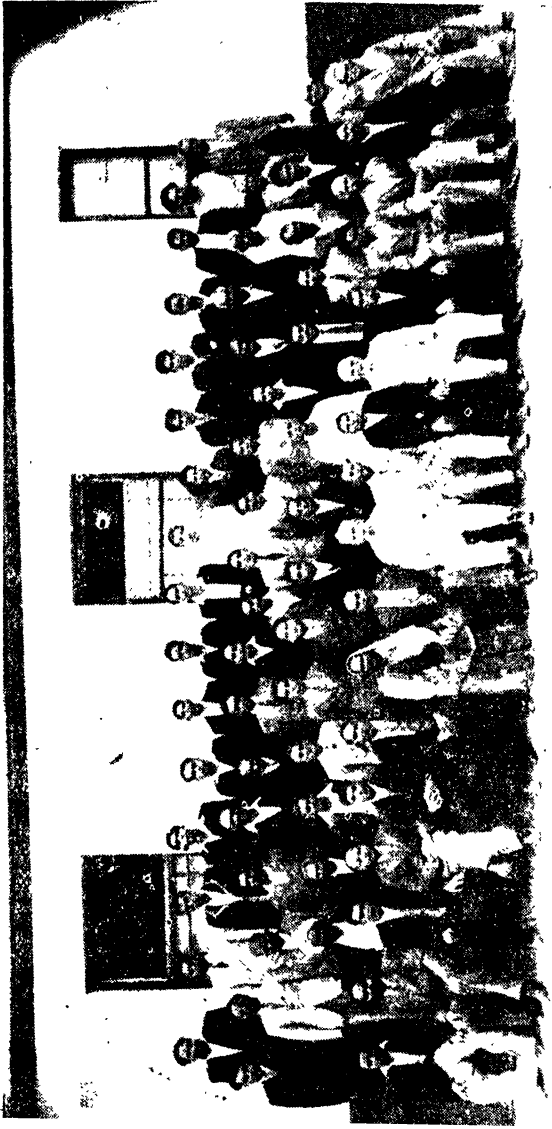
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य स्त्री समाज, प्लेसिसलेयर

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य समाज, माउन्ट पाट्रिज

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

गयी। जिसके लिये श्री रामबली सिंह, श्री बी. पूदन, श्री एस. पूदन तथा श्री टी. डी. सिवव्रतने खूब मेहनत ली थी।

पाठशाला यहांके बच्चोंको हिन्दीकी शिक्षा देनेके लिये एक टीन के छोटेसे मकानमें पाठशाला चालू की गयी। प्रारम्भमें २५ विद्यार्थी प्रविष्ट हुए। इसके अध्यापक श्री लक्ष्मण सिंह थे। सभाने एक अच्छा मकान बनाने का निश्चय किया। बाबू रामबली सिंह सभाके आधारस्तंभ हैं। उनके उद्योग से अच्छा चन्दा हो गया। सन् १९३२में सभाका अपना भवन तैयार हो गया। आज इस हिन्दी पाठशालामें २५० विद्यार्थी हैं। श्री एस. दुग्वरन प्रधानाध्यापक हैं। चौथी कक्षा तक पढाई होती है। अब पाठशालाके लिये नये चार कमरे भी बन गये हैं।

कार्य सभाकी ओरसे उत्सव और त्यौहार मनाये जाते हैं। साप्ताहिक सत्संग होता है। समय २ पर प्रचारकों द्वारा प्रचार भी होता है। सभा के अधीन एक विद्यार्थी सभा है। जिसके द्वारा व्याख्यानकी शिक्षा दी जाती है। नवयुवकोंके लिये रात्री पाठशाला भी है। जिसमें श्री आर. बनवारी सेवाभावसे पढाते हैं। सभाके पास ३११० पौंडकी जमीन जायदाद है।

पधाधिकारी तथा सहायक संस्थाके सभापति श्री बाबू रामबली सिंह, मंत्री श्री विक्रम पूदन तथा कोषाध्यक्ष श्री रामधनी महावीर हैं। सभाको आगे बढानेमें निम्न महाशयोंका सहकार मिलता रहा है—श्री ई. गुलदीप, पं. आर. बी. महाराज, श्री जी. जगवंत, श्री हरि मूताल, श्री. डी. के. सिंह, श्री बी. शिवपाल, श्री आर. महादेव, श्री बिहारी महाराज, श्री हरिप्रसाद, श्री प्रेमचन्द, श्रीमती विद्यावती रामनाथ, श्री जी. सुखालू आदि।

आर्यसमाज, माउन्ट पाट्रिज

स्थापना इस संस्थाकी स्थापना ता. ४ दिसम्बर १९३४के दिन दरबन निवासी श्रीमान् एफ. रामलगनके द्वारा हुई थी। एक छोटीसी झोंपडी बनाकर उसमें २ जून १९३५ के दिन पं. आर. बी महाराज द्वारा हिन्दी

पाठशालाका उद्घाटन हुआ। फिर तो स्थानीय लोगोंकी सहायतासे १९४० में पाठशालाका मकान बन गया। यहां पांचवीं कक्षा तक हिन्दी पाठशाला लगती है, जिसमें १२५ विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। यह पाठशाला हिन्दी शिक्षा संघमें सम्मिलित है।

पाठशाला यहांके बच्चोंकी अंग्रेजी शिक्षाके लिये भी कोई इन्तजाम न था। इस लिये श्री गंगाबिशुनजीकी सहायतासे सन् १९४३में अंग्रेजी पाठशाला चालू की गयी। श्री एस. बचारामने इसके लिये जमीन दानमें दी। विद्यार्थियोंकी वृद्धि होनेपर दूसरे कमरे भी बनवाये गये हैं। सरकारकी तरफसे इस पाठशालाको ग्रांट मिलती है।

कार्य आर्यसमाजकी तरफसे साप्ताहिक सत्संग होता है। धार्मिक त्यौहार मनाये जाते हैं। समय २ पर व्याख्यानोंका प्रबंध किया जाता है। सन् १९३९में समाजने तीन चार परिवारोंको ईसाई होनेसे बचाया। संस्थाके पुरोहित और हिन्दी अध्यापक पं. ओ. शिवरतन हैं। इन्हें पं. आर. बी. महाराजने यज्ञोपवीत देकर पुरोहित बनाया। इससे हिन्दुओंमें बडी खलबली मची। धमकियां भी दी गयीं। परन्तु स्वामी भवानी दयालजी तथा पं. जगमोहनजीके उत्साहसे यह कार्य सम्पन्न हुआ। स्वामीजीने अन्य भी २४ आर्योंको यज्ञोपवीत धारण करवाया। पं. ओ. शिवरतन बडे सेवाभावसे अध्यापकका कार्य कर रहे हैं। वे ही आर्यसमाजके मंत्री भी हैं। श्री सीतारामजी गौरी प्रधान तथा श्री एस. बैजू कोषाध्यक्ष हैं। समाजको मदद पहुंचानेवाले सज्जन ये हैं—श्री गंगाबिशुन, श्री आर. बी. महाराज, श्री डी.एस. वातर, श्री रामगरीब, श्री आई. बी. संगम, श्री एस. दुखरन, कु. सीरावती बैजू, कु. सरस्वती, कु. दिनेशचन्द्र आदि।

आर्य नवयुवक सभा, रेइसतोर्प

स्थापना नातालकी राजधानी मेरित्सबर्गसे तीन मील परे भारतीयोंकी एक छोटीसी बस्ती है जो रेइसतोर्प कहलाती है। यहांके भारतीय लोग प्रायः मजदूरी करके अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। सन् १९३५ में वैदिक
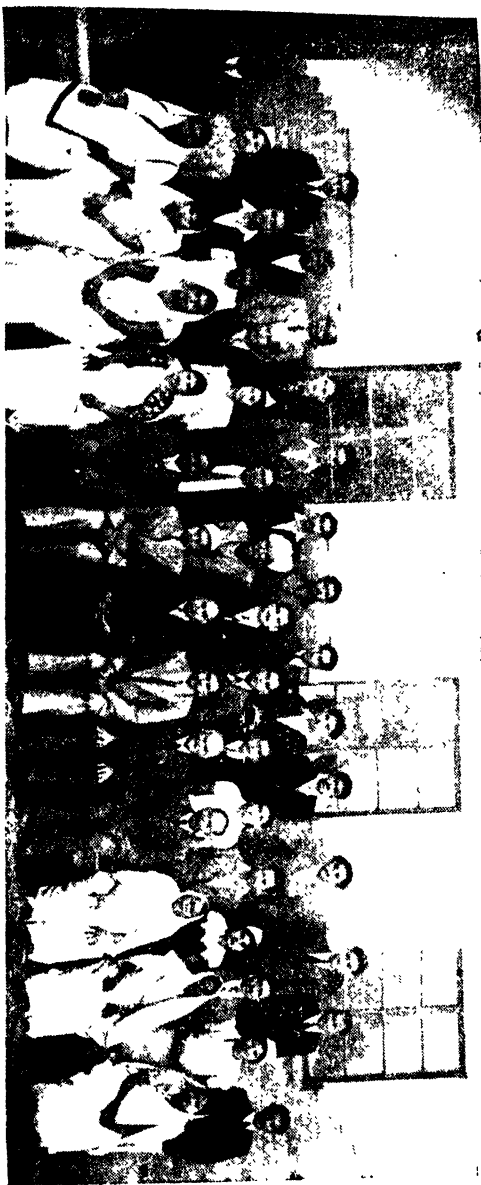
आर्य नवयुवक सभा, रेईसतोर्प

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्य नवयुवक सभा, रेईसतोपे
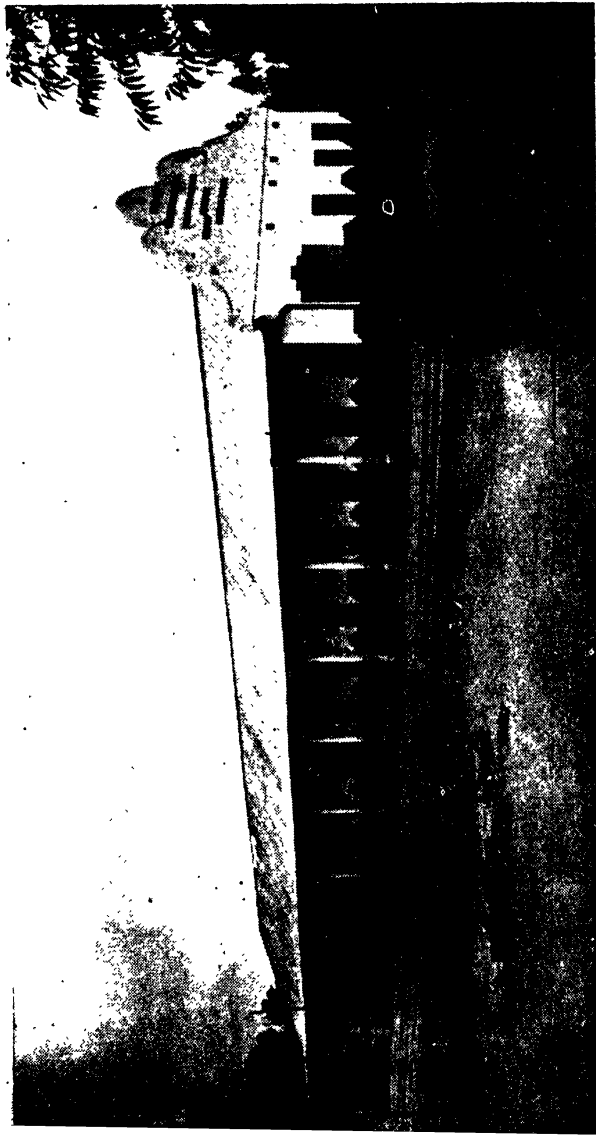
पाठशालाका मकान

सिद्धान्तोंके प्रचारके लिये यहांके निवासियोंने 'रेइसतोर्प वैदिक सभा' की स्थापना की। बादमें सन् १९४४ में इस संस्थाका नाम बदलकर 'आर्य नवयुवक सभा' रखा गया।

पाठशाला यहांके बच्चोंको अंग्रेजी और हिन्दी पढानेके लिये कोई साधन न था। सन् १९३५ में स्थानीय सिन्डिकेटने सभाको एक टुकडा जमीन दानमें दी। बादमें रिक्रियेशन क्लबने भी कुछ जमीन दी। सभाके प्रधान श्रीमान बैजूने अपना उदार हाथ बढाया तथा पाठशालाके लिये जो मकान बने उसमें आधा खर्च देना मंजूर कर लिया। इससे कार्यकर्ताओंका उत्साह खूब बढा। पाठशालाके मकानके लिये आधा खर्च प्रान्तीय शिक्षा विभागकी तरफसे मिला। श्री ए. ई. मार्नीने फरनीचर आदि दिया। अगस्त १९४५ में मकानका उद्घाटन हुआ। श्री डी. बैजू संस्थाके प्राण हैं। उनके ही पुरुषार्थसे यह संस्था चल रही है। पाठशालामें विद्यार्थियोंकी संख्या बढ गयी तो श्री बैजूने और कमरे भी अपने खर्चसे बनवा दिये। उन्हींके नामसे पाठशालाका नाम 'श्री बैजू इन्डियन स्कूल' रखा गया। सन् १९४८ में पाठशालाके लिये और चार कमरे बनाये गये जिसके लिये श्री के. पी महाराजने आधा खर्च दिया है। पाठशालामें सबेरे अंग्रेजीकी पढाई होती है। शामको १२० बच्चे हिन्दी शिक्षा पाते हैं। मद्रासी बच्चोंको तामिल भाषाभी सिखायी जाती है। हिन्दीके अध्यापक श्री के. आर. सिंह और कु. सावित्री नन्कू है। श्री आर. ए. चेटी तामिल पढाते हैं। इस सभाकी तरफसे त्यौहार उत्सव आदि समय २ पर मनाये जाते हैं। सभाका अपना एक भजन मंडल भी है।

पदाधिकारी और सहयोगी सभाके प्रधान श्री एच. रामधारी हैं। मंत्री श्री सुखराज ब्रिजलाल तथा कोषाध्यक्ष श्री एस, रामदीन हैं। संस्थाको तन, मन, धनसे सहयोग देनेवालोंके शुभ नाम ये हैं—श्री ई. गुलदीप, श्री एस. बहादुर, श्री पडियाची, श्री बी. शिवनारायण, श्री एस. परताप आदि। इस समय संस्थाके पास ५००० पौंडके करीब जमीन जायदाद है।

वैदिक युवक सभा, विल्गेफोन्टीन

स्थापना मेरित्सबर्गके पास विल्गेफोंटीनमें हिन्दुस्तानियोंकी नयी आबादी बसी है। यहां कारीगर, किसान और मजदूर भारतीय रहते हैं। इस बस्तीमें ता. १०–१०–४३ के दिन श्री डी. शिवव्रतने स्थानीय निवासियोंकी मददसे 'वैदिक युवक सभा' की स्थापना की। इसमें श्री एस. एस. पूरण तथा श्री के. सरूपरामरामसे अच्छी मदद मिली।

कार्य सभाने अपने अन्तर्गत एक हिन्दी पाठशाला चालू की। जिसके लिये प्रथम श्री गजाधरसे और बादमें श्री आर. शिवनन्दनकी तरफ से सभाको मकान मिला। फिर तो सभाने अपनी जमीन खरीद ली और नाटकोंके अभिनयसे मकान बनानेको कुछ पैसा भी जोडा। नाताल और ट्रांसवालसे ६०० पौंडका चन्दा किया गया। २००० पौंडका मकान बनकर तैयार हो गया। जिसका उद्घाटन ता. २२–१–५० के दिन हुआ। इसमें सभाके सदस्योंने अपनी ऐच्छिक मजदूरी दी है। मकान बन जानेपर हिन्दी और अंग्रेजी पाठशाला नियमित चालू हो जावेगी। सभा की तरफसे त्यौहार उत्सव आदि मनाये जाते हैं।

पदाधिकारी सभाके संस्थापक श्री डी. शिवव्रत इसके प्रधान थे। वर्तमान समयमें श्री लक्ष्मण भीखा सभापति निर्वाचित हुए हैं। मंत्री श्री एम. आर. दीपलाल है तथा कोषाध्यक्ष श्री एस. एस. पूरण हैं। सभा के कार्योंमें सहयोग देनेवाले सज्जन हैं—श्री ई. गुलदीप, श्री आर. मारी, श्री आर, रतन सिंह, श्री आर. शिवनन, श्री बी. भीखा आदि।

आर्य समाज, लेडीस्मिथ

स्थापना लेडीस्मिथ उत्तर नाताल प्रांतका एक मुख्य शहर है। जहां भारतीय लोग भी अच्छी संख्यामें रहते हैं। यहांपर सन् १९१६ में नागरी प्रचारिणी सभाकी स्थापना हुई। जिसके सभापति स्व. बाबू रघुनाथ सिंह तथा मंत्री स्व. बी. भोला थे। इसी संस्थाके द्वारा सर्वप्रथम हिन्दी

वैदिक युवक सभा, विल्गेफोंटीन
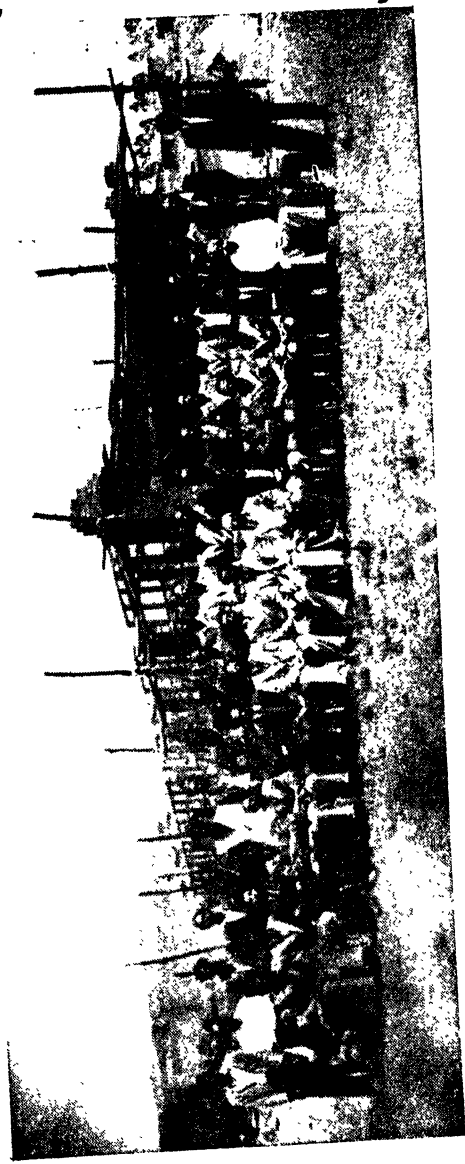
पदाधिकारी तथा सदस्यगण

आर्यसमाज, लेडीस्मिथ

पदाधिकारी तथा सदस्यगण

साहित्य सम्मेलन १९१६ में हुआ था। जिसके लिये स्वामी भवानी दयाल जीने काफी उद्योग किया था। सन् १९१९ में स्वामी भवानी दयालजी तथा दूसरोंकी सलाहसे इस संस्थाका नाम बदलकर आर्य समाज, लेडीस्मिथ रखा गया।

कार्य समाज प्रारम्भकालमें अच्छी प्रगति करता रहा। समाज भवन बनानेके लिये भूमि खरीदी गयी। इसी तरहसे शहरकी कौंसिलसे आर्यसमाजके अधीन एक स्मशान भूमि प्राप्त की गयी। जिसमें शवोंको अग्निदाह देनेकी व्यवस्था की गयी है।

समाजके एक मुख्य कार्यकर्ता श्री विठ्ठल लालाके उद्योगसे सन् १६२१ में यहां गुजराती–हिन्दी पाठशाला स्थापित की गयी। सन् १९२५ में आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे इस शहरमें द्वितीय वैदिक परिषद् हुई। जिसके सभापति पं. भवानी दयालजी थे। स्व. बाबू रघुनाथ सिंह तथा स्थानीय आर्यसमाजके कार्यकर्त्ताओंके परिश्रमसे परिषद् बडी सफल हुई थी।

समाजके कार्योंमें साप्ताहिक सत्संग, उत्सव और त्यौहारोंका मनाना तथा भारतवर्षसे आनेवाले प्रचारक और विद्वानों द्वारा प्रचार कार्य करवाना आदि मुख्य हैं। पं. जगमोहनजी, स्व. बी. बेचू तथा पं. भवानी दयालजीने यहां समय २ पर पधारकर प्रचार कार्यमें अच्छी मदद दी है।

पदाधिकारी तथा सहयोगी समाजके वर्तमान सभापति श्री. एल. शिवगुलाम हैं। मंत्री श्री आर. काली तथा कोषाध्यक्ष श्री डी. विठ्ठल हैं। समाजको सहयोग देनेवाले सज्जनोंके शुभ नाम ये हैं—श्री मुनी मंगल, श्री लाला परसोत्तम, श्री मगन जीवण, श्री एम. छोटई, श्री. बी. विठ्ठल आदि।

आर्य समाज, डेनहाउज़र

स्थापना डेनहाउजर उत्तरी नातालका एक छोटा कस्बा है। यहां पर बसे हुए भारतीय लोग पुरानी रुढि-परम्परामें माननेवाले थे। डॉ. भगतराम सहगल प्रचार करते हुए यहांपर सन् १९२९ में पधारे। उनके प्रचारसे आर्यसमाज, डेनहाउजरकी स्थापना हुई। प्रारम्भमें पौराणिक पंडितोंका काफी विरोध रहा पर बादमें कार्य सरल हो गया। श्री रामसुन्दर पाठक इस समाजके स्थापनाकालसे सभापति हैं और वे ही समाजके प्राण हैं। उनके प्रयत्नोंसे आज भी यह जीती जागती संस्था है।

कार्य समाज अपनी हिन्दी पाठशाला चलाती है। जिसमें हिन्दू बच्चे हिन्दी सीखते हैं। साप्ताहिक सत्संग भी होता है। समाजके प्रचारका यह प्रभाव हुआ है कि यहांपर प्रायः सब विवाह वैदिक विधिसे होते हैं। समाजकी तरफसे समय २ पर भारतवर्षसे आनेवाले प्रचारकों द्वारा प्रचार कार्य होता है। पं. जगमोहनजी प्रचारके लिये यहां बार २ आते रहते हैं।

समाज वेद मंदिर और हिन्दी पाठशालाका भवन बनानेके लिये प्रयत्न शील है। समाजके मंत्री श्री बलराज गुरदीन इसके लिये पूरी कोशिश कर रहे हैं। उसके बन जानेपर प्रचार कार्य सुविधासे हो सकेगा।

अध्याय तेरहवाँ.

आर्य जीवन चरित्रावली

श्रीमान आर. बोधासिंह

नातालमें गन्नेकी खेती एक प्रधान व्यवसाय है । यह व्यवसाय प्रधान-तया गोरे लोगोंके हाथमें हैं । इने गिने ही भारतीय लोग हैं जिनके हाथमें यह व्यवसाय है । इनमें स्व. बोधासिंहका परिवार मुख्य है । स्व. बोधासिंह गन्नेके मुख्य भारतीय कृषिकार थे । इस परिवारमें श्रीमान राजदेव सिंहका जन्म ५ जनवरी १८९५ में हुआ था । श्री राजदेवने अंग्रेजी शिक्षा दरबनके हाई ग्रेड स्कूलमें प्राप्त की ।

श्री राजदेव सिंह अपने पिताके साथ अपने व्यवसायमें ध्यान देने लगे । उन्होंने अपने परिश्रम और कौशलसे इसमें बहुत सफलता पायी और उस की वृद्धि की । इनके बडे भाई श्री बासुदेव सिंह आर्यसमाजकी प्रवृत्तिमें बहुत रस लेते थे । उनसे ही श्री राजदेव सिंहको भी इस प्रवृत्तिमें दिलचस्पी हुई ।

सन् १९४० में श्री आर. बोधासिंह आर्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान निर्वाचित हुए । तबसे आज तक वे ही इस पदको सुशोभित कर रहे हैं । इन के अध्यक्षत्वमें सभाने १९४२ में वैदिक परिषद की थी । हिन्दी सम्मेलन तथा प्रथम आर्य युवक परिषद भी इनके ही सभापतित्वमें हुई हैं । सभाकी भूमि का उत्खननोत्सव भी इनकी अध्यक्षतामें हुआ, एवं सभाके वर्तमान भवनका उद्घाटन भी इन्हींके शुभ हस्तोंसे ४ फरवरी १९४३ को हुआ था ।

श्री आर. बोधासिंहके शुभ करकमलोंसे ता. २२ फरवरी १९४४ को प्रथम वार 'ओ३म्' का झंडा सभा भवनपर फहराया गया । इस पवित्र अवसर पर इन्होंने वेद मंदिर बनानेके लिये दस हजार पौंड (लगभग १३२००० रु.) के दानकी घोषणा की और इस तरह आर्य लोगोंकी चिर अभिलाषाको पूर्ण करनेकी ओर पहला कदम उठाया । ता. १५ फरवरी १९५० के शुभ अवसर पर सभाके प्रधान श्री आर. बोधासिंहके शुभ हस्तोंसे इसकी आधार शिला रखी जावेगी । आशा है कि इनकी अध्यक्षतामें प्रतिनिधि सभाकी और भी अधिक उन्नति होगी ।

श्रीमान् सत्यदेवजी

नातालमें आर्यसमाजके कार्यका आधारस्तंभ कोई है तो वह श्री सत्यदेव जी हैं। इन्होंने आर्यसमाजका कार्य जिन्दगी भर बडी लगन और बडे उत्साह से किया है। सच्चे सेवकके रूपमें वे कार्य कर रहे हैं। इस सेवाके पीछे बल है–भक्ति और श्रद्धाका। श्रीरामके जैसे हनुमान सेवक थे वैसे ही यहां आर्य समाज और दयानंदके सच्चे सेवक श्री सत्यदेवजी हैं। आर्यसमाजकी सभी प्रवृत्तियोंके पीछे इनका हाथ है; इनकी सेवा है और इनका परिश्रम है।

श्री सत्यदेवजीका जन्म ७ जुलाई १८८६ के दिन वेरुलममें हुआ था। मिशन स्कूलमें अंग्रेजी शिक्षा १ वर्ष तक ही पा सके। इनके बचपनमें पिता जीका अवसान हो जानेसे इन्हें नौ वर्ष की छोटी उम्रमें ही नौकरीकी चिन्ता करनी पडी। वे यहांके कारपोरेशनमें काम करने लगे और आज ५२ वर्षसे इसीमें नौकरी कर रहे हैं।

स्वामी शंकरानन्दजीके प्रभावसे नवयुवक सत्यदेवजीका झुकाव आर्य-समाजकी तरफ हुआ। स्वामीजीके सत्संगका प्रभाव इनपर खूब पडा है। उन्होंने सेवाका जो पाठ श्री सत्यदेवजीको पढाया आज भी वे उसे भूले नहीं हैं और सेवा करते हुए किसी कामको छोटा नहीं समझते न सेवाके कार्यमें अभिमान लेते हैं। ये स्वामीजीके सभी कार्यों और प्रवृत्तियोंमें उत्साहसे भाग लेते रहे।

मातृभाषा हिन्दी और वैदिक धर्म प्रचारका इतना उत्साह था कि सन् १९१० में अपने घरपर ही रात्री पाठशाला प्रारम्भ कर दी और अपनी लघु आजीविकामेंसे विद्यार्थियोंको स्लेट, पुस्तक आदि मुफ्त देते रहे। युवकोंमें भी आर्य संस्कृतिका प्रचार करने लगे और जोशीले नवयुवकोंको इकट्ठा करके ता. १६ अप्रैल १६१२ के दिन आर्य युवक सभाकी स्थापना की। श्री सत्य देवजी ही इसके सभापति बने। इनके नेतृत्वमें सभाने बडी तरक्की की। आर्य अनाथाश्रमका संचालन यही सभा कर रही है। एक अनाथ भिखमंगेकी दुर्दशा श्री सत्यदेवजी देख न सके। उसके रातको टिकनेका कोई स्थान न था और उसने शौचालयका आश्रय लिया। इस दृश्यसे इनका हृदय द्रवीभूत हो

गया और इनके संकल्पसे आर्य अनाथाश्रमकी स्थापना हुई। आर्य युवक सभाके २७ वर्ष तक सभापति रहे।

सन् १९२५ में ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी मनानेका प्रस्ताव श्री सत्यदेवजीने ही रखा। इनके ही प्रयत्नोंसे शताब्दी उत्सव सफल हुआ और इसी उत्सवमें आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी स्थापना हुई। प्रतिनिधि सभाके दूसरे वर्षमें मंत्री निर्वाचित हुए और तबसे आज तक २४ वर्ष पर्यन्त सभाके मंत्रीत्वका कार्य संभाल रहे हैं। इनके मंत्रीत्वमें ही प्रतिनिधि सभाकी सारी उन्नति हुई है। सभाने हिन्दुओंकी जागृतिके लिये उनमें संस्कृति और धर्मके प्रचारके लिये सर्वाधिक प्रयत्न किया है और उसके पीछे श्री सत्यदेवजीका हाथ रहा है। उसके लिये ये विविध योजनाएं करते, उनके लिये अविरत परिश्रम करते और उसे सफल बनाते। प्रतिनिधि सभाने इतनी परिषदें और इतने सम्मेलन किये हैं उसका श्रेय श्री सत्यदेवजीको ही है। वे सभाके निर्वाचित ट्रस्टी भी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य अनाथाश्रमके लिये श्री सत्यदेवजीने अपना जीवन दे दिया है। इनके स्थापनाकालसे ये सेवा करते आ रहे हैं। इनमें कार्यके प्रति निष्ठा है, विचारमें स्थिरता है और धर्मपर दृढ विश्वास है। इन्हीं गुणोंने उन्हें सच्चा सेवक बनाया है।

श्री सुखराज छोटई बी. ए.

उच्च अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय युवकोंमेंसे बहुत कम व्यक्ति अपने समाज और जातिकी सेवामें लगे हुए है। ऐसे युवकोंमें श्री सुखराज छोटईका नाम अग्रगण्य है। इनका जन्म क्रेस्टेटमें २५ जनवरी १९१२ में एक निर्धन परिवारमें हुआ। बालक सुखराजने सातवें दर्जे तक अंग्रेजी शिक्षा पायी। उसके बाद वे ऊंची शिक्षा तुरन्त नहीं पा सके। क्योंकि आर्थिक विषम स्थिति में इन्हें नौकरी की फिक्र करनी पडी और वे सन् १९२७में अध्यापक हो गये परन्तु उनकी विद्या पाने की अदम्य इच्छा थी। वे स्वयमेव अध्ययन करने लगे और नौकरी करते हुए एक के बाद एक परीक्षामें उत्तीर्ण होकर १९४७ में बी. ए. उत्तीर्ण हुए। इस प्रकार श्री सुखराजने स्वयं परिश्रम और अध्ययन करके अपने जीवनको गढा है। प्रारम्भसे ही इन्हें हिन्दू धर्म और वैदिक सिद्धान्तोंपर रुचि थी इससे वे अंग्रेजीमें प्राप्त होनेवाली ऐसी पुस्तकों को भी पढने लगे और स्वाध्यायसे वैदिक सिद्धान्तोंका अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

श्री सुखराज छोटई सर्व प्रथम क्रेरवुडमें अध्यापकका कार्य करने लगे। तबसे आज तक २३ वर्षोंसे इसी क्षेत्रमें हैं। इस समय वे एसनडीन रोड इन्डियन स्कूलके प्रधानाध्यापक हैं। अध्यापक का कार्य करते हुए वे सार्वजनिक कार्य भी करने लगे। जब वे लेडीस्मिथमें थे तो सन् १९३२से १९३७ तक वहांके आर्यसमाजके मंत्री थे। इस कालमें उत्तरी नातालमें श्री सुखराज ने अच्छा कार्य किया। वहां प्रो. यशपालके कार्यक्रमकी जिम्मेदारी भी इन्हीं पर रही; जिसे सफलतासे निभाया।

लेडीस्मिथमें इन्होंने १९३५ में यंग हिन्दू कलचरल सर्विस सोसायटी की स्थापना की और वे इसके सभापति रहे। लेडीस्मिथसे श्री छोटई जहां २ अपनी नौकरीके लिये गये वहां २ सार्वजनिक जीवनमें भाग लेते रहे और विविध आर्य संस्थाओंमें सक्रिय कार्य करते रहे।

श्री सुखराज कुल सात वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभाके सहायक मंत्री रहे हैं और आज इस पदको बडी योग्यतापूर्वक निभा रहे हैं। सभाके कार्यों

को सफल करनेमें बडे उद्यत रहते हैं। हिन्दी शिक्षा संघ, नातालके स्थापना-कालसे श्री सुखराज इसके मंत्री हैं और बडे उत्साहसे कार्य कर रहे हैं। इन की सेवासे ही संघने थोडे कालमें अच्छी प्रगति कर ली है।

श्री सुखराज छोटई की अंग्रेजीकी योग्यता ऊंचे दर्जेकी है। इस पुस्तक 'दक्षिण आफ्रिकामें धर्मोदय' का अंग्रेजी अनुवाद इनकी विद्वताका परिचायक है। आर्य प्रतिनिधि सभाके सम्मेलनों और परिषदोंमें अंग्रेजीका कार्य इनके जिम्मेही रहता है। धर्म, साहित्य आदि के विषयोंको हिन्दीसे उच्च अंग्रेजीमें अनुवाद करनेकी कलामें वे निपुण हो गये हैं। श्री सुखराज छोटई जैसे युवक किसी भी संस्थाके लिये गौरव स्वरूप हो सकते हैं।

श्रीमान् एस. एल. सिंह

आर्य प्रतिनिधि सभाके मुख्य कार्यकर्ताओंमेंसे एक श्री एस. एल. सिंह हैं। ये उत्साही और नीडर कार्यकर्ता हैं। इनके दर्शनसे ही मालूम होता है कि क्षात्रधर्मका खून इनकी रगोंमें दौड रहा है।

श्री एस. एल. सिंहका जन्म दरबनमें ११ जनवरी १८९६ को हुआ। दरबनके स्कूलमें इन्होंने अंग्रेजी शिक्षा पायी। पं. अम्बारामसे हिन्दीकी शिक्षा प्राप्त की। फिर स्वयं अध्ययनसे आगे बढने लगे। १९१६से ये सार्व-जनिक जीवनमें भाग लेने लगे। १९१८ में आर्य युवक सभाके मंत्री बने। इस सभा द्वारा आर्य अनाथाश्रम स्थापित होनेपर श्री एस. एल. सिंह उसके मंत्री और खजानची बने। आश्रमकी प्रगतिमें इनका बडा हाथ रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभाके कई वर्ष प्रधान भी रहे। गत २० वर्षसे सभाके कोष निरीक्षक हैं। प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सम्मेलनों और परिषदोंमें स्वागताध्यक्षरूपसे सदा सेवा देते आये हैं।

अन्य अनेक संस्थाओंमें श्री एस एल. सिंह सक्रिय हिस्सा ले रहे हैं। द. आ. हिन्दू महासभाकी प्रधान समितिके अध्यक्ष रहे हैं। हिन्दी शिक्षा संघ, नातालके उप सभापति हैं। दरबन हिन्दी पाठशालाके अध्यक्ष हैं।

श्रीमान एस. एल. सिंह अंग्रेजीके ओजस्वी वक्ता हैं। भारतीयोंकी उन्नतिमें तथा उन्हें गौरव देनेके प्रयत्नोंमें सदा लगे रहते हैं। ऐसे जोशीले नेताको पाकर आर्य जनता गौरव अनुभव करती है।

श्रीमान् एम. मुन्नू

श्री एम. मुन्नूका जन्म १९ सितम्बर १८८३ के दिन हुआ। एम. जी. आर. इन्डियन स्कूलमें शिक्षा पायी। सन् १९१२ मे स्वामी श्री शंकरानंदजीके संसर्गमें आये और तबसे आर्य ममाजी बने और कई संस्थाओंमें सक्रिय हिस्सा लेने लगे। डॉ भगतराम सहगल सन् १९२७ में प्रचार करने यहां आये। उनको ठहरानेका प्रबंध श्री एम. मुन्नूने बडी उदारतापूर्वक किया। डॉक्टरजीसे सारे परिवारने बडा लाभ भी उठाया।

श्री एम. मुन्नू आर्य समाज, दरबनके कई वर्ष तक कोषाध्यक्ष रहे। आर्य प्रतिनिधि सभाके भी मुख्य कार्यकर्ता हैं। सन् १९३० से सभाके कोषाध्यक्ष हैं और बडी योग्यतापूर्वक इस पदको संभाले हुए हैं। आर्य युवक सभाके कोष निरीक्षक भी हैं। इसी तरह दरबन हिन्दी पाठशालाके व्यवस्थापक हैं। पाठशालाका प्रबंध इनके ही हाथमें है।

श्री एम. मुन्नूका परिवार बडा सुसंस्कृत है। उनकी पुत्री नारायणीने हिन्दीकी अच्छी शिक्षा पायी है। वे स्त्री समाजकी मंत्राणी थीं। इनका विवाह मेरित्सबर्गके आर्य विद्वान् पं आर. बी. महाराजसे हुआ है। अब वे वहां रहकर समाज सेवाका कार्य करती हैं। तथा मेरित्सबर्ग हिन्दू स्त्री समाजकी सभानेत्री रही हैं।

श्री मुन्नूकी पुत्रवधू श्रीमती इन्द्रदेवी देवीसिंह भी महिलाओंकी उन्नतिमें खूब रस लेती हैं। वे ओवरपोर्ट हिन्दू स्त्री समाजकी सभानेत्री हैं। इस विदुषी देवीने अपने घरपर निःशुल्क हिन्दी पाठशाला स्थापित की है। जो हिन्दी शिक्षा संघमें सम्मिलित है। श्री मुन्नू परिवारके अन्य सदस्य भी बडी लगनसे आर्य समाजके कार्योंको कर रहे हैं।

श्री एस. एल. सिंह—सभापति, (१९२६–२९) तथा
ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

श्री एम. मुन्नू—ट्रस्टी तथा कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

स्व. बी. एम. पटेल—सभापति (१९३९)
तथा ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

पं. आर. बी. महाराज—सभापति, (१९३०)
तथा ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

पं. आर. बी. महाराज

नाताल प्रांतकी राजधानी पीटरमेरित्सबर्गके गण्य मान्य आर्य सज्जनों में से एक पं. आर. बी. महाराज हैं। पंडितजी आर्य सिद्धान्तोंके ज्ञाता और हिन्दीके विद्वान् हैं। पंडितजीका जन्म ५ नवम्बर १८९४ में हुआ था। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षाके साथ २ पं. शिवनारायण पांडेसे हिन्दीकी भी उच्च शिक्षा प्राप्त की। पं. आर. बी. महाराज व्यापारी क्षेत्रमें कार्य करने लगे। प्रारम्भमें वे व्यापारियोंके बहीखाते लिखते थे। बादमें व्यापार वाणिज्यमें बहुत अनुभव प्राप्त कर लिया और जमीन जायदादके एजन्ट और बीमा कम्पनियोंके एजन्टके रूपमें कार्य करने लगे। इसमें इन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई।

स्वामी मंगलानंदजी पुरीके व्याख्यानोंसे प्रभावित हो पं. आर. बी. महाराज सार्वजनिक क्षेत्रमें भी कार्य करने लगे। पंडितजीका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल रहा है। दर्जनों संस्थाओंमें उन्होंने बडे पदोंपर रहकर सेवा कार्य किया है। इस तरह पंडितजी मेरित्सबर्गके सार्वजनिक जीवनके प्रधान अंग बने रहे हैं। सन् १९१७ में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलनके वे स्वागत मंत्री थे। हिन्दी राष्ट्रीय पाठशाला तथा श्री विष्णु टेम्पलके मंत्री रहे। १९२९ में मेरित्सबर्गके आर्य समाजकी स्थापनामें पंडितजीका बडा हाथ रहा और वे उसके १२ वर्षों तक प्रधान रहे। इनके प्रयत्नोंसे हिन्दू युनाइटेड सर्विस लीग की स्थापना हुई। इसके भी ४ वर्ष तक सभापति रहे।

सन् १९२६ में मेरित्सबर्गमें हुई तीसरी वैदिक परिषदके पंडितजी प्रधान थे। १९३० में आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालके प्रधान निर्वाचित हुए थे। आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे मेरित्सबर्ग जेलमें १० वर्ष तक जाकर धर्मोपदेश करते रहे। इसी तरह दी ग्रे होस्पिटल तथा दी मेंटल होस्पिटलमें भी प्रचारक बनकर जाते रहे। इस समय प्रतिनिधि सभाके ट्रस्टी हैं। राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धाके मेरित्सबर्ग केन्द्रके व्यवस्थापक हैं। इनके अलावा वैदिक विद्या प्रचारक सभा, पेन्ट्रिच, सरस्वती संगीत मंडल, माउन्ट पाट्रिज आर्य समाज, वेद धर्म सभा, आर्य नवयुवक सभा आदि कई संस्था-

ओंमें अनेक प्रकारसे सेवा देते रहे हैं। पंडितजीका जीवन आर्य समाजके क्षेत्रमें आदर्श रहा है।

पं. आर. बी. महाराजकी पत्नी श्रीमती नारायणी देवी भी सामाजिक कार्योंमें अच्छा भाग लेती हैं। वे हिन्दू स्त्री समाज, पीटरमेरित्सबर्ग की सभानेत्री कई वर्ष तक रही हैं।

श्रीमान बी. एम. पटेल

श्रीमान भाईलाल मथुरभाई पटेलका जन्म बडौदाके पास धर्मज ग्राममें ता. ५-५-१८८७ को हुआ था। उन्होंने पेटलाद हाईस्कूलमें शिक्षा पायी थी। श्री भाईलाल का विवाह श्रीमती झवेरबहन पटेलके साथ हुआ। ता. १२ दिसम्बर १९०३ में वे इस देशमें अपना भाग्य आजमाने आये। पहले मेरित्सबर्गमें, फिर दरबनमें आप व्यापार करने लगे। अपने परिश्रम और बुद्धिमत्तासे श्री बी. एम. पटेलने अच्छा धनोपार्जन किया। वे यहांके प्रमुख धनपतियोंमेंसे एक हैं।

श्री पटेलमें शुरूसे ही धार्मिक संस्कार पडे हुए थे। इसी वजहसे उन्हों ने अपनी जिन्दगीमें धार्मिक और सामाजिक कार्योंमें बडा भाग लिया है। जबसे भाई परमानंदजी इस देशमें आये तबसे आजतक वे सार्वजनिक कार्यमें महत्वपूर्ण हिस्सा ले रहे हैं। भाई परमानंदजीके लिये स्थापित मेरित्सबर्गकी स्वागत समितिके वे मंत्री थे।

श्री बी. एम. पटेल एम. के. गांधी पुस्तकालय और पारसी रुस्तमजी हॉल कमिटिके वर्षों तक मंत्री रहे हैं। इस कालमें उन्होंने पुस्तकालयके लिये धार्मिक पुस्तकोंके संग्रहके लिये, खासकर वेद तथा उपनिषद सम्बंधी साहित्य इकट्ठा करनेके लिये बडा प्रयत्न किया। सन् १९३४ में पं. हरिशंकर विद्यार्थी इनकी ही प्रेरणासे यहां प्रचारकेलिये आये। आचार्य श्री रामदेवजीको यहाँ बुलानेके लिये भी इन्होंने बहुत प्रयत्न किया था। परंतु आचार्यजीको अनु-कूलता न होनेसे नहीं आ सके थे।

श्री बी. एम. पटेल आर्य समाजको हिन्दू जातिका रक्षक समझते रहे हैं। इसीसे उन्होंने समाजके कामोंमें बहुत दिलचस्पी बतलायी है। आर्य

प्रतिनिधि सभाके वे प्रधान भी निर्वाचित हो चुके हैं। तथा इस समय उस के ट्रस्टी हैं। सभाके आर्थिक संकटके कालमें उन्होंने सभाको बडी सहायता पहुंचायी है। आर्य युवक सभाके भी वे संरक्षक हैं। इस सभाने जब आर्य अनाथ आश्रमकी स्थापना की तभीसे श्री पटेल उसके सहायक रहे हैं। आश्रमके मकान बनानेके लिये अर्थ संग्रहमें उन्होंने बडा प्रयत्न किया है। अनाथाश्रमके लिये आर्य युवक सभाने १७॥ बीघा नयी जमीन खरीदी है। उसके ऋणसे सभाको मुक्त करनेके लिये सदा प्रयत्नशील रहते हैं। उन्हों ने भी आश्रम को १०५ पौंड दानमें दिये। श्री बी. एम. पटेलकी सहायता आश्रमके इतिहासमें चिर स्मरणीय रहेगी।

श्री बी. एम. पटेल अन्य अनेक संस्थाओंमें महत्वके पदोंपर कार्य करते रहे हैं। वे कई वर्षों तक द. आ. हिन्दू महासभाके अध्यक्ष रह चुके हैं। बम्बई प्रेसीडेन्सी हिन्दू एसोसियेशन, हिन्दू स्मशान फन्ड आदि अनेक सभा सोसायटीमें भी प्रधान बने हैं। आपकी पत्नी श्रीमती झवेरबहन भी सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेनेवाली प्रमुख भारतीय स्त्री हैं। वे गुजराती हिन्दू महिला मंडल, दरबनकी अध्यक्षा हैं। उनके बडे पुत्र श्री जयंतीलाल वकालत की परीक्षा पास कर चुके हैं। वे भी अपने सुयोग्य पिताके पदचिन्हों पर चलकर आर्य समाज और हिन्दू जातिके उत्थानमें भाग लेंगे ऐसी आशा है।

ता. ६-३-५० को स्वदेश गमन करते हुए श्री बी. एम. पटेलका स्वर्गवास हो गया आर्य समाजका एक स्तंभ गिर पडा है।

श्रीमान् बी. ए. मेघराज

श्री मेघराज का जन्म २६ जुलाई १८७३ को मोरिशस द्वीपमें हुआ था। ६ वर्ष की उम्रमें इनका परिवार यहां चला आया और यहींपर शिक्षा पायी। प्रो० भाई परमानन्दजीके स्वागतके लिये बनी समितिके संयुक्त मंत्री थे। बादमें श्री मेघराज कई संस्थाओंमें कार्य करते रहे। हिन्दू सुधार सभाके उपसभापति रहे। ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी महोत्सव समितिके खजानची थे। आर्य प्रतिनिधि सभाके एक वर्ष प्रधान रहे। आज उसके एक ट्रस्टी हैं।

श्रीमान एफ. सत्यपाल

श्री एफ. सत्यपाल मेरित्सबर्गके निवासी हैं। नाताल प्रांतकी इस राज धानीमें आपको जो दो चार मुख्य भारतीयोंके नाम सुनने मिलेंगे उनमें एक श्री एफ सत्यपाल अवश्य होंगे। इनके भवनपर पहुंचते ही आपको हाथ जोडे हुए नाटे कदकी एक हसमुखी उम्रमें बूढी पर उत्साहमें युवा, तेजस्वी मूर्ति मिलेगी जो आपके आतिथ्यके लिये बडी उत्सुक होगी तो आप समझ जाइये कि ये ही घरके मेजमान श्री सत्यपालजी हैं।

श्री एफ. सत्यपालका जन्म दरबनमें सन् १८९३ में हुआ था। आप ने मिशन स्कूल, केटो मेनरमें शिक्षा पायी थी। श्री स्वामी मंगलानन्दजी पुरीके व्याख्यानोंको सुनकर युवक सत्यपालकी रुचि आर्यसमाजकी ओर दढ गयी। तब उन्होंने वैदिक सिद्धान्तोंका अभ्यास किया और वे विभिन्न संस्थाओंमें अपनी सेवाएं देने लगे। वे आर्य युवक सभाके स्थापनाकालके सदस्य रहे हैं। स्वपरिश्रमसे अध्ययन करके सत्यपालजीने हिन्दीकी अच्छी योग्यता प्राप्त करली। फिर वे हिन्दीमें गीत और नाटक भी लिखने लगे। अनेक संस्थाओंने इनके नाटकोंके अभिनय करके धनोपार्जन किया है। इनके सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय गीत भी खूब लोकप्रिय हुए हैं।

सन् १९२३ में श्री सत्यपालजी मेरित्सबर्ग चले गये। तबसे वहीं हैं। वहां पहुंचकर वे वहांके सार्वजनिक कार्योंमें जोर शोरसे भाग लेने लगे। राज-नीतिक क्षेत्रमें भी बहुत कार्य किया। मेरित्सबर्गकी प्रायः सभी संस्थाओंसे इनका सम्बंध है। बडे पदोंकी जिम्मेदारी संभालते रहे हैं। कई संस्थाएं इन के सदुद्योगसे और सहयोगसे स्थापित हुई हैं।

सन् १९२५ में ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी समितिके मंत्री रहे। मेरि-त्सबर्ग की विद्या प्रचारिणी सभाकी सन् १९२३ में स्थापना की। इसके प्रधान और ट्रस्टी रहे। सन् १९२५ में प्लेसिसलेयरमें नागरी हितैषी सभा (वर्तमान नाम—आर्यसमाज, प्लेसिसलेयर) की स्थापना की। इसके संरक्षक, ट्रस्टी और उपप्रधान हैं।

मेरित्सबर्गमें आर्य अनाथाश्रम चलानेवाली आर्य बेनिवोलेंट सोसायटी

स्व. बी. ए. मेघराज—सभापति, (१९३२; १९३७)
ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

श्री एफ. सत्यपाल—भूतपूर्व सभापति
वेद धर्म सभा. पीटरमेरित्सबर्ग

पं. आर. बनवारी—संयुक्त मंत्री
वेद धर्म सभा, पीटरमेरित्सबर्ग
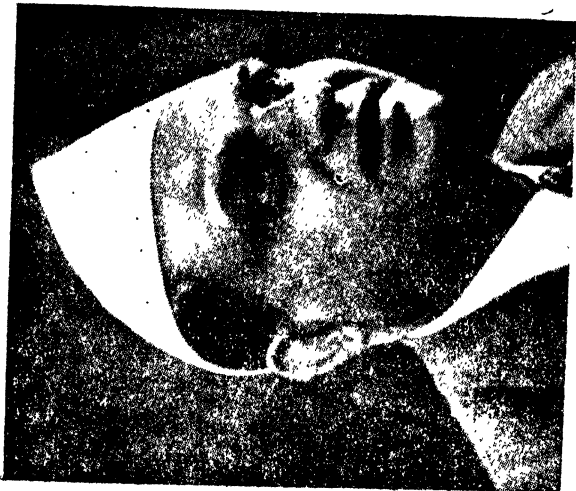
पं. जगमोहनजी विद्यारत्न—उपसभापति
वेद धर्म सभा, पीटरमेरित्सबर्ग

के भी उपसभापति हैं। मेरित्सबर्ग आर्यसमाजके संस्थापक सदस्य थे और उसके खजानची एवं ट्रस्टी रहे। वेद धर्म सभाके प्रधान भी निर्वाचित हुए थे। इस समय कई वर्षोंसे उसके उपसभापति हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालके एक वर्ष तक मंत्री रहे। इनके अलावा श्री सत्यपालजी हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल, युवक आर्यसमाज, दीपावली चीयर सोसायटी, आर्य भजन मंडल, दरबन, मोहिनी ओरकेस्ट्रा आदि कई संस्थाओंके विभिन्न पदों पर कायम हैं।

श्रीमती सत्यपाल भी समाज सेवाके विभिन्न कार्योंमें लगी हुई हैं। मेरित्सबर्गके आर्य अनाथाश्रमके देखभालका कार्य वेही बडी तत्परतासे करती हैं। आफ्रिकन–भारतीय दंगोंमें तथा बाढके समय पीडित लोगोंको बडी मदद पहुंचायी है। श्रीमती स यपालका स्वभाव मधुर और सेवाभावी होनेसे उन का घर मेरित्सबर्गमें पहुंचनेवाले आर्य सज्जनोंके लिये और खासकर भारतसे आनेवाले प्रचारकोंके लिये अतिथिशालाका काम देता रहा है। श्री एफ. सत्यपालके भाई स्व. एफ. रामलगन भी आर्यसमाजकी प्रवृत्तियोंमें अच्छा भाग लेते रहते थे।

श्रीयुत बी. गोविन्द

श्रीयुत बी. गोविन्दका जन्म सन् १८९२में क्लेरस्टेटमें हुआ था। परिवार की आर्थिक अवस्था अच्छी न होनेसे बचपनमें कई कठिनाइयां झेलनी पडीं। विद्याध्ययन ठीक तरहसे नहीं हो सका। श्री गोविंद अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री बी. बेचूको भवन निर्माणमें सहायता देने लगे और धीमे २ उसमें प्रवीण हो गये। आज इस क्षेत्रमें इन्होंने अच्छा नाम पैदा किया है।

अपने भाईके साथ श्री गोविंद सार्वजनिक क्षेत्रमें कार्य करने लगे थे। धार्मिक व सामाजिक एवं विद्या विषयक कार्योंमें सहयोग देने लगे। रायकोपिस विद्या प्रचारिणी सभाके संस्थापक सदस्य हैं। सन् १९२१ से आर्य युवक सभामें सेवा दे रहे हैं। गत दो वर्षोंसे इस सभाके सभापति हैं। आर्यसमाज वेस्टविलके कार्योंमें रस लेते रहे और इस समय इसके प्रधान हैं। वेस्टविलमें महिला आर्यसमाजकी स्थापनामें श्री गोविंदका बडा उद्योग रहा है। अन्य अनेक संस्थाओंसे इनका संबंध है और आज विविध क्षेत्रोंमें अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

श्रीमान ई. गुलदीप

श्री ई. गुलदीप मेरित्सबर्ग निवासी हैं। वहांपर व्यवसायमें अच्छा नाम कमाया है। इसके साथ ही सार्वजनिक जीवनमें काफी रस ले रहे हैं। श्री गुलदीप मेरित्सबर्गकी प्रसिद्ध संस्था वेद धर्म सभाके कई वर्ष तक प्रधान रहे हैं। इनके अध्यक्षत्वमें सभाने बहुत उन्नति की है। जमीन खरीदकर सभा भवन बन गया है। इसके लिये इन्होंने बडा श्रम उठाया है। अन्य कई आर्य संस्थाओंमें भी अपनी सेवाएं देते रहे हैं। कई संस्थाओंके संरक्षक, ट्रस्टी और सदस्य हैं। कई पाठशालाओंके मैनेजर भी हैं।

पं. आर. बनवारी

पं. आर. बनवारीका जन्म मेरित्सबर्गमें १० जनवरी १९०४ के दिन हुआ था। इन्होंने हाई ग्रेड गवर्नमेन्ट स्कूलमें अंग्रेजी शिक्षा पायी थी। साथही हिन्दी राष्ट्रीय पाठशालामें हिन्दीका ज्ञान भी पाते रहे। इसमें अपने ज्येष्ठ भ्राता पं. आर. बी. महाराजसे इन्हें बडी मदद मिली है। बाद में इन्होंने अंग्रेजीमें अध्ययन की योग्यता प्राप्त कर ली है।

शिक्षाकी समाप्तिके बाद पं. बनवारी हिन्दी अध्यापकका कार्य कई वर्ष तक करते रहे। बादमें अंग्रेजीके अध्यापककी नौकरी ले ली। सन् १९३३ में ग्लेंकोके स्कूलमें रहे। वहांसे बदली लेनेपर थोर्नविलके स्कूलमें मुख्याध्यापक बन गये। इन दिनों सार्वजनिक क्षेत्रमें कार्य करते रहे। यज्ञ, संस्कार कथा आदि करवानेकी विधिमें पारंगत होगये। प्रारंभमें श्री बनवारी वैदिक और पौराणिक दोनों विधिसे संस्कार करवाते थे। परंतु स्वामी भवानी दयालजीकी सलाहसे इन्होंने वैदिक विधिसे ही धार्मिक कार्य करवाना उचित समझा।

पं. आर. बनवारीका सार्वजनिक जीवन बहुत प्रवृत्तिमय रहा है। अनेकों संस्थाओंसे इनका संबंध रहा है। जब वे ग्लेंकोमें अध्यापक थे तो वहांके आर्यसमाजके मंत्री थे। आर्यसमाज, मेरित्सबर्गके मुख्य कार्यकर्ता थे। वर्षों तक उसके संयुक्त मंत्री रहे। विद्या प्रचारिणी सभाके प्रधान तथा मंत्री

रहे हैं। वेद धर्म सभामें बडी लगनसे कार्य करते हैं। सन् १९४० से इस सभाके संयुक्त मंत्री हैं। वैदिक विद्या प्रचारक सभाके उपसभापति हैं। अन्य कई संस्थाओंके मंत्री, संरक्षक आदि रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभाके जेल प्रचारक तथा पुरोहित हैं। सारे द० आफ्रिकामें वैदिक संस्कार करवाने जाते हैं। ग्लेंको, थोर्नविल और पेंट्रिचमें निःशुल्क हिन्दी शिक्षा देते रहे थे। हिन्दीसे पंडितजी को बडा प्रेम है। १९४८ में अपने दो पुत्रोंके साथ राष्ट्र-भाषा प्रवेशकी परीक्षा दी और तीनों उत्तीर्ण हो गये।

पं. जगमोहनजी

नाताल प्रांतकी राजधानी मेरित्सबर्गके कार्यकर्ताओंमें पं. जगमोहनजी भी एक आकर्षक व्यक्ति हैं। पंडितजीने मेरित्सबर्गके आर्यसामाजिक जीवन को सदा जाग्रत बनाये रखा है। वे उत्साही और जोशीले युवक कार्यकर्ता हैं।

पंडितजीका जन्म १९१३ में वेरुलममें हुआ था। इनका परिवार गरीब था। बाल्यावस्थामें ही पंडितजीके माता पिताका स्वर्गवास हो गया। जिससे उनको अपनी जीविकाकी चिन्ता सताती रही। इसी वजहसे शिक्षा का भी यथोचित प्रबंध न हो सका। श्री जगमोहनजी स्वयमेव अध्ययन करने लगे।

पं. रलारामजी जब इस देशमें आये तो उनके व्याख्यानोंका प्रभाव श्री जगमोहनजी पर बहुत हुआ और उन्होंने हिन्दू धर्मका विशेष अध्ययन करनेके लिये भारतवर्ष जानेकी ठानी। सन् १९३५ में वे भारतवर्ष गये। वहां लाहौरके दयानंद ब्राह्म विद्यालयमें प्रविष्ट हो गये। तथा पं. ऋषिरामजीसे विद्या पाते रहे। ५ वर्ष तक उन्होंने यत्नसे विद्याभ्यास किया और विद्यारत्न की उपाधिसे विभूषित होकर सन् १९४० में दक्षिण आफ्रिका लौटे।

यहां आकर पंडितजी वेद धर्म सभाकी हिन्दी पाठशालाके प्रधाना-ध्यापक हो गये और मेरित्सबर्गकी हिन्दू जनतामें धार्मिक जागृति पैदा करने लगे। वहांकी सामाजिक, धार्मिक और शिक्षा विषयक प्रायः सभी संस्थाओं से पंडितजीका सम्बंध है। वेद धर्म सभा और हिन्दू युनाइटेड सर्विस ब्रिगेड के उपसभापति हैं। कई संस्थाओंके पुरोहित और प्रचारक हैं। उत्तर नाताल

में जाकर कई वार प्रचार कार्य किया है। पंडितजी हिन्दीके प्रभावशाली वक्ता हैं। अपने विनम्र और सहृदयी स्वभावके कारण वे सभी वर्गोंमें लोकप्रिय हैं। मेरित्सबर्गमें हिन्दी शिक्षा संघके कार्यको आगे बढ़ा रहे हैं और उच्च परीक्षाओंकी तैयारी करवाते हैं।

पं. वी. सी. नैनाराज

पं. वी. सी. नैनाराजका जन्म ता. १०–२–१८९१, मंगलवारको अमगेनीके पासके गांवमें हुआ था। १९०५ तक अंग्रेजी शिक्षा पायी। इस के पश्चात् हिन्दी, तामिल और तेलगू की शिक्षा भी पायी। श्री नैनाराज मद्रासी सज्जन हैं। इन तीनों भाषाओंका ज्ञान होनेसे इन्हें अपने कार्योंमें अच्छी सफलता मिली है।

स्वामी शंकरानन्दजीसे इन्होंने संध्या हवन और यज्ञ करना सीखा था। आर्य युवक सभाके संस्थापक सदस्य हैं और उसके सर्व प्रथम पुरोहित हैं। पं. नैनाराज वैदिक संस्कार, कथाएं और शुद्धियां करवाते हैं। तीन भारतीय भाषाओंका ज्ञान होनेसे मातृभाषामें संस्कारोंका भावार्थ बतलानेमें इनको पूरी सुविधा है। आर्य युवक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभाके सभी यज्ञ पं. नैनाराज ही करवाते हैं। दयानंद शताब्दी महोत्सवके समय जो महायज्ञ हुआ था उसके मुख्य पुरोहित पंडितजी ही थे। ऐसा महायज्ञ प्रथमवार हुआ था। डरबनकी जेलमें सभाकी तरफसे सन् १९२६ से धर्मोपदेश करने जाते हैं। हिन्दी और तामिलमें कैदियोंको उपदेश देते हैं और प्रार्थना करवाते हैं।

सन् १९१२ में सीकाउलैकमें पं. नैनाराजने एक हिन्दी पाठशाला स्थापित की। वहां वे रात्रीको हिन्दी पढ़ाते थे। उसके विद्यार्थियोंको लेकर आर्य मित्र मंडल स्थापित किया और ४ नवम्बर १९२९ को आर्य युवक मंडलकी स्थापना की। जिसके पंडितजी सभापति रहे थे। इस स्थानपर बहुत से रूढ़िवादी लोग रहते थे जिनसे पंडितजीको सदा टक्कर लेनी पड़ती थी। पर पंडितजी अपने कार्यमें दृढ़ थे।
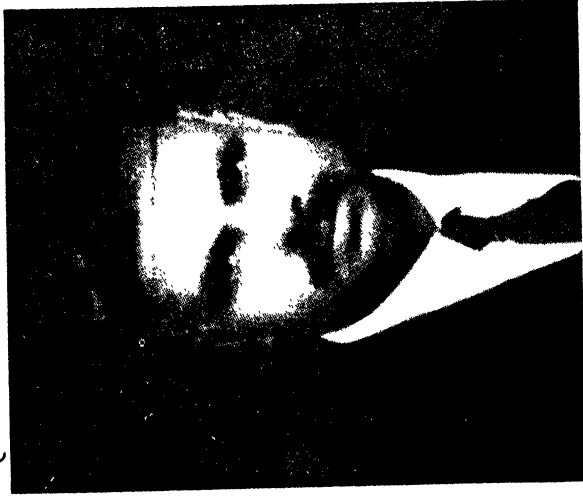
पं. वी. सी. नैनाराज,
ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

श्री आर. करपत
सभापति, खंडाला एस्टेट हिन्दू संगठन

श्री वी. परमेश्वर
ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

श्री बी. गोविन्द
सभापति, आर्य युवक सभा, डरबन

आर्य अनाथाश्रमकी सेवा उसके स्थापनाकालसे पं. नैनाराज करते रहे हैं। आश्रमकी व्यवस्थापक समितिके १६२२ से पंडितजी सभापति हैं। बडी लगनसे यह कार्य कर रहे हैं। पंडितजी तामिल, तेलगू और हिन्दी भाषी भारतीयोंमें एकसे प्रिय हैं।

श्रीमान् आर. करपत

श्री आर. करपतका जन्म वेरुलममें १ दिसम्बर १६०७ के दिन हुआ था। १ वर्षकी उम्रमें ही इनके पिताका देहांत होगया। जिससे मामा श्री एल. संपतने इनका पालन पोषण किया। इन कठिनाइयोंके कारण बालक करपतको ऊँची शिक्षा नहीं मिल सकी थी।

श्री आर. करपत १९२२ में वेरुलमसे खंडाला एस्टेटमें निवासके लिये आ गये। यहांपर उन्होंने दो पौंड मासिककी फेरी करनेकी नौकरी स्वीकार कर ली। यद्यपि यह नौकरी बहुत मामूली थी पर श्री करपत अपनी लगन और बुद्धिमतासे व्यापारी अनुभव पाने लगे। १९२८ में उन्होंने स्वतंत्ररूपसे व्यापारके क्षेत्रमें प्रवेश किया और दिनोंदिन अच्छी तरक्की करने लगे। आज वे अच्छे व्यापारी बन गये हैं।

आर्थिक स्थिति सुधरनेपर श्री आर. करपतने सार्वजनिक जीवनमें भी भाग लेना शुरु किया। १९२९ में वे स्थानीय हिन्दू यंग मेन सोसायटीके कोषाध्यक्ष बने। फिर वे १६३१ में खंडाला स्टेट हिन्दू संगठनके कोषाध्यक्ष बने। फिर तो वे इस संस्थामें उत्तरोत्तर अधिक भाग लेने लगे। सन् १९३६ में इसके प्रधान निर्वाचित हुए। आज इस संस्थाके वे प्राण हैं। जब यह संस्था कर्जके कारण बन्द हो जानेवाली थी तो श्री करपतने श्री बी. एम. चैतू तथा श्री पी. चिरकूतके साथ इसे नीलाम होनेसे बचाया था। खंडाला स्टेट हिन्दू संगठनकी तरफसे कन्या पाठशाला स्थापित करनेमें भी श्री करपत का बडा हाथ रहा है। वे इसके एक ट्रस्टी हैं। अपने घरपर एक हिन्दी पाठशाला भी चलाते हैं जिसमें ५० बच्चे पढते हैं। श्री करपत मित्र नाटक मंडल तथा खंडाला स्टेट स्मशानके सभापति हैं। आर्य प्रतिनिधि सभाके उपप्रधान तथा कार्यकारिणी उपसमितिके सभापति हैं। अन्य कई संस्थाओंमें भी सक्रिय भाग ले रहे हैं।

श्रीमान् बी. परमेश्वर

श्री बी. परमेश्वर भारतीय व्यापारियोंमें ऊंचा स्थान रखते हैं। साथही सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियोंमें भी अग्रगराय हैं। श्री बी. परमेश्वरका जन्म दरबनमें सन १८७८ में हुआ था। अंग्रेजीकी शिक्षा पानेके बाद ये व्यापारी क्षेत्रमें उतर आये। सर्वप्रथम ग्रेविलमें साझेमें मिनरल वोटर दर्वंस का धन्धा करने लगे। सन १९२१ में दरबनमें स्वतंत्ररूपसे इलेक्ट्रिक मिनरल वोटर वर्कस चालू किया। इसी तरह एस. ए. स्वीट मेन्युफेक्चरिंग लिमिटेड कंपनी खोली। इन दोनों क्षेत्रोंमें खूब आगे बढे और अच्छा पैसा कमाया। दूसरे व्यवसायोंमें भी पूंजी लगाकर व्यापार बढाते रहे।

सन १९३३ मे श्री बी. परमेश्वरने भारतवर्षकी यात्रा की और वहां कई आर्य संस्थाओंकी मुलाकात ली। वहांसे लौटकर अनेक आर्य संस्थाओं में कार्य करने लगे। कई संस्थाओंके ट्रस्टी और होदेदार हैं। गांधी-टागोर-लेक्चरशिप ट्रस्टमें सक्रिय कार्य कर रहे हैं।

श्री बी. परमेश्वर भारतीय संस्कृतिके प्रेमी हैं और आर्यसमाजके प्रति उन्हें अगाध श्रद्धा है। समय २ पर अनेक सामाजिक संस्थाओंको उदारता से दान देते आये हैं। आर्य प्रतिनिधि सभाके ट्रस्टी बने हैं। हिन्दी शिक्षा संघके आजीवन संरक्षक हैं। आर्यसमाज, वेस्टविल, १९४८–४९ में आर्थिक संकटमें आ गया था तब इन्होंने उसे उदार हृदयसे दान देकर बचा लिया। श्री बी. परमेश्वरको भगवानने विपुल धनराशि दी है। समाजको उनसे बडी आशाएं हैं। उनके बडे पुत्र श्री सुखदेवानंद भी उदार हृदय हैं। वे हिन्दी शिक्षा संघके कोषाध्यक्ष हैं।

पं. रामसुन्दर पाठक

पं. रामसुन्दर पाठक उत्तर नातालमें आर्यसमाजके मुख्य प्रचारक रहे हैं। पंडितजी आर्यसमाज, डेनहाउज़रके सभापति कई वर्षसे रहे हैं। इसके पूर्व हिन्दी प्रचारिणी सभाके सभापति थे। लेडीस्मिथमें हुई द्वितीय वैदिक परिषदके वे स्वागताध्यक्ष थे। आर्य प्रतिनिधि सभाकी तरफसे लेडीस्मिथ की जेलमें धर्मोपदेशकका कार्य करते रहे हैं। सभाके पुरोहित भी नियुक्त हैं। लगनसे आर्यसमाजके प्रचारका कार्य कर रहे हैं।

स्व. बी. बोधासिंह—सभापति (१९३८),
आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

स्व. आर. रामकैलास—भूतपूर्व सभापति,
आर्य युवक सभा, दरबन

श्री आर. देवदत्त
सभापति, आर्यसमाज, कटोंमेनर

श्री विट्ठल लाला—भूतपूर्व सभापति
तथा ट्रस्टी, आर्यसमाज, लेडीस्मिथ

श्रीयुत आर. देवदत्त

श्री आर. देवदत्तका जन्म केटो मेनरमें १७ अगस्त १८९९में हुआ। उस समय वहां शिक्षाकी व्यवस्था न होनेसे इधर उधरसे कुछ पढ लिया। पं पुदन महाराजसे हिन्दीका अक्षर ज्ञान हुआ। बादमें अपने परिश्रमसे अध्ययन करने लगे। श्री देवदत्त पुरातन रुढिवादके अनुयायी थे परन्तु जब पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार आर्य युवक सभाकी तरफसे यहां प्रचार कर रहे थे तो पंडितजीके व्याख्यानोंने इनके जीवनको पलट दिया। फिर तो वे पक्के आर्यसमाजी बन गये।

अपने मित्र स्व. एस. पदारथके सहयोगसे श्री आर. देवदत्तने सन् १९२१ में श्री सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासा सभा (वर्तमान नाम—केटो मेनर आर्यसमाज) की स्थापना की इनके ही नेतृत्वमें यह संस्था फूली फली। आज कई वर्षोंसे श्री देवदत्त इस आर्यसमाजके प्रधान हैं और उसकी उन्नति में लगे रहते हैं। इनकी पत्नी तथा पुत्र आदि सारा परिवार वैदिक धर्मका अटल अनुयायी रहा है। श्री आर. देवदत्त इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा के एक उपप्रधान भी हैं।

श्रीमान विठ्ठल लाला

श्री विठ्ठल लालाका जन्म भारतवर्षके सूरत जिलेके कडोद गांवमें सन् १८८८ में हुआ था। वे सन् १८९५ में दक्षिण आफ्रिका आकर लेडीस्मिथ में रहने लगे। लेडीस्मिथमें आर्यसमाजका प्रचार कार्य करनेमें श्री विठ्ठलभाई का भी बडा हाथ रहा है। लेडीस्मिथ आर्यसमाजकी स्थापनासे उसके सदस्य रहे। तीन वर्ष तक सभापति भी निर्वाचित हुए। इस समय समाजके ट्रस्टी हैं।

सन् १९२१ में इन्होंने लेडीस्मिथमें गुजराती—हिन्दी पाठशालाकी स्थापना की और उसके संचालनमें मुख्य हिस्सा लेते रहे। लेडीस्मिथमें १९२५ में हुई द्वितीय वैदिक परिषदको सफल बनानेमें इन्होंने बडा परिश्रम किया था। लेडीस्मिथकी अन्य कई संस्थाओंमें भी अच्छा कार्य कर रहे हैं। वैदिक धर्मके प्रचारमें आजतक दत्तचित्त हैं।

पंडित बी. तुलसीरामजी

पं बी. तुलसीरामजीका जन्म ता. १५–६–१९०३ को हुआ। पंडित जीके परिवारकी आर्थिक हालत अच्छी न होनेसे इनकी पढाईका अच्छा बन्दोबस्त नहीं हो सका। इसी कारण १२ वर्षकी उम्रमें इन्हें नौकरी कर लेनी पडी। पं. अयोध्याप्रसादसे घरपर ही पं. तुलसीरामजीने हिन्दी और संस्कृतकी शिक्षा पायी। पं. भगवानदीन महाराजकी पुत्रीसे सन् १९२३ में इनका विवाह हुआ।

श्री सत्यदेवजीकी प्रेरणासे पं. तुलसीरामजीने आर्यसमाजके क्षेत्रमें काम करना शुरु किया। इन्हें धार्मिक कार्योंमें श्रद्धा पैदा हुई। वे साप्ताहिक सत्संगमें भाग लेने लगे। पंडितजीने संस्कार विधिका अध्ययन किया और वैदिक संस्कार शुद्ध रीतिसे कराने लगे। आर्य युवक सभाने पंडितजीको संस्कृत और संस्कारकी पद्धति सिखानेके कामपर नियुक्त किया। रात्रीके समय वे यह कार्य करते थे। पंडितजीका हिन्दी पर भी प्रेम है और कई युवकोंको हिन्दीकी शिक्षा देते रहे हैं।

पं. तुलसीरामजीने कई संस्थाओंको अपनी सेवाएं दी हैं। केटो मेनर आर्यसमाजके दो वर्ष मंत्री रहे। आर्यसमाज, सिडनमके पुरोहित हैं। इन्होंने क्लेरस्टेट आर्यसमाजकी स्थापना की। इस समाजका साप्ताहिक सत्संग तथा हिन्दी पाठशाला अपने घरपर चलाते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभाके पुरोहित हैं और उसकी पुरोहित समितिके मंत्री हैं। वैदिक संस्कार, वैदिक कथाएं और शुद्धियाँ पंडितजीके हाथोंसे जब तब होती रहती हैं। इन्होंने अन्त्येष्टि संस्कारपर विचार, सत्य सनातन धर्म क्या है? और वैदिक सन्ध्या नामक तीन पुस्तिकाएं स्वपरिश्रमसे तैयार करके आर्यसमाज, सिडनमके नामसे वितरित की हैं।

श्रीमान जी. मेढई

श्री जी. मेढई आर्यसमाजके पुराने कार्यकर्त्ता हैं। प्रो. भाई परमानन्द जीके आगमन समयसे धार्मिक कार्योंमें रस लेते रहे हैं। क्लेरस्टेटमें हिन्दी आर्य आश्रमकी स्थापना स्वामी भवानी दयालजीने की थी। श्री मेढई इसके

ट्रस्टी थे। वहांकी वेद धर्म सभामें भी कार्य करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभाके कार्योंमें भी सदा सहयोग देते आये हैं। उसके लिये चन्दा इकट्ठा करनेमें साथ देते रहे हैं। खुद भी सभाके एक ट्रस्टी हैं। श्री मेढईने अपने एक पुत्र श्री हरिशंकरको यहांसे गुरुकुल कांगड़ी पढ़नेके लिये भेजा था। वे वहांसे आयुर्वेदालंकारकी उपाधि लेकर स्नातक हुए हैं। यहांपर दो साल तक रहकर श्री हरिशंकर पुनः भारतमें विद्याध्ययनके लिये गये हुए हैं।

स्व. आर. के. केपिटन

स्व. आर. के. केपिटनका जन्म गुजरात प्रांतके नवसारी शहरमें सन् १८९२ में हुआ था। सन् १९०४ में श्री केपिटन स्वदेशसे व्यापार करनेके लिए परिवार सहित इस देशमें आये। उन्होंने दरबनमें अपना होटल खोला। इससे उन्हें अच्छा धन प्राप्त हुआ। श्री केपिटनके हृदयमें आर्यसमाज और स्वामी दयानंदके प्रति गहरी भक्ति पैदा हुई। अपने बड़े पुत्र श्री हरिश्चन्द्र को गुरुकुल कांगड़ीमें तथा दो पुत्रियोंको जालन्धर कन्या महाविद्यालयमें शिक्षा पानेके लिये भेजा।

इस देशमें भी श्री केपिटन आर्यसमाजके कार्योंमें सक्रिय सहयोग देने लगे। ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी महोत्सवके वे स्वागताध्यक्ष थे। प्रतिनिधि सभाकी स्थापनामें उनसे बड़ी मदद मिली। वे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी निर्वाचित हुए थे। कई वर्षों तक सभाके कोषाध्यक्ष पदपर रहे। सभा भवनके लिये जब भूमि खरीदनी थी तो श्री केपिटनने ही अपना उदार हाथ सर्वप्रथम बढ़ाया था। धार्मिक और सामाजिक कार्योंमें वे समय समयपर आर्थिक सहायता देते रहते थे।

सन् १९३४ में बड़ौदाके आर्य कन्या महाविद्यालयकी छात्राएं पं. आनन्दप्रियजीके नेतृत्वमें यहां आयी थीं। तब उनकी व्यवस्था और प्रचार यात्राकी जिम्मेदारी श्री केपिटनके कन्धोंपर ही थी। उस समय वे अपने रोजगारको भी छोड़कर उन्हें हर प्रकारकी सहायता पहुंचाते रहे। प्रो. यशपाल के आतिथ्य सत्कारका भार भी श्री केपिटनने ही उठाकर सभाको चिन्ता मुक्त किया था। सन् १९३६ में श्री केपिटन जोहानिसबर्गमें अपना होटल

सम्भालने चले गये थे। ता. २० जून १९४७ को श्री केपिटनका अकाल अवसान हो गया। उनके निधनसे दक्षिण आफ्रिकामें आर्यसमाजको गहरी क्षति हुई है। श्री केपिटन नीडर और उत्साही आर्य सज्जन थे। वे विधर्मियों की धमकियोंके वश न होकर अपने काममें डटे रहते थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिश्चन्द्र भी आर्यसमाजके कार्योंमें रस लेते हैं। वे प्रतिनिधि सभाके ट्रस्टी भी बने हैं।

स्व. वासुदेव बोधासिंह

स्व. वासुदेव बोधासिंहका जन्म सन १८९३ में हुआ था। ये श्री बोधासिंहके तीसरे पुत्र थे। श्री वासुदेवने दरबनके हाई ग्रेड स्कूलमें अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी। फिर वे अपने पिताको कृषि-कार्यमें मदद देते रहे। श्री बोधासिंह गन्नेकी खेती करनेवाले भारतीयोंमें एक मुख्य कृषिकार थे। स्टेंगर में इनकी विशाल जमीन है। श्री वासुदेव उसकी निगरानी करने लगे।

सन १९३७ में श्री वासुदेव दरबनमें रहनेके लिये आये और वे आर्य समाजके कार्योंमें हिस्सा लेने लगे। सन १९३८ में आर्य प्रतिनिधि सभाके सभापति भी निर्वाचित हुए। इनकी अध्यक्षतामें जो वैदिक परिषद हुई थी उसमें हिन्दू महासभाको पुनरुजीवित किया गया था। प्रतिनिधि सभाने अपनी भूमि खरीदी थी, उसका कर्ज था, इस कर्जको अदा करनेके लिये श्री बी. बोधासिंहने काफी यत्न किया था। बादमें व्यवसायके लिये उन्हें पुनः स्टेंगर चला जाना पड़ा। वहांसे भी वे सभाके कार्योंमें रस लेते रहे थे। सन् १९३९ में हृदय की गति रुक जानेसे श्री बी. बोधासिंह का स्वर्गवास हो गया। इससे आर्य संसारको गहरा धक्का लगा। परन्तु अपने पीछे वे अपने परिवारमें धार्मिक श्रद्धा छोड़ गये। इसीके फल स्वरूप श्री आर. बोधासिंह आज सभाके प्रधानके पद पर स्थित हैं।

स्व. बाबू रघुनाथ सिंह

उत्तर नातालके कार्यकर्ताओंमें स्व. बाबू रघुनाथ सिंहका नाम विशेष उल्लेखनीय है। बाबूजी लेडीस्मिथके निवासी थे। ता. १६ अप्रैल १९१६ में वहां नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई थी जो बादमें आर्यसमाज,

स्व. आर. के. केपिटन—सभापति (१९३०-३२;
१९३४-३६), आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

श्री एच. कैपिटन
ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

स्व. बी. बोधासिंह—सभापति (१९३८),
आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

स्व. आर. रामकैलास—भूतपूर्व सभापति,
आर्य युवक सभा, दरबन

लेडीस्मिथके रूपमें बदल गयी। बाबू रघुनाथ सिंहजी कई वर्ष तक इस संस्था के सभापति रहे।

द. आ. ऋषि दयानंद जन्म शताब्दी महोत्सवमें हुई प्रथम वैदिक परिषद्के सभापति श्री रघुनाथ सिंह थे। इस उत्सवमें महायज्ञ हुआ था, उसका सारा व्यय इन्होंने दिया था। बाबूजीके प्रयत्नसे ही लेडीस्मिथमें दूसरी वैदिक परिषद हुई थी। उसका भी सम्पूर्ण व्यय इन्होंने उठाया था। लेडीस्मिथमें पं भवानी दयालजीके उद्योगसे सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन सन् १९१६ में हुआ था। इसके स्वागताध्यक्ष बाबू रघुनाथ सिंह थे। इनके प्रयत्नसे वह सम्मेलन सफल हो सका था। बाबूजी प्रतिनिधि सभाकी तरफसे जेल प्रचारकका कार्य भी करते रहे। हृदयकी गतिके रुक जानेसे बाबूजीका स्वर्गवास हो गया। आर्यसमाजके कार्यको आगे बढानेमें बाबूजीका प्रयत्न स्मरणीय रहा है।

स्व. बी. सुखदेव सिंह

स्व. बी. सुखदेव सिंह दरबन निवासी हैं। इनकी प्रतिभा व्यापारमें खूब चमकी थी। प्रारम्भमें वे अपने भाइयोंके साथ व्यापार करने लगे थे। उसके बाद स्व. बी. एम. सिंहके साझीदार हुए। उनके स्वर्गवास होनेपर स्व. सुखदेव सिंह सारे व्यापारके मालिक हो गये। अपनी प्रतिभा और परिश्रमसे व्यापारमें अधिकाधिक उन्नति करने लगे।

व्यापारके साथ ही स्व. सुखदेव सिंह सामाजिक कार्योंमें भी भाग लेने लगे। आर्य प्रतिनिधि सभाके कार्यमें रस लेते थे। उसके ट्रस्टी भी बने। आर्य अनाथाश्रमके संचालनमें इनका अच्छा सहयोग मिला है। शक्ति अनुसार विभिन्न संस्थाओंको दान भी देते आये हैं। आर्यसमाज, केटोमेनरको भवनके लिये जमीनका टुकडा खरीद कर दिया है, पर अभी उसकी रजिस्ट्री नहीं हुई है। यहांपर आर्यसमाजका भवन बनानेके लिये भी आपने विलमें लिखा है। जिसके लिये २००० पौंडका दान ट्रस्टियोंके विचाराधीन है। श्री सुखदेव सिंहके स्वर्गवाससे आर्यसमाजको बडी क्षति पहुंची है।

स्व. आर. रामकैलास

श्री आर. रामकैलासका जन्म मेरित्सबर्गमें हुआ था। वहीं पर शिक्षा पायी। फिर वहांसे दरबन आ गये। दरबनमें छोटी मात्रामें व्यापार करना शुरु किया। तब वे अंग्रेजी और हिन्दीका भी अभ्यास करते रहते थे। पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकारने इनका विवाह संस्कार करवाया था। पंडितजीके व्याख्यानोंसे आर्यसमाजके प्रति गहरी रुचि हुई और सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेने लगे।

आर्य युवक सभाके द्वारा श्री रामकैलासने अपना सार्वजनिक जीवन शुरु किया था। कई वर्ष तक इस सभाके मंत्री रहे और चार वर्ष तक सभापति भी रहे थे। वैदिक सिद्धान्तोंके अच्छे प्रेमी थे और उत्साही कार्यकर्ता थे। हृदयकी गति रुकनेसे इनका अवसान हुआ और वे अपने कार्योंकी स्मृति छोडकर चल बसे।

स्व. बी. बेचू

एक निर्धन कुटुम्बमें १९ जनवरी १८९२ के दिन एक बालकका जन्म हुआ। इस बालकके पढने, लिखनेकी कोई सुविधा न थी और बचपनसे ही मजदूरी गले पडी थी। यह बालक श्री बी. बेचू था। जिसने बडे होनेपर आर्य समाजके क्षेत्रमें अच्छा नाम पैदा किया। श्री बेचूके परिवारके लोग शिवनारायण पंथी थे। स्वपरिश्रमसे और लगनसे स्व. बी. बेचूने यहां वहांसे हिंदी और अंग्रेजीकी शिक्षा प्राप्त करली। साथही मजदूरी करते हुए वे भवन निर्माण कलामें भी निपुण हो गये और वे भारतीय कारीगर और ठेकेदार हो गये। इसमें उन्हें अच्छी ख्याति मिली।

रायकोपिसमें आकर श्री बी. बेचू विद्या प्रचारिणी सभाके सदस्य हो गये। यहां उन्हें सत्यार्थप्रकाश और अन्य वैदिक साहित्य पढनेका सुयोग हुआ। जिससे वे पक्के आर्यसमाजी बन गये। अध्ययन और परिश्रमसे उन्होंने वैदिक सिद्धान्तोंका तथा हिन्दीका अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। वे हिन्दीमें कविता भी करने लगे थे। साहित्य प्रचारकी ओर उनकी रुचि निरन्तर बढती गयी। इन्होंने श्री बी. बेचू वैदिक साहित्य प्रचार निधि कायम की

स्व. श्री. सुखदेवसिंह

स्व. श्री. बेचू—भूतपूर्व सभापति
आर्यसमाज, वेटोमेनर

स्व. हंस मेघराज—सहायक मंत्री, (१९३०-३५; १९३७-४०), आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

श्री जी. मेढई
ट्रस्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

थी। इस निधिसे वैदिक साहित्यका प्रचार होता था। भिन्न २ विषयों पर ट्रेक्ट छापकर लागत दामसे बांटे जाते थे। आर्यसमाजके क्षेत्रमें यहां यह एक पहला प्रयत्न था।

श्री बी. बेचू केटोमेनर आर्य समाजके प्रधान तथा ट्रस्टी रह चुके थे। प्रतिनिधि सभाके भी ट्रस्टी व पुरोहित थे। गांधी-टागोर-लेक्चरशिप-ट्रस्ट के भी एक सदस्य रहे थे। श्री. बी. बेचूने विभिन्न संस्थाओंको यथाशक्ति उदार हृदयसे दान भी किया है। ता. १४-६-४७ को उनका निधन हो गया। आर्यसमाजने अपना एक उत्साही कार्यकर्ता खो दिया।

स्व. हंस मेघराज

श्री हंस मेघराजका जन्म ३१ मार्च १६०६को दरबनमें हुआ। शिक्षा पानेके बाद दलालीका धन्धा करने लगे। इसमें इन्होंने शनैः शनैः बहुत तरक्की करली और छोटी उम्रमें काफी द्रव्योपार्जन किया। श्री हंस कई वर्ष तक यंग मेन आर्यसमाजके मंत्री रहे। आर्य प्रतिनिधि सभाके उपमंत्री रहकर भी सेवा कार्य करते रहे। सभाके भवनके लिये भूमि खरीदनेमें इनका प्रयत्न बहुत रहा है। ता. ४-१२-४५ के दिन अकस्मात् हृदयकी गति रुक जानेसे इनका अवसान हो गया। इनसे समाजको बडी आशाएं थीं।

स्व. बाबू पद्मसिंह

स्व. भाई परमानन्दजी दक्षिण आफ्रिकामें सर्वप्रथम प्रचारकके रूपमें १९०५ में आये थे। उनके आगमनसे भी पूर्व कई आर्य सज्जन यहां बसनेके लिये आ चुके थे। उनमेंसे बाबू पद्मसिंह एक थे। वे मेरित्सबर्गमें रहते थे। वहांपर कई सज्जनोंकी मददसे बाबू पद्मसिंहने गुलजार सभाकी स्थापना की थी। १९०४में इस सभाका नाम परिवर्तित कर आर्यसमाज, मेरित्सबर्ग रखा गया था। यह आर्यसमाज दक्षिण आफ्रिकाका सर्वप्रथम आर्यसमाज था। स्वामी शंकरानंदजीने बादमें इस समाजका नाम वेद धर्म सभा रखा, जोकि आज भी जीवित जाग्रत संस्था है।

बाबू पद्मसिंह इस आर्यसमाजके सभापति थे। वेद धर्म सभाके भी वे प्रधान कार्यकर्ता रहे थे। सभाकी तरफसे "वैदिक आश्रम" स्थापित किया गया था। उसमें बाबूजी परिवार सहित रहकर कार्य करते थे। इसी आश्रम में द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन १९१७ में हुआ था। जिसके लिये बाबू पद्मसिंहने बहुत परिश्रम किया था।

उसके बाद बाबू पद्मसिंह भारत चले गये थे। वहां कई वर्ष रहकर पुनः इस देशमें आये और दरबनमें सपरिवार रहने लगे। यहांके दरबन आर्य समाजके सभापति थे। सन् १९४२ की वैदिक परिषद्‌का उद्‌घाटन बाबूजीने ही किया था। ता. १४ अगस्त १९४८ को उनका देहान्त हो गया। और अपने सदाचारी, धार्मिक जीवनकी अमर छोडकर चले गये।
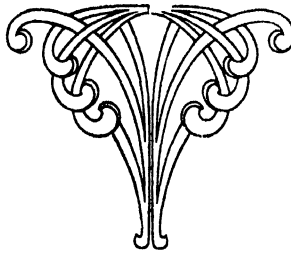
अध्याय चौदहवाँ

उपसंहार

इस इतिहासका प्रारम्भ करते हुए हमने लिखा था कि सन् १८३४ का वर्ष भारतवर्षके लिये बडे दुर्भाग्यका था। पुस्तकके अन्तमें हम लिखना चाहते हैं, उस वर्ष को हम लोग भारतीयोंके इतिहासमें सौभाग्यके रूपमें परिवर्तित कर सकते हैं। प्राचीन भारतमें प्रायः सभी देशोंमें हमारे पूर्वज गये। उन्होंने वहांपर हमारी संस्कृति और विद्या फैलायी। मध्यकालमें परदेश गमन बंद हो गया। सन १८३४ में दूसरे ही रूपमें भारतीय संतान परदेशोंमें पहुंची।

हमारा यह इतिहास बतलाता है कि हम अपने दुर्भाग्य को सौभाग्यमें कैसे परिवर्तित कर सकते हैं। ऐसा करना हमारे अपने हाथमें है। संसारमें जहां जहां भारतीय लोग बसे हैं यदि यह संकल्प कर लें कि हम अपनी आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यताकी रक्षा करेंगे और उसपर अमल करेंगे तो यह कार्य सहज हो सकता है। आज दुनिया स्वतंत्र भारतसे नया संदेश चाहती है। उपनिवेशोंमें बसे हुए हम भारतीय उसके संदेशवाहक हो सकते हैं। यदि भारतीय लोग स्वयं दूसरी जातियोंके लिये उदाहरण स्वरूप बन जावें और भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृतिका श्रेष्ठ स्वरूप प्रकट करेंगे तो संसारमें पुनः पूर्वकी ज्योति फैलती नज़र आवेगी। सभी उपनिवेशोंके भारतीय लोगोंमें पुर्नजागरण हो रहा है। दक्षिण आफ्रिकामें भी यह जागरण हुआ है। उसी जागरणका यह संक्षिप्त इतिहास दिया गया है।

हमारे इस जागरणके प्रयत्नोंमें क्या २ कमियां रही हैं और किन २ बातोंपर विशेष ध्यान देनेकी जरूरत है उसका हम यहां दिग्दर्शन कराना चाहते हैं। ये बातें दक्षिण आफ्रिकाके लिये हैं, परन्तु कम या अधिक मात्रा में सभी उपनिवेशोंके सम्बन्धमें भी लागू हो सकती हैं।

आर्थिक समस्या—सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न आर्थिक है। कोई भी योजना, कोई भी कार्यक्रम या कोई भी सूचना हो उसके लिये धन की बहुत आवश्यकता रहती है। विदेशोंमें बसे हुए भारतीय लोगोंके पास पैसा है। इस सम्बंधमें वे भारत देशकी जनतासे अच्छी स्थितिमें हैं। फिर भी उपनिवेशोंका साधारण वर्ग अपने यहांकी जीवन तुलाके अनुसार गरीब ही कहा जावेगा। ऐसी दशामें यहांका पैसा यहींके धार्मिक तथा सामाजिक कार्योंमें लगना चाहिये। साधारणतः आज तक यह हुआ है कि भारतसे अनेक संस्था, पाठशाला, धर्मस्थान और धर्मशालाके लोग तथा प्रचारक यहां आये और चंदा करके ले गये। इसका परिणाम यह हुआ कि यहांका कार्य बहुत पिछड गया। उपनिवेशोंके भारतीय संस्कृति, शिक्षा, धर्म, धर्म-स्थान आदिमें इतने पिछडे हुए हैं कि यहांका द्रव्य यहीं पर खर्च होना चाहिये। यहांसे भारतको चंदा जाना एकदम बंद हो जाना चाहिये। सिर्फ विदेशोंमें प्रचारकी योजनाओंके लियेही यहांसे द्रव्य देना चाहिये। उपनिवेशों में मातृभाषाकी पाठशालाओंकी, धर्मस्थानोंकी, पुस्तकालयों और वाचनालयों की, धर्मशालाओंकी अनाथाश्रमोंकी तथा योग्य अध्यापकों एवं प्रचारकोंको रखनेकी कितनी बडी आवश्यकता है। यहांका पैसा यहांके ऐसेही कार्योंमें लगना चाहिये। इसके लिये भारतसे आनेवाले महानुभावों, संस्थाओंके कार्यकर्ताओंको तथा यहांके लोगोंको भी गंभीर रूपसे ध्यान देनेकी जरूरत है। भारतसे सुदूर इन प्रदेशोंमें अपनी संस्कृति, सभ्यता मातृभाषा और धर्म की रक्षाके लिये यहां बसे हुए भारतीयोंको भी उदारतासे धन देना चाहिये। धर्मकी रक्षा तप, त्याग और बलिदान परही निर्भर है।

भवनकी आवश्यकता—भावी कार्यक्रमको सोचते हुए सार्वजनिक भवनोंकी बहुत जरूरत है। हरएक बस्तीमें एक ऐसा भवन खडा करना चाहिये जहां सार्वजनिक कार्य हो सके। एक बस्ती की दो तीन संस्थाएं मिलकर भी ऐसा भवन बना सकती हैं। यह भवन चाहे वेद मंदिर हो, चाहे अन्य मंदिर या चाहे पाठशाला हो, इसमें सभी तरहकी सुविधाएं होनी चाहिये। जैसे सार्वजनिक सभाके लिये होल हो। मातृभाषाकी पढाईके लिये

व्यवस्था हो। पुस्तकालय-वाचनालयके लिये सुविधा हो। यज्ञ, पूजा आदि के लिये एवं अतिथि शालाके लिये हो सके तो पृथक् कमरे हों। हरएक संस्थाको अपनी पूरी कोशिशसे ऐसा भवन बना लेना चाहिये। तभी स्थिर-तासे प्रचार का एवं पाठशालाका काम हो सकेगा। इसीके साथ किराये पर दिया जा सके, ऐसा मकान भी हो तो अधिक अच्छा होगा। उससे आव-श्यक खर्च निभ सकेंगे। द्रव्यकी चिंता कम हो जावेगी और प्रचार पर ध्यान दिया जा सकेगा। निरन्तरके प्रयत्न, श्रद्धा एवं सेवा भावसे यह कार्य हो सकता है।

मातृभाषाकी पाठशाला—स्वसंस्कृति और धर्मकी रक्षा के लिये मातृभाषाकी पढाईकी कितनी आवश्यकता है इसपर लिखनेकी जरूरत नहीं है। हरएक संस्थाको ऐसी पाठशाला चालू करनी चाहिये। जहां संभव हो नवयुवकोंके लिये रात्री पाठशाला तथा बहिनोंके लिये स्त्री पाठशाला का भी प्रबंध किया जावे। आज तो सारे देशमें मातृभाषाकी माध्यमिक श्रेणियों की पढाईकी व्यवस्था करनेवाली एक भी पाठशाला नहीं है। कितनी बडी कमी है यह।

प्रचारक—प्रचारका बहुत कुछ कार्य प्रचारकों पर निर्भर है। प्रचारक धर्मका अच्छा ज्ञाता, मातृभाषाका विद्वान् एवं सेवाभावी होना चाहिये। ऐसे प्रचारकको पूरा वेतन मिलना चाहिये। जिससे वह अपना कार्य बिना दूसरी चिन्ताके कर सके। यह प्रचारक पुरोहित, अध्यापक और ग्रंथपालका कार्य कर सकता है। आज तो ऐसे विद्वान प्रचारकोंका एकदम अभाव है। सब संस्थाएं भारतवर्षसे प्रचारक नहीं बुला सकतीं। इसके लिये केन्द्रीय संस्थाको देशसे योग्य विद्वान् बुलाकार नवयुवकोंके लिये वर्ग चलाकर आवश्यक प्रचारक तैयार करने चाहिये। इस तरह यह कमी दूर हो सकती है।

पुस्तकालय और वाचनालय—हर बस्तीमें एक छोटा मोटा पुस्तकालय होना चाहिए। जिसमें मातृभाषाओंकी तथा अंग्रेजीकी चुन चुनकर पुस्तकें रखी जानी चाहिए। इनमें धार्मिक, सामाजिक जीवन-चरित्र

बाल-साहित्य, इतिहास आदि विषयोंकी पुस्तकें रखी जावें। इसी तरह योग्य समाचारपत्र मंगाए जाने चाहिए। आज तो ऐसे पुस्तकालय और वाचनालय कहीं नहीं हैं। स्वाध्याय, अध्ययन और पठनके बिना सच्चा ज्ञान कहां ?

इसीके साथ केन्द्रीय संस्थाओं (जैसे आर्य प्रतिनिधि सभा, हिन्दू महा सभा आदि) के पास बृहद् पुस्तकालय होने चाहिए। जिसमें सभी तरह की पुस्तकें मिल सकें। आज तो किसी विषयके अनुशीलनके लिए या प्रमाण के लिए कोई पुस्तक चाहिए तो सारे दक्षिण आफ्रिकामें खोजने पर भी शायद ही कोई अच्छी पुस्तक मिल सके। यह कमी अवश्य दूर होनी चाहिए।

पुस्तिकाएँ (ट्रैक्ट) तथा पत्र-पत्रिकाएँ—प्रचारका एक बहुत बडा साधन पुस्तिकाओं (ट्रैक्ट) का प्रकाशन है। सामान्य जनता में जिस विचार धाराको फैलाना हो, उसपर मातृभाषाओंमें तथा अंग्रेजीमें छोटी छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित करनी चाहिए। भिन्न विषयोंपर ऐसी पुस्तिकाओंके प्रकाशनसे जन समाजकी विचारधारा बनती है। और उसे मार्गदर्शन मिलता है। इसी तरह मासिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाका भी प्रकाशन हो तो उसके द्वारा समाजको जाग्रत रख सकते हैं। आजके युगमें समाचार-पत्र एक प्रधान शक्ति है। उसके महत्वको जानते हुए भी भारतीय जनताका एक भी दैनिक न होना या मातृभाषाके पत्रका अभाव अखरनेवाली चीज है।

भजन मंडल—जहां सम्भव हो भजन मंडल या संगीत मंडल बनाए जावें। संगीत भी प्रचारका अच्छा साधन है। भारतीय संगीतने विदेशोंमें अपनी संस्कृतिकी रक्षामें अच्छा सहयोग दिया है। संगीत, भजन आदि की तरफ लोगोंकी भी अच्छी रुचि होती है। अच्छे भजनोंके संग्रह प्रकाशित किए जाने चाहिए। संवाद, नाटक और अभिनय द्वारा भी जन जागृतिमें काफी सहायता मिलती है। सिनेमा या चल चित्रोंके सम्बन्धमें बहुत कुछ कहा जा सकता है, परन्तु उपनिवेशोंमें जहां की भारतीय जनता स्वदेशके

दर्शन नहीं करने पायी हैं, उसके रीति रिवाज, पहिनावे और उठने बैठनेके ढंगसे भी अपरिचित है; वहां सिनेमाओंने भारतीयताको कायम करनेमें बड़ा सहयोग दिया है। हिन्दीको जिलाने और लोकप्रिय बनानेमें सिनेमाका बहुत बडा हिस्सा है। योजनापूर्वक सिनेमा द्वारा अच्छा लाभ मिल सके इसपर विचार होना चाहिये।

व्यायामशाला—बालकों और नवयुवकोंमें व्यायामके प्रचारकी भी बहुत आवश्यकता है। आर्यवीर दल या महावीर दलकी योजनाएं होनी चाहिये। हमारी सभाओंमें, उत्सवों और प्रदर्शनोंमें निमंत्रण और शिस्त (डिसीप्लीन) की कितनी कमी होती है। इसके लिये योग्य स्वयं सेवक भी नहीं मिलते। व्यायामशालाकी प्रवृत्तिसे यह कमी दूर हो सकती है।

त्यौहार, सत्संग तथा धार्मिक कार्य—जातीय जीवन की उन्नतिमें त्यौहारों और महापुरुषोंकी जयन्तियोंका बहुत बडा हिस्सा है। त्यौहार संगठितरूपसे मनाने चाहिये, पर साथ ही घर घरमें, प्रत्येक परिवार में उसे मनानेकी प्रवृत्ति हो ऐसी योजना होनी चाहिये। जिससे जन समाज यह समझ सके कि यह हमारी विशेषता है और हम अपना धार्मिक कार्य कर रहे हैं। इसी तरह साप्ताहिक सत्संग, रामायण, महाभारतकी कथाएं उपनिषदके प्रवचन गीता, जयन्ती आदिका प्रचलन बढाना चाहिये। इनसे धार्मिक जीवन जाग्रत रहता है।

सेवाके कार्य—सेवाकी महिमा बहुत है। उसका प्रभाव भी अनोखा है। सेवाके लिये क्षेत्र भी बहुत है। दीन दुःखियोंकी मदद करना, अबलाओंको सहायता देना, अनाथ बच्चोंका रक्षण करना, उनकी शिक्षाकी व्यवस्था करना, होनहार बच्चोंको छात्रवृत्ति देना, बालकोंके लिये खास निःशुल्क दवाखाने चालू करना, सार्वजनिक अस्पतालोंमें रोगियोंको मदद पहुंचाना और उनके स्वास्थ्यके लिये कामना करना आदि अनेक कार्य हैं जिन्हें संस्थाएं, प्रचारक और स्वयंसेवक दल कर सकते हैं।

स्त्री-शिक्षा—भावी समाजके निर्माणमें तथा योग्य नागरिकोंको तैयार करनेमें स्त्रियोंकी जिम्मेदारी बहुत बडी रहती है। जहांका स्त्री समाज उन्नत नहीं, वहां अच्छे समाजकी कल्पना भी नहीं हो सकती। यदि स्त्रियां अपने घरोंमें, कुटुंबियोंमें स्वधर्म, रीति रिवाज और मातृभाषाका व्यवहार रखें तो जातीय जीवनमें इनका नाश नहीं हो सकता। इस लिए स्त्रियों को शिक्षा देनेकी बहुत आवश्यकता है। प्रायः सभी बस्तियोंमें स्त्रीसमाज, महिला मंडल, कन्या पाठशाला या ऐसी संस्थाएं होनी चाहिये।

ये बाते हैं जिनपर हमारी भावी उन्नति निर्भर है। इनसे हमारा जातीय जीवन सुरक्षित और स्थिर रह सकता है। यह संभव नहीं है कि हरएक संस्था इन कार्यक्रमोंका तुरन्त अमल करना शुरु कर देवे। पर इस तरफ बहुत गंभीरतामे ध्यान देनेकी जरूरत है। आज भी कई संस्थाएं हैं जो इन बातोंपर ध्यान देती हैं और अपनी शक्तिके अनुसार कार्य कर रही हैं। सभीको इस ओर विशेष सजग रहना चाहिये।

कार्यकर्ता—इन कार्यक्रमोंके प्रचारके लिये कार्यकर्ताओंको तत्पर रहना चाहिये। कार्यकर्ताओंके परसारके झगडे और कलह प्रगतिमें बाधक हैं। बडे बननेकी इच्छा और पदाधिकारी होनेका लोभ झगडोंका एक कारण है। कार्यकर्ता तो जनताके सेवक हैं इस लिये पदाधिकारी बननेमें गौरव नहीं अपितु सच्चे सेवक बननेमें गौरव है। झगडे प्रायः सर्वत्र होते हैं उन्हें टालनेकी कोशिश करनी चाहिये। तथा व्यक्तिगत झगडोंको संस्थामें नहीं खींच लाना चाहिये। एकही व्यक्ति कई संस्थाओंमें कई पदपर बैठ जाता है। इसमे एक तो वह सब ओर ध्यान नहीं दे सकता दूसरे उत्साही युवकों को आगे बढनेसे रोकता है। ऐसे लोभको भी छोडना चाहिये। कई बार पदाधिकारियोंके आलस्यसे प्रायः बहुतसे काम रुक जाते हैं। एक बार किसी पदको स्वीकार किया तो अपने कर्तव्य को, उत्तरदायित्वको सच्चे रूपसे निभाना चाहिये।

यहांके भारतीयोंमें मतमतान्तरोंके एवं प्रादेशिक विभागोंके झगडे भी प्रायः खडे होते रहते हैं। इनसे भी बचना चाहिये। एक बात समझ लेनी

चाहिये, कि मतभेद प्रायः सर्वत्र देखा जाता है इसको दूर करनेका उपाय परस्पर सहिष्णुता और सहयोग है। विरोधीको दुर्वचन और क्रोधसे नहीं जीता जा सकता। धार्मिक मन्तव्योंके मतभेद भी समझदारीसे दूर करनेकी कोशिश होनी चाहिये। अध्ययन, स्वाध्याय और अनुभवसे ऐसे मतभेद दूर हो जाते हैं। फूंक मारकर उन्हें उकसाना नहीं चाहिये। इसी तरह प्रांतीय और प्रादेशिक मतभेदोंको भी भुलाना चाहिये। विदेशोंमें बसे हुए भारतीय सब एक मातृभूमिके निवासी हैं। वे सब भारतीय हैं। पंजाबी, बिहारी, आन्ध्रवासी या तामिलनाड वासी अथवा गुजराती आदिके अपने भेद दूर करने चाहिये। एकके दोषसे सारी जातिको कोसनेकी प्रथा आम है इससे बचना चाहिये। इसीमें हमारा कल्याण है।

आर्य प्रतिनिधि सभाकी रजत जयन्तीका शुभ अवसर है। प्रतिनिधि सभाके सदस्य तो आर्य जातिके इस इतिहास पर एवं भावी कार्यक्रम पर गंभीरतासे विचार करेंगे ही, साथही अन्य लोग भी इसका मनन करेंगे और अपने समाजकी, धर्मकी तथा संस्कृतिकी रक्षाके लिये प्रयत्नशील रहेंगे।